BLM Academy

B. L. M. ACADEMY HALDWANI

Affiliated to C.B.S.E. New Delhi, C.B.S.E. Affiliation No.: 3530343
ISO 9001:2015 (QMS) Certified School

"The Best Way To Predict Your Future Is To Create It With BLM Academy."

Admission Open

For The Academic Session 2026-27
(Classes Nursery to IX & XI)

LIMITED SEATS
APPLY NOW

Vision -
To prepare the children empowered with Indian ethical and spiritual values to face the global challenges.

Mission-
To produce enriched and enlightened human resource for the country.

Pillars -
SATYA, PURUSHARTH & PARAMARTH

Goal-
ब्रह्म तत् लक्ष्यम्

Streams:
Science,
Commerce &
Humanities

Celebrate The Gift of Life

+91 7055515681
+91 7055515683
www.blmacademy.com

Padampur Devaliya, Gora Parao, Haldwani (Nainital), Uttarakhand

blma.principal@gmail.com

प्रणवो धनुः शरो हि आत्मा ब्रह्म तल्लक्ष्मुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ।। (मुण्डक उपनिषद)

पोस्टल रजि.नं.यू.-नैनीताल-356-2021-2023

सितंबर 2026

उत्तरांचल दीप पत्रिका

यशस्वी पत्रकार वेदप्रकाश गुप्ता को समर्पित

कांग्रेस की अग्निपरीक्षा

₹:40

नेपाल की आपदा मेड इन चाइना?

चीन-नेपाल सीमा पर ग्लेशियर वाले उच्च इलाकों में चीन ने 'श्याओकांग' मॉडल वाले बॉर्डर गांव बसा दिए हैं, पहाड़ों को काट कर नदी का रास्ता बदल दिया है, तिब्बत के केरुंग शहर में चीन ने पहाड़ को काट कर समतल कर दिया है, त्रिशूली नदी के प्राकृतिक बहाव का रास्ता बदल दिया है, जिससे चीन-नेपाल सीमा पर हिमस्खलन हो रहे हैं और फ्लैश फ्लड का खतरा बढ़ गया है।

ई-मेल: uttranchaldeepatrika@gmail.com
Web: uttaranchaldeep.com

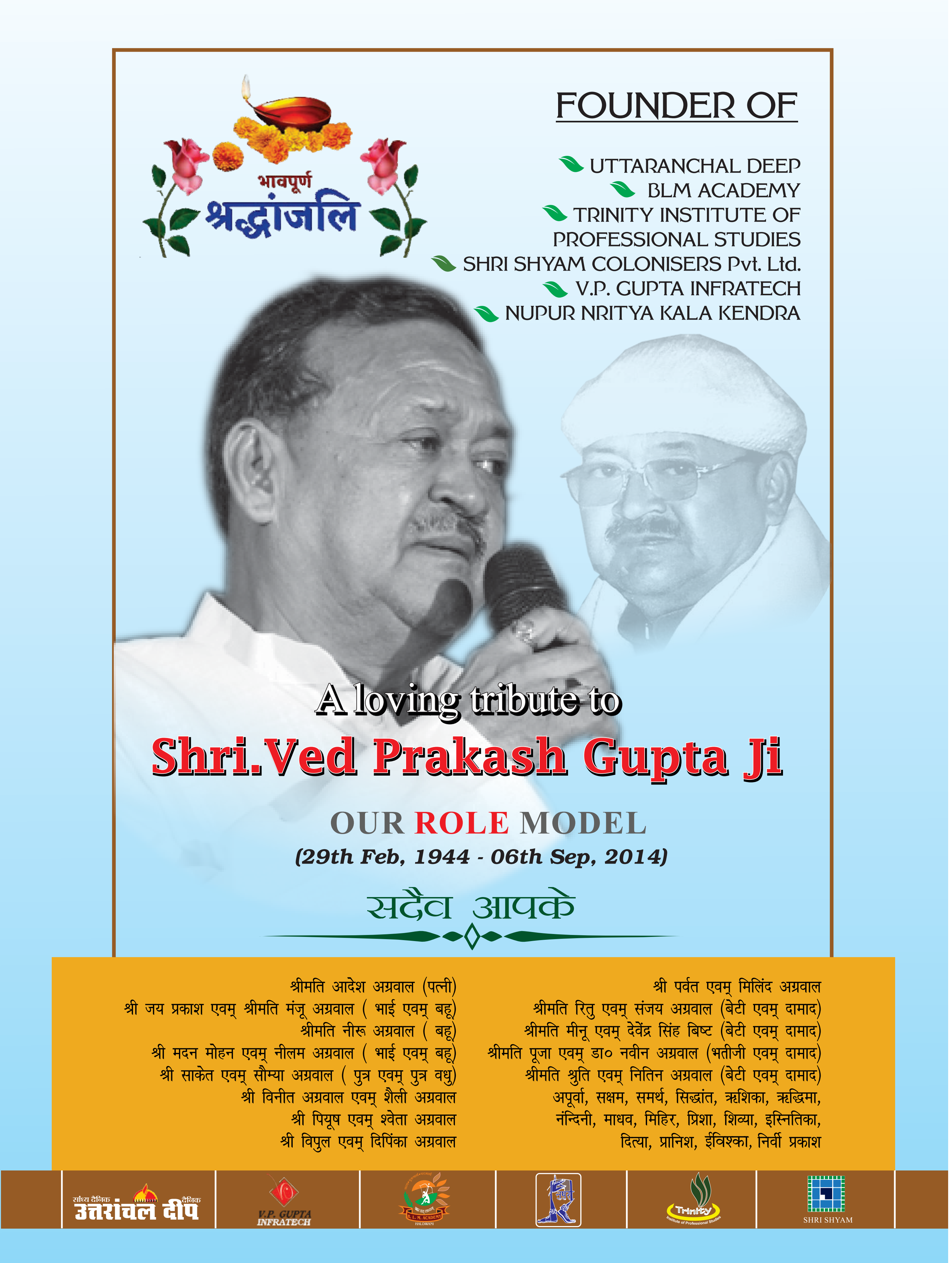

मासिक उत्तरांचल दीप पत्रिका
वर्ष:9, अंक 5, सितंबर 2026

संस्थापक संपादक
स्व.वेदप्रकाश गुप्ता
प्रधान संपादक
साकेत अग्रवाल
संपादक
श्रीमती आदेश अग्रवाल
मुख्य कार्यकारी संपादक
केके चौहान
मुख्य उप संपादक
उदयभान सिंह
मार्केटिंग हेड
तारु तिवारी
प्रबंधक
दीपक तिवारी
वरिष्ठ संवाददाता
रवि दुर्गापाल

उत्तरांचल दीप ब्यूरो
दिल्ली : शालिनी चौहान
रुद्रप्रयाग : हिमांशु पुरोहित
नैनीताल : अफजल फौजी
अल्मोड़ा : कमल कपूर
पिथौरागढ़ : ललित जोशी
बागेश्वर : नरेंद्र बिष्ट
चंपावत : मनोज राय
बरेली : अनुज सक्सेना
मुरादाबाद : आशेंद्र कुमार अग्रवाल
डोईवाला : चंद्रमोहन कोठियाल
किच्छा : राजकुमार राज
रामनगर : एचसी भट्ट
थत्यूड़ : मुकेश रावत
रुद्रपुर : मुकेश गुप्ता
बाजपुर : इंद्रजीत सिंह
ग्राफिक्स डिजाइन: देवेंद्र सिंह बिष्ट
सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय

मुख्यालय
हल्द्वानी: चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने
नैनीताल रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्रीमती आदेश अग्रवाल द्वारा उत्तरांचल दीप, चंद्रकांता हाउस, जजी के सामने नैनीताल रोड हल्द्वानी से मुद्रित व प्रकाशित।
आएनआई नंबर: UTTHIN/2018/77440
पोस्टल रजि.नं.यूए-नैनीतील-356-2021-2023

उत्तरांचल दीप पत्रिका में प्रकाशित लेख, पत्र व अन्य कालम में लेखकों के विचार होते हैं, उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
समस्त विवाद हल्द्वानी न्यायालय के अधीन होंगे।

www.uttaranchaldeep.com
uttranchaldeepatrika@gmail.com
+91 8881788066 @uttranchaldeep

अंदर

उत्तराखंड में 14,780 लैंडस्लाइड क्षेत्र मौजूद हैं, लैंडस्लाइड क्षेत्र के हिसाब से उत्तराखंड देश में तीसरे नंबर पर आता है, अरुणाचल प्रदेश में 26,213 लैंडस्लाइड जोन हैं, जो पहले नंबर है, जबकि दूसरे नंबर पर हिमाचल प्रदेश है, जहां 17,102 लैंडस्लाइड जोन हैं, जीएसआई ने उत्तराखंड में कुल 39,009 स्क्वायर किलोमीटर क्षेत्र का भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण किया जिसमें 14,780 लैंडस्लाइड क्षेत्र मिले हैं।

संसद

मानसून सत्र वॉशआउट

लोकसभा अध्यक्ष व राज्यसभा के उपसभापति जिन सांसदों का नाम लेने से पहले माननीय जैसा सम्मानित उच्चारण करते हैं उन ...

तीर्थाटन

आध्यात्मिक केंद्र बन रहा उत्तराखंड

उत्तराखंड को विश्व की आध्यात्मिक राजधानी के रूप में स्थापित करने का संकल्प राज्य ...

सियासत

मोदी ने निकाल लिए नक्सली

मोदी ने 'दिमागी नक्सली' शब्द का प्रयोग इसलिए किया था क्योंकि सरकार और कुछ एजेंसियों को ...

उत्तर प्रदेश

2027 में होगा सैफई महोत्सव?

जब से सत्ता गई है सैफई महोत्सव के लिए यादव फैमिली तरस गई है, 2016 के बाद सैफई में न तो बॉलीवुड नाइट हुई ...

साकेत अग्रवाल

धमकी का नया अंदाज जेन जी हैं हम

भारत में इन दिनों हर जगह जेन जी सुर्खियों में है। देश की युवा पीढ़ी अपनी बातों को बेबाकी से आगे रख रही है। हालांकि देश में कुछ मुट्ठी भर ऐसे भी युवा है, जो जेन जी शब्द का इस्तेमाल धौंस जमाने और भौकाल बनाने के लिए भी कर रहे हैं। मोबाइल और इंटरनेट की दुनिया में पले-बढ़े जेन जी शायद संस्कारों के करीब से भी नहीं गुजरे हैं। इसलिए जेन जी न तो अपने से बड़ों का आदर कर रहे हैं और न ही देश सेवा में लगे फौजियों को सम्मान करते हैं। दिल्ली के जंतर मंतर पर तो खुद को जेन जी कहने वाली लड़कियों के मुंह से कैसी-कैसी अश्लीलता और गालियां निकली ये जमाने ने देखा है। ये वो जेन जी हैं जो वामपंथी विचारधारा के हैं या फिर सोशल मीडिया पर वायरल होने की सनक में प्रधानमंत्री और उनकी दिवंगत मां को गाली तक दे देते हैं। एक दौर था जब बड़े बाप के बेटे या बेटी किसी को भी धमकाते हुए कहते थे कि 'जानते नहीं हो मेरा बाप कौन है?' कुछ किस्से ऐसे भी आते थे कि रसूखदार पिता की बगड़ी हुई संतान चुटकियों में पुलिस वालों की वर्दी उतारने की धौंस दे देती थी। पहले ये सब धमकियां नेताओं और अफसरों व रसूखदार लोगों के कुछ बिगड़े हुए बालक दिया करते थे, लेकिन नई पीढ़ी ने ये डॉयलाग बदल दिया है। धमकाने का नया ट्रेंड आ गया है, 'जानते नहीं हम जेन जी हैं।' यानी 'जानते नहीं मेरा बाप कौन है' डॉयलाग का नया वर्जन 'हम जेन जी' है।

सोशल मीडिया पर वायरल एक वीडियो ने धमकाने वाले इस नए अंदाज को बहस में बदल दिया है। वीडियो और घटना दोनों 25 जुलाई 2026 की है। 25 जुलाई को कारगिल विजय दिवस समारोह के कारण लद्दाख में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की गई थी। इस कार्यक्रम में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और सेना प्रमुख की संवेदनशील जोजिला-गुमरी मार्ग पर आवाजाही के कारण क्षेत्र में ट्रैफिक रिस्ट्रिक्शन लगा था। रास्ता बंद था इसलिए लद्दाख के कारगिल में मिनिमार्ग चेकपॉइंट पर पर्यटकों को रोका जा रहा था और बेरिकेडिंग की गई थी। बेरिकेडिंग को देखकर एक युवती ने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया और सिक्युरिटी फोर्स से बदतमीजी करने लगी। भारतीय सेना और पुलिस के जवानों के लिए 'नॉनसेंस' जैसे शब्दों का प्रयोग किया। आखिर में धमकी देते हुए युवती ने कहा कि हम जेन जी है। वायरल वीडियो क्लिप में युवती चिल्लाते हुए सिक्युरिटी फोर्स से सवाल करती है कि एक मंत्री को आगे जाने की अनुमति क्यों दी गई, जबकि आम यात्रियों को रोका जा रहा है। युवती कह रही है कि मंत्री जी यहां से कैसे चले गए। फिर युवती मौके पर मौजूद अन्य पर्यटकों से पूछती है कि 'आप सब बताइए, क्या आप यहां धरने पर बैठेंगे या नहीं?' यहां से हम किसी भी मंत्री को निकलने नहीं देंगे। 'हम जेन-जी हैं। हम यह बकवास बर्दाश्त नहीं करेंगे। पांच घंटे हो गए हैं और हमें जाने नहीं दे रहे हैं।' हम यहां घूमने के लिए पैसे देते हैं, यह सब बर्दाश्त करने के लिए नहीं। ये कश्मीरियों के साथ भी ऐसा करते हैं और अब बाहर से आए टूरिस्ट के साथ भी ऐसा ही कर रहे हैं।

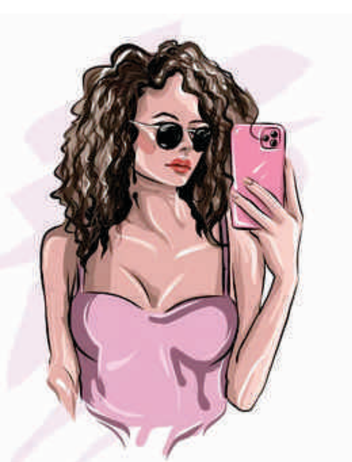

वायरल वीडियो पर जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कारगिल के चेकपॉइंट पर सिक्युरिटी फोर्स से बहस करने वाली युवती के वीडियो पर व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया दी। उमर अब्दुल्ला ने एक्स पर वीडियो शेयर करते हुए लिखा कि पहले लोग अपने रसूख का दिखावा करने के लिए बोलते थे, 'जानते नहीं मेरा बाप कौन हैं?' अब इसकी जगह नए डॉयलाग ने ले ली है, 'हम जेन जी हैं।' यह डॉयलाग जेन जी के प्रति बनी अच्छी छवि को खराब करने का सबसे तेज तरीका है। जरा सी बात पर इसे धमकी की तरह इस्तेमाल किया जाए। इसके साथ ही सोशल मीडिया पर यूजर्स और पूर्व सेना अधिकारियों ने सिक्युरिटी फोर्स को सार्वजनिक तौर पर अपमानित करने के लिए महिला की आलोचना करते हुए कमेंट किया कि जब किताब की जगह इंस्टाग्राम, फेसबुक, व्हाट्सएप जैसी सोशल साइट्स ले ले तो जेन जी का यही हाल होगा। सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद लड़की ने माना कि उसने फ्रस्टेशन में जो भी बोला वो सही नहीं था। एनडीटीवी को दिए इंटरव्यू में सेना से माफी मांगते हुए युवती ने कहा कि वह सेना का बहुत सम्मान करती है और उसने कभी नहीं सोचा था कि उसकी किसी बात से सेना के जवानों को बुरा लगेगा। उसने वहां मौजूद अधिकारी से भी माफी मांगी थी। मैं फिर से भारतीय सेना, जम्मू-कश्मीर पुलिस, लद्दाख पुलिस, सीएम उमर अब्दुल्ला सर से हाथ जोड़कर माफी मांगती हूं।

ऐसे में सवाल उठ रहे हैं कि क्या देश का जेन जी यही है। क्या देश इस जेन जी पर गर्व कर सकता? दरअसल सालों से ये माना जाता है कि देश का भविष्य बच्चों और युवाओं पर निर्भर करता है। लेकिन देश में इन दिनों जिस तरह से जेन जी के नाम पर आंदोलन छिड़ा है और जिस तरह से ये आगे बढ़ रहा है ये अपने आप में कई सवाल खड़े कर रहा है। खासकर देश के जेन जी की भाषा को लेकर उनके रवैये को लेकर। सिस्टम से नाराजगी है तो विरोध करना चाहिए, लेकिन इस तरह सुरक्षाबलों को नॉनसेंस कहना और उनके खिलाफ लोगों को उकसाना कहां तक जायज है? देश की आबादी में 38 करोड़ जेन जी है मतलब कि कुल आबादी के 27 प्रतिशत जेन जी है। अगर आंकड़ों पर नजर डाले तो देश में लाखों जेन जी ऐसे है जो प्रोफेशनल है। उनके अपने स्टार्ट अप है, ये टेक्नोक्रेट हैं, डाक्टर है इंजीनियर है और अपनी अपनी फील्ड में देश सेवा में योगदान दे रहे हैं। इसके अलावा सेना में 2 लाख से ज्यादा आग्निवरी हैं, जिनमें शत प्रतिशत जेन जी हैं। वो देश की सुरक्षा के लिए वर्दी पहने हैं और एक ये वायरल जेन जी है जो देश के सुरक्षाकर्मियों को ही नॉनसेंस कह रही है। ऐसे में असली जेन जी कौन अब ये भी चिह्नित करना होगा। वायरल युवती के बारे में अभी तक किसी को कुछ नहीं पता कि वो कौन है और कहां की है, उसका सिर्फ चेहरा देखा है, लेकिन उसके तेवर बताते हैं कि कम से कम ऐसे जेन जी देश की व्यवस्था को सुधारने का दावा तो नहीं कर सकते न ही देशभक्त हो सकते हैं। ऐसे ही बदमिजाज जेन जी जंतर मंतर पर सीजेपी के आंदोलन देखे गए थे। पहले गालियां दी और वायरल होकर माफी मांग ली। ये भी एक नया ट्रेंड देश में शुरू हो गया है।

सपा शासन में पीड़ित पीडीए

अखिलेश यादव के चाचा शिवपाल यादव ने 8 अप्रैल 1990 को इटावा के सिविल लाइंस थाने पर 100-150 हथियार बंद लोगों के साथ हमला करके 25 लैंड माफियाओं को छुड़वा लिया था, वे जिस जमीन पर कब्जा कर रहे थे वो एक पिछड़े समाज के मुनीब यादव की थी यानी आपकी परिभाषा में सुपर 'पी' की।

उत्तरांचल दीप डेस्क

उत्तर प्रदेश में जैसे-जैसे विधानसभा चुनाव करीब आ रहा है अखिलेश यादव का पीडीए विरोधी चेहरा बेनकाब हो रहा है। मुलायम सिंह यादव और अखिलेश यादव के शासनकाल में उत्तर प्रदेश पुलिस के महत्वपूर्ण पदों पर सेवा दे चुके आईपीएस अधिकारी और भाजपा सांसद बृजलाल ने सोशल मीडिया पर समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव और उनके पिता मुलायम सिंह यादव तथा चाचा शिवपाल सिंह यादव के दौर में कैसे पिछड़ों, दलितों और अल्पसंख्यकों को प्रताड़ित किया जाता था। इसका वर्ष, तारीख और महीने बार ब्यौरा अपनी फेसबुक पर पोस्ट किया है। सांसद बृजलाल ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के16 अगस्त 2026 को दिए गए उनके बयान 'जब हम सत्ता में आएंगे तो पीडीए को न्याय देंगे।' पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सोशल मीडिया पर लिखा है कि अखिलेश जी आपकी परिभाषा के अनुसार 'मैं भी आपके पीडीए में 'डी' यानी दलित हूं।' मैं तो वह दलित अधिकारी हूं जिस पर समाजवादी पार्टी की सरकार में सबसे अधिक अत्याचार हुए हैं। मैं तो आईपीएस अधिकारी था, किसी तरह सर्वाइव कर गया किंतु आप की सरकार ने मुझे समाप्त करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी थी। सांसद बृजलाल ने लिखा है कि 1989 में तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव यानी अखिलेश यादव के पिता ने मुझे इटावा का एसएसपी बनाया था। मैंने अपने 84 दिन के कार्यकाल में वही किया जो न्याय संगत था। लेकिन अखिलेश यादव के चाचा शिवपाल यादव ने 8 अप्रैल 1990 को इटावा के सिविल लाइंस थाने पर 100-150 हथियार बंद लोगों के साथ हमला करके 25 लैंड माफियाओं को छुड़वा लिया था। वे जिस जमीन पर कब्जा कर रहे थे वो भी एक पिछड़े समाज के मुनीब यादव की थी यानी आपकी परिभाषा में सुपर 'पी' की। उस समय सिविल लाइंस के थानाध्यक्ष शाह आलम खान थे। जिनको अखिलेश के चाचा शिवपाल यादव ने पीट-पीट कर मरणासन्न कर दिया था। शाहआलम खान पीडीए की आपकी परिभाषा में 'ए' की श्रेणी में आते हैं। शाह आलम खान के ऊपर 4 हजार फर्जी मुकदमे कराए गए और न्यायालय में चार्जशीट तक भेज दी गई। मुलायम सिंह यादव थानाध्यक्ष शाह आलम खान को उसी समय गिरफ्तार कराना चाहते थे किंतु मैंने न्याय के लिए अपनी नौकरी दांव पर लगा दी। फिर मुलायम सिंह यादव ने सीआईडी जांच कराकर तत्कालीन लोक निर्माण मंत्री शिवपाल यादव को क्लीन-चिट दिला दी थी। थानाध्यक्ष शाह आलम खान का प्रॉसिक्यूशन और मुझे बर्खास्त करने के लिए विभागीय कार्रवाई की गई थी।

पीडीए के सहारे सिर्फ सत्ता चाहिए

अखिलेश यादव की पीडीए की परिभाषा के अनुसार, शाह आलम खान 'ए' श्रेणी में और मैं 'डी' तथा जिनकी जमीन पर चाचा शिवपाल यादव कब्जा कराना चाह रहे थे, वो मुनीब यादव थे जो 'पी' श्रेणी मतलब पिछड़ा वर्ग से थे। इस तरह एक ही घटना में 'पीडीए' के तीनों घटकों को बेरहमी से प्रताड़ित किया गया। अखिलेश यादव अपने परिवार के लिए न्याय का गला घोटने के लिए कुख्यात रहे हैं। यूपी में जब भी समाजवादी पार्टी की सरकार आई तब-तब मुझ दलित आईपीएस अधिकारी को टारगेट करके प्रताड़ित किया गया ताकि मैं टूट जाऊं, लेकिन मैं टूटा नहीं। इसी का दस्तावेज है मेरी पुस्तक 'इटावा फाइल्स' जो प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित है। जिसमें सपा के काले कारनामों के सारे सबूत हैं। पूर्व आईपीएस अधिकारी बृजलाल ने अखिलेश यादव को याद दिलाया कि जब 2012 में वो खुद मुख्यमंत्री बने तो मुझे डीजीपी पद से हटा दिया। कोई बात नहीं, लेकिन जब भारत सरकार ने मेरी उत्कृष्ट सेवाओं के आधार पर 'डीजी सीआरपीएफ' बनाया तो अखिलेश ने मुझे कार्यमुक्त नहीं किया। यदि मैं कार्यमुक्त हो गया होता तो 'मैं देश में पहला दलित डीजी-सीआरपीएफ' बनता। किंतु अखिलेश यादव तो दलित-विरोधी थे इसलिए एक दलित आईपीएस अधिकारी को भारत सरकार में डीजी सीआरपीएफ नहीं बनने दिया। इतनी प्रताड़ना से भी अखिलेश का मन नहीं भरा, तो मेरे खिलाफ बाराबंकी कोतवाली में हत्या, हत्या की साजिश का मुकदमा लिखवा दिया जिसमें 38 अन्य अधिकारी व पुलिसकर्मी नामजद कराए गए थे। हमारा दोष यह था कि मेरे निर्देशन में 23 नवंबर 2007 को उत्तर प्रदेश के लखनऊ, अयोध्या और काशी की कचहरियों में ब्लास्ट करने वाले आतंकी खालिद मुजाहिद और हकीम तारिक कासमी गिरफ्तार किया गया था। 18 मई 2013 को दोनों आतंकी अयोध्या न्यायालय से पेशी के बाद लखनऊ आ रहे थे, खालिद मुजाहिद की 'लू' लगने से मौत हो गई थी। लिहाजा अखिलेश ने मेरे ऊपर हत्या का मुकदमा कायम कराकर जेल भेजने का प्रयास किया। अब पीडीए की बात किस मुंह से कर रहे हैं। समाजवादी पार्टी ने तो 1993 में दलित-पिछड़ा गठजोड़ का प्रयोग किया, सरकार तो बना ली परंतु जून 1995 में 'गेस्ट हाउस' कांड कर डाला। अखिलेश और उसके परिवार ने तो दलितों को सबसे अधिक प्रताड़ित किया। हम कैसे भूल जाए कि अखिलेश यादव ने मुख्यमंत्री बनते ही एक लाख से अधिक दलित अधिकारियों को पदावनत करके बेइज्जत कर मानसिक प्रताड़ना दी थी। संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ भीमराव आंबेडकर साहब को अपमानित करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। दलित महापुरुषों, संतों के नाम पर बनी संस्थाओं, जिलों के नाम बदल डाले, दलित संतो, महापुरुषों से इतनी नफरत। अखिलेश यादव जिनका रिकार्ड ही पिछड़े, दलितों और अल्पसंख्यकों को प्रताड़ित करने का रहा है वो कैसे पीडीए को न्याय देने की बात कर रहे हैं। यह छलावा नहीं तो और क्या है। क्या अखिलेश यादव पिछड़े, दलितों और अल्पसंख्यकों को झांसा देकर सत्ता हासिल करना चाहते हैं। सत्ता हासिल करना ही अखिलेश का असली मकसद है। ताकि यूपी में अराजकता फैलाई जा सके, दंगों के इतिहास को फिर से दोहराया जा सके।

सुर्खियां

उत्तराखंड कांग्रेस में बगावत

उत्तराखंड कांग्रेस में क्या बगावत होने जा रही है? क्या कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के हल्द्वानी दौरे के साइड इफेक्ट आने लगे हैं? क्योंकि खड़गे के कार्यक्रम के बाद कांग्रेस लीडर हरीश रावत गुट के कई नेता बगावत के मूड में है। पूर्व विधानसभा स्पीकर गोविंद सिंह कुंजवाल के भतीजे दिनेश कुंजवाल ने कांग्रेस छोड़ कर उत्तराखंड क्रांति दल का दामन थाम लिया है। कुंजवाल परिवार का जागेश्वर विधान सभा सीट पर राजनीतिक दबदबा रहा है। सभी जानते है कि कुंजवाल परिवार और हरीश रावत में कितनी नजदीकियां है। हरीश रावत और उनके समर्थक पूर्व विधायकों व कुछ अन्य नेताओं को प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल ने हाशिए पर खड़ा कर दिया है। हरीश रावत के पुत्र आनंद रावत कभी प्रदेश युवा कांग्रेस के अध्यक्ष हुआ करते थे किंतु आज कांग्रेस में पिता की तरह अलग थलग पड़ गए है। पिथौरागढ़ के विधायक मयूर महर, हल्द्वानी में खड़गे की रैली में नजर नहीं आए थे। महर को भी हरीश रावत का करीबी माना जाता रहा है। हालांकि कांग्रेस के प्रवक्ताओं ने दावा किया कि हरीश रावत और मयूर महर को अस्वस्थता के कारण हल्द्वानी नहीं पहुंच पाए। जबकि जानकरों का दावा है कि हरीश रावत और उनके समर्थकों ने खड़गे की रैली से खुद को दूर रखा। बगावत करने वालों में प्रीतम सिंह का नाम भी जो हल्द्वानी में कांग्रेस की रैली छोड़कर देहरादून में थे। हालांकि प्रीतम सिंह के पुत्र हल्द्वानी में नजर आए थे। राजनीतिक विश्लेषक मानते है कि वरिष्ठ नेताओं में बगावत की ये भी एक अदा होती है। देहरादून से दिल्ली तक चर्चा है कि कांग्रेस में एक टूट और होने वाली है इसमें कुछ विधायक और पूर्व विधायक भाजपा में तो कुछ उत्तराखंड क्रांति दल की तरफ जा सकते हैं। वामपंथी विचारधारा का युवा वर्ग इस समय उत्तराखंड क्रांति दल को सपोर्ट कर रहा है। क्योंकि हाल के कुछ घटनाक्रम में यूकेडी की भूमिका को राजनीतिक विशेषज्ञों ने बारीकी से देखा है और स्वीकार किया है कि ये क्षेत्रीय दल पहले से ज्यादा प्रभावशाली हुआ है। भाजपा भी संकेत दे रही है कि कांग्रेस के वर्तमान में 6 विधायक उसके संपर्क में है। माना जा रहा है कि भाजपा विधानसभा चुनाव की घोषणा होते ही इन्हें हरी झंडी दे देगी। क्योंकि कांग्रेस के ये विधायक दिल्ली में भाजपा के शीर्ष नेताओं से मुलाकाते भी कर चुके हैं। यानी भाजपा ने उत्तराखंड में हैट्रिक लगाने के लिए ऑपरेशन शुरू कर दिया है। हालांकि कांग्रेस को भी बगावती विधायकों की पूरी जानकारी है इसलिए बौखलाहट में सीएम पुष्कर सिंह धामी को घेरने के लिए सोशल मीडिया में युद्ध चल रहा है। हल्द्वानी में एसएसपी आफिस की घटना हो या देहरादून में राहुल गांधी के कार्यक्रम के दौरान हुई अंदरूनी राजनीतिक उठा पटक उसकी बेचैनी का सबूत है। बरहाल उत्तराखंड में कांग्रेस में भीतरघात और अंदरूनी कलह की तस्वीर धीरे धीरे साफ हो रही है। अगले कुछ दिनों में कांग्रेस में बगावत का बिगुल बजता सुनाई देगा।

जनगणना में होंगे 40 सवाल

गृह मंत्रालय ने जनगणना के लिए 40 सवालों की एक सूची जारी कर दी है। इसमें निर्देश दिया गया है कि जनगणना अधिकारी, अपने क्षेत्र की सीमाओं के भीतर, भारत की जनगणना-2027 के लिए हाउसहोल्ड शेड्यू (परिवार अनुसूची) के जरिए जानकारी इकट्ठा करने के लिए 40 सवाल पूछेंगे। जनगणना अधिनियम, 1948 (1948 का 37) की धारा 8 की उप-धारा (1) के तहत मिली शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए केंद्र सरकार ने यह निर्देश दिया है। गृह मंत्रालय की ओर से जारी सवालों में पहला सवाल होगा व्यक्ति का नाम क्या है, फिर परिवार के मुखिया से संबंध, लिंग, जन्म की तारीख और उम्र (पूरे वर्षों में), वर्तमान वैवाहिक स्थिति, शादी के समय उम्र (पूरे वर्षों में), जीवनसाथी का नाम, धर्म, बताई गई राष्ट्रीयता, अनुसूचित जाति (एससी) अनुसूचित जनजाति (एसटी) जाति, पिता का विवरण, माता का विवरण, दिव्यांगता, मातृभाषा और अन्य ज्ञात भाषाएं, साक्षरता और डिजिटल साक्षरता की स्थिति, शिक्षण संस्थान में उपस्थिति की स्थिति, प्राप्त उच्चतम शिक्षा का स्तर और स्ट्रीम, विषय, पिछले वर्ष के दौरान कभी काम किया, आर्थिक गतिविधि की श्रेणी, पेशा, उद्योग, व्यापार या सेवा का प्रकार, कामगार का वर्ग, गैर-आर्थिक गतिविधि (सीमांत, अर्ध-सीमांत और गैर-कामगार के लिए), काम की तलाश या काम के लिए उपलब्ध (मार्जिनल, सेमी-मार्जिनल और नॉन-वर्कर के लिए), काम की जगह तक आना-जाना, जन्म स्थान, पिछली बार रहने की जगह, माइग्रेशन (एक जगह से दूसरी जगह बसने) का कारण, पिछली बार माइग्रेशन के बाद से इस गांव-शहर में रहने की अवधि, स्थायी आवासीय पता, अभी जीवित बच्चों की संख्या (सिर्फ अभी शादीशुदा, विधवा, तलाकशुदा और अलग रह रही महिलाओं के लिए), अब तक जीवित पैदा हुए बच्चों की कुल संख्या (सिर्फ शादीशुदा, विधवा, तलाकशुदा और अलग रह रही महिलाओं के लिए), पिछले एक साल में जीवित पैदा हुए बच्चों की संख्या (सिर्फ शादीशुदा महिलाओं के लिए), कोविड-19 टीकाकरण की जगह, बैंक खातों की कुल संख्या, मोबाइल नंबर (अगर उपलब्ध हो), आधार नंबर (अगर उपलब्ध हो), वोटर आईडी नंबर (अगर उपलब्ध हो), पासपोर्ट नंबर (अगर भारतीय पासपोर्ट धारक हों), ड्राइविंग लाइसेंस की उपलब्धता। जनगणना की प्रक्रिया बर्फबारी वाले इलाकों में एक सितंबर से शुरू हो गई है। गजट नोटिफिकेशन में बताया गया कि लद्दाख और जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के बर्फबारी वाले इलाकों में लोगों की गिनती एक से 30 सितंबर के बीच होगी। देश के बाकी हिस्सों में जनगणना अगले साल 2027 में शुरू होगी।

वोटर लिस्ट की सफाई

एसआईआर को लेकर अब रोज नए नए मुद्दे सामने आ रहे है। क्योंकि हजारों मतदाताओं के नाम ऐसे है जो यूपी की मतदाता सूची में भी दर्ज है और उत्तराखंड की वोटर लिस्ट में दिखाई दिए है। अब इस बात की चर्चा हो रही है कि क्या ऐसे मतदाता यूपी और उत्तराखंड दोनों जगह वोट डालते रहे? यूपी से लगी बहुत सी विधानसभाएं ऐसी हैं जहां की मतदाता सूची में दर्ज नामों को लेकर राजनीतिक दलों में नूराकुस्ती चल रही है। कांग्रेस का आरोप है कि भाजपा या अन्य कोई सिंडिकेट योजनाबद्ध तरीके सेएसआईआर के दौरान फॉर्म-7 के जरिए आपत्तियां दर्ज करा रहा है, ताकि उनके समर्थकों के नाम कटवाए जा सके। कांग्रेस के नेता तिलक राज बेहड़, अनुपमा रावत, हाजी मोहम्मद काजी ने ऐसे सवाल उठाए है कि एक वर्ग विशेष के वोट काटे जा रहे है। हालांकि भाजपा ने इसके जवाब में कहा है कि उनके द्वारा उन मतदाताओं पर आपत्तियां लगाई है जो मौके पर मौजूद नहीं है। बाकि विषयों से उसका कोई लेना-देना नहीं है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट कहते है कि कांग्रेस तुष्टिकरण की राजनीति कर घुसपैठियों के वोटों का संरक्षण करती रही है, साफ पारदर्शी मतदाता सूची बनाने का काम निर्वाचन आयोग का है हमारे बीएलए इसमें सहयोग कर रहे है। भट्ट साफ साफ कहते है कि वोटर लिस्ट में जब फेक नाम कटेंगे तभी चुनाव में मतदान प्रतिशत बढ़ेगा। कांग्रेस एक खास वर्ग विशेष के वोटों की चिंता कर रही है, जबकि मतदाता सूची में बहुत से नामों पर निर्वाचन आयोग को संदेह है तो उस पर उन्हें जांच करने का पूरा हक है। ऊधमसिंह नगर, हरिद्वार, देहरादून, नैनीताल और पौड़ी गढ़वाल जिलों की मतदाता सूची में ऐसे नाम सॉफ्टवेयर के द्वारा पकड़ में आए है जो यूपी की मतदाता सूची में पहले से ही दर्ज हैं। यूपी, बिहार, बंगाल के बहुत से लोग 2003 के बाद रोजगार की तलाश में उत्तराखंड आए और अब यहां की मतदाता सूची में उनके नाम दर्ज है और उनके राज्य की वोटर लिस्ट में भी उनके नाम हैं। एसआईआर के दौरान पता चला कि बिहार, और बंगाल के विधानसभा चुनाव से पहले हुई एसआईआर में इन लोगों ने अपने मूल राज्य की वोटर लिस्ट में अपने नाम दर्ज करा लिए गए हैं। यूपी, बिहार व बंगाल में एसआईआर का काम समाप्त हो चुका है। लिहाजा उत्तराखंड की एसआईआर में उनके नाम नहीं हो सकते। ऐसे में निर्वाचन आयोग ने ऐसे सभी मतदाताओं को नोटिस जारी किए है जो कथित रूप से दो राज्यों में वोट डालते रहे हैं। बरहाल अब निर्वाचन आयोग ने उत्तराखंड की मतदाता सूची साफ करने की दिशा में आगे बढ़ना शुरू कर दिया है और डुप्लीकेट नामों को हटाने का काम भी जारी है।

कंगना की नसीरुद्दीन को नसीहत

बॉलीवुड एक्टर और भाजपा सांसद कंगना रनौत और नसरुद्दीन शाह मीडिया और सोशल मीडिया की सुर्खियों में हैं। दरअसल जंतर मंतर और झारखंड के रांची में स्टूडेंट प्रोटेस्ट को लेकर बॉलीवुड के ये दो एक्टर्स आमने सामने हैं। बॉलीवुड के सीनियर एक्टर नसीरुद्दीन शाह ने जंतर मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी के आंदोलन का समर्थन करते हुए सवाल उठाया था कि इस आंदोलन में बड़े सेलिब्रिटीज खुलकर सामने क्यों नहीं आए? उन्होंने इसको साबित करने के लिए तंज कसा था कि 'वे ऐसा तब करेंगे जब उनका जमीर उनसे ऐसा करने को कहेगा। एक कहावत है-जिस कुत्ते के मुंह में हड्डी हो, वह भौंक नहीं सकता।' अब कंगना ने सवाल उठाया है कि सीनियर एक्टर झारखंड में हो रहे छात्रों के विरोध प्रदर्शनों पर चुप क्यों हैं? अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर, कंगना रनौत ने नसीरुद्दीन शाह के कमेंट पर एक्टर पीयूष मिश्रा की टिप्पणी को दोबारा पोस्ट किया, जहां उन्होंने झारखंड में हो रहे छात्रों के आंदोलन पर नसरुद्दीन शाह की चुप्पी पर सवाल उठाया था। उन्होंने कैप्शन में अलग से नोट लिखा, जिसमें लिखा था, 'सच तो ये है कि हर कोई किसी न किसी का कुत्ता है। ये कैप्शन नसरुद्दीन शाह के लिए था। लेकिन मुझे इस बात का गर्व है कि मैं जिस घर (देश) की रोटी खाती हूं उसकी रखवाली करती हूं, उसके लिए लड़ती हूं। नसीर साहब खाते तो इस देश का हैं लेकिन लड़ते पड़ोसी देश के लिए हैं।' कंगना ने नसीरुद्दीन शाह को टारगेट करते हुए कहा, 'आज के समय में कुत्ता कहलाना एक तारीफ है, क्योंकि उसमें वफादारी और क्यूटनेस देखने को मिलती है। मैं नसीरुद्दीन जैसे को कुत्ते के बजाये लोमड़ी बनाना ज्यादा पसंद करूंगी।' झारखंड में वास्तविक छात्रों पर पुलिस द्वारा लाठी चार्ज करने और आंसू गैस वाटर कैनन छोड़े जाने पर न तो संसद में कोई हंगामा हुआ न ही कोई विपक्षी नेता निंदा करने के लिए कैमरे के सामने आया। ना ही नसरुद्दीन शाह ने कोई टिप्पणी की। लेकिन कंगना रनौत ने राहुल गांधी से भी जवाब मांगा लिया कि वो झारखंड के मुद्दे पर चुप क्यों हैं? कुछ दिन पहले, कंगना ने कहा था, जेन जी हमारे देश की ताकत है और एक तरह से हमारे राष्ट्र की बहुत बड़ी संपत्ति है। हमें बहुत खुशी है कि हमारे युवा तेजी से हमारी संस्कृति और उसकी पहचान के एंबेसडर के तौर पर उभर रहे हैं। खैर कुत्ते और लोमड़ी की लड़ाई से यह तो साबित होता है कि अभिनेता ' नसरुद्दीन शाह ने उस सीजेपी के आंदोलन का समर्थन किया जिसमें 2800 आपराधिक प्रवृति के लोग शामिल थे और देश में हिंसा फैलाने की कोशिश कर रहे थे। खैर पुलिस की जांच के बाद देश को ये भी पता चल गया कि फिल्म अभिनेता नसरुद्दीन शाह छात्रों के साथ नहीं बल्कि आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों के समर्थन में थे।

कवर स्टोरी

नेपाल की आपदा मेड इन चाइना?

चीन-नेपाल सीमा पर ग्लेशियर वाले उच्च इलाकों में चीन ने 'श्याओकांग' मॉडल वाले बॉर्डर गांव बसा दिए हैं, पहाड़ों को काट कर नदी का रास्ता बदल दिया है, तिब्बत के केरुंग शहर में चीन ने पहाड़ को काट कर समतल कर दिया है, त्रिशूली नदी के प्राकृतिक बहाव का रास्ता बदल दिया है, जिससे चीन-नेपाल सीमा पर हिमस्खलन हो रहे हैं और फ्लैश फ्लड का खतरा बढ़ गया है।

सुहैल जैदी
वरिष्ठ पत्रकार

नेपाल के रसुवा जिले में 26 अगस्त को अचानक आए फ्लैश फ्लड ने चंद मिनटों में ही चारों तरफ हाहाकार मचा दिया। सुबह करीब 9 बजे जब लोग अपने रोजमर्रा के कामों में लगे थे, तभी तिब्बत की तरफ से भोटे कोशी नदी में पानी का ऐसा प्रचंड प्रलयकारी सैलाब आया जिसने सब कुछ तबाह और बर्बाद कर दिया। तिमुरे और स्याफ्रुबेसी जैसे इलाकों में सड़कें और पुल बह गए, गाड़ियां तिनके की तरह पानी में तैरने लगीं और बस्तियां मलबे में तब्दील हो गईं। इस भीषण तबाही के पीछे कुदरत का गुस्सा नहीं, बल्कि चीन की गैरजिम्मेदाराना हरकतें थीं। इसलिए नेपाल के कई पत्रकार संगठनों और अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों ने चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और उनकी नीतियों पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। नेपाल की इस तबाही को 'मेड इन चाइना' बताया जा रहा है। चीन पर धोखा देने का आरोप लग रहा है। वैसे चीन ने कोई पहली बार धोखा नहीं दिया है। चीन तो दुनियां में धोखा देने के लिए कुख्यात है। इसलिए दुनिया उस पर भरोसा नहीं करती। 2020 में इसी चीन ने दुनिया भर में कोरोना वायरस फैलाया था। कोरोना वायरस चीन की ही प्रयोगशाला से निकला, किंतु चीन ने दुनिया को आगाह नहीं किया। नतीजा सबने देखा दुनिया भर में करोड़ों लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था। नेपाल के पत्रकारों के एक समूह 'नेपाल कॉरस्पोंडेंस' ने बड़ा दावा किया है। इस समूह का आरोप है कि रसुवा जिले में आई तबाही नेपाल-तिब्बत सीमा पर चीन के अंधाधुंध निर्माण कार्य से हुए हिमस्खलन का नतीजा है। संगठन का कहना है कि चीन-नेपाल सीमा पर ऊंचाई पर ग्लेशियर वाले इलाकों में चीन ने 'श्याओकांग' मॉडल वाले बॉर्डर गांव बसा दिए हैं। पहाड़ों को काट कर नदी का रास्ता बदल दिया है। तिब्बत के केरुंग शहर में चीन ने पहाड़ को काट कर समतल कर दिया है और त्रिशूली नदी के प्राकृतिक बहाव का रास्ता बदल दिया है। सेंसेटिव हिमालयी ईकोसिस्टम को नुकसान पहुंचाने की वजह से अब चीन-नेपाल सीमा पर हर साल भयानक हिमस्खलन हो रहे हैं, जिससे फ्लैश फ्लड का खतरा कई गुना बढ़ गया है। केरुंग पोर्ट को दो नदियों के संगम पर बनाया गया है। जिससे पानी की गति नेपाल की तरफ बहुत तेज हो जाती है और बाढ़ की स्थिति खौफनाक रूप ले लेती है।

नेपाल में कैसे आई तबाही?

नेपाल और तिब्बत में स्थित लैंगटांग लिरुंग माउंटेन रेंज में तिब्बत की तरफ करीब 5200 मीटर की ऊंचाई पर ग्लेशियर का एक हिस्सा टूट कर लगभग 1200 मीटर नीचे घाटी में गिरा। ग्लेशियर के इस मलबे ने ल्हेंडे रीवर का रास्ता ब्लॉक कर दिया जिससे वहां एक अस्थाई झील बन गई। जिसमें पानी का प्रेशर बनता गया। जब पानी का प्रेशर ज्यादा हुआ तो अस्थाई झील टूट गई और कीचड़, चट्टान और मलबे की विशाल लहर गोली की रफ्तार से नीचे की ओर बहने लगी। ल्हेंडे तिब्बत से निकलने वाली सहायक नदी है, जो नेपाल-चीन सीमा के पास रसुवागढ़ी और तिमुरे के आसपास भोटे कोशी नदी में मिलती है। ग्लेशियर के ढहने से सारा मलबा भोटे कोशी नदी में आ गया। भोटे कोशी नदी तिब्बत से ही नेपाल में प्रवेश करती है, और रसुवा जिले से होकर बहती है। भोटे कोशी नदी आगे चलकर त्रिशूली नदी में मिल जाती है। इसलिए वही कीचड़, त्रिशूली में भी पहुंच गया और नुवाकोट और रसुवा जिलों में तबाही मचाती निकल गई। त्रिशूली नदी में पानी और कीचड़ का लेवल कुछ जगहों पर 30 मिनट में 7 से 9 मीटर तक बढ़ गया। इसलिए बर्बादी इतनी ज्यादा हुई। विनाशकारी सैलाब के बाद तबाही का डरावना मंजर देखने को मिला यानी नेपाल की इस आपदा में 3 सिंतबर तक 900 से ज्यादा लोगों की मौत कंफर्म हो चुकी थी। सरकारी आकड़ा 2500 से ज्यादा लोग के लापता होने का है, लेकिन इन आकंड़ों पर यकीन करना बड़ा मुश्किल है। जिस तरह नेपाल की बस्ती, बाजार, आफिस, बैंक, स्कूल मलवे में दफन हुए हैं उससे लापता या मौतों का सही आकंड़ा पता लगाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। नेपाल प्रशासन सिर्फ वही आकंड़े बता रहा है जो सामने हैं यानी जो लाशें मिली है। लेकिन जिनकी लाशें मलवे में दफन हैं या नदी में बह गई उनकी गिनती कैसे होगी? हालांकि अधिकारिक रूप से मौत का आकंड़ा भी लगातार बढ़ रहा है। लेकिन त्रासदी की भयावता को देखते हुए अनुमान लगाया जा रहा है कि यहां कम से कम 20-25 हजार लोगों की मौत हुई होगी, ये सिर्फ अनुमान है। क्योंकि यह नेपाल की आपदा भी उत्तराखंड में जून 2013 में आई केदारनाथ आपदा से कम नहीं है। केदारनाथ में तो कई सालों तक मानव कंकाल मिलते रहे थे। द काठमांडू पोस्ट के अनुसार फ्लैश फ्लड से स्याफ्रूबेसी, बेत्रावती, मेलुंग, सल्लेतार, शांतिबाजार, पाइरेबेसी, खल्ती बस्ती, सोले, त्रिशूली और बट्टार समेत करीब एक दर्जन गांव तथा बस्तियां प्रभावित हुई हैं। इनमें से ही 5000 की आबादी वाला गांव सैलाब में समा चुका है।

नेपाल के पत्रकार संगठनों और अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों ने चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और उनकी नीतियों पर गंभीर सवाल उठाते हुए नेपाल की इस तबाही को 'मेड इन चाइना' बताया है, चीन पर धोखा देने का आरोप लग रहा है, वैसे चीन ने कोई पहली बार धोखा नहीं दिया है, चीन तो दुनियां में धोखा देने के लिए कुख्यात है, इसलिए दुनिया उस पर भरोसा नहीं करती।

नेपाल सरकार के सामने चुनौतियां?

नेपाल-चीन सीमा से सटे रसुवागढ़ी और टिमुरे कॉरिडोर में जलप्रलय का सबसे ज्यादा असर हुआ है। यहां ऐतिहासिक मितेरी फ्रेंडशिप ब्रिज बह गया। टिमुरे का सीमा शुल्क कार्यालय मलबे में दफन हो गया, चीन से आए कई इलेक्ट्रिक वाहन और कंटेनर ट्रक मलबे के साथ बह गए। यह इलाका नेपाल-चीन व्यापार के लिए काफी अहम है। भोटे कोशी नदी के किनारे बसे स्याफ्रूबेसी बाजार में भारी तबाही हुई है। यह इलाका लांगटांग ट्रैकिंग और पर्यटन के लिए जाना जाता है। सैलाब के साथ आए विशाल बोल्डर्स की वजह से 60 से ज्यादा बहुमंजिला होटल, लॉज और पक्के मकान ध्वस्त हो गए। कई इमारतें सीधे नदी में समा गईं। भूस्खलन के कारण सेना का हेलीपैड भी प्रभावित हुआ, जिससे राहत और बचाव कार्यों में मुश्किलें बढ़ी। भोटेकोशी नदी का पानी आगे बढ़कर त्रिशूली नदी में मिला, जिसके बाद नुवाकोट के त्रिशूली बाजार और बेत्रावती इलाके मलवे में पूरी तरह दफन हो गए। जिस समय यहां सैलाब पहुंचा त्रिशूली बाजार में कम से कम 400 से 500 लोग मौजूद थे जिन्हें जान बचाने के लिए सिर्फ 5 मिटन का समय मिला। करीब 70-80 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से आए मलबे के सैलाब ने नेपाल के निचले इलाकों में भारी तबाही की। कई घरों में 6 से 8 फीट तक कीचड़ भर गया और लोगों को छतों पर शरण लेनी पड़ी। सैलाब से धादिंग का गल्छी कॉरिडोर तबाह हो गया। यह रास्ता काठमांडू को देश के दूसरे हिस्सों से जोड़ता है। नदी के तेज बहाव और पहाड़ी कटाव से यहां 50 से ज्यादा स्थानों पर भूस्खलन हुए। जिससे पानी के साथ मिट्टी आई और जहां से सैलाब निकला वहां दलदल और कीचड़ छोड़ गया। सैलाब में 19 पक्के पुल बह गए। इससे राहत सामग्री पहुंचाने में प्रशासन को परेशानी हो रही है। गल्छी कॉरिडोर में तबाही माचते हुए सैलाब पहाड़ी इलाकों से आगे चितवन और गोरखा के निचले क्षेत्रों तक पहुंच गया। नदी किनारे बसे गांवों, खेतों और झुग्गियों में पानी और सिल्ट का ढेर लग गया। चितवन में सबसे ज्यादा करीब 200 लाशें मिली हैं। इस आपदा से नेपाल के सड़क, बिजली पानी के ढांचे को बड़ा नुकसान पहुंचा है। चिलिमे, रसुवागढ़ी और त्रिशूली-3ए समेत करीब 13 हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट पूरी तरह बर्बाद हो चुके हैं। कई पावर हाउस और ट्रांसमिशन सिस्टम पानी और मलबे में दब चुके हैं। अब नेपाल के सामने लापता लोगों की तलाश के साथ सड़कों, पुलों, बिजली और संचार व्यवस्था को बहाल करने की बड़ी चुनौती है।

विदेशी नागरिक लापता

नेपाल में आए प्रलयकारी सैलाब में कितने लोग बह गए इसका कोई ठोस आकंड़ा नहीं बताया जा सकता। क्योंकि नेपाल के सैलाब में बहे लोगों की लाशें बिहार तक में निकाली जा रही है या फिर प्रशासन झंझट से बचने के लिए बहती लाशों को निकालना भी नहीं चाहता। बिहार में बहुत से ग्रामीण नदी में बहकर आ रहे रसोई गैस सिलेंडर, लकड़ी, टायर आदि निकाल रहे है। नदी से सामान निकालने वाले एक ग्रामीण ने मीडिया के सामने दावा किया कि नदी में लाशें भी बहकर आ रही है। नेपाल पर्यटन बोर्ड का कहना है कि प्रचंड सैलाब के बाद 31 देशों के 640 विदेशी नागरिक लापता हैं। इस क्षेत्र में पर्यटकों के रूप में आने वालों में सबसे अधिक संख्या भारत से है, जिनकी तादाद 300 से अधिक बताई जा रही है। लापता विदेशी नागरिकों में अमेरिका के 65, यूक्रेन के 53, मलेशिया के 51, ऑस्ट्रेलिया के 35 और ब्रिटेन के 33, इंग्लेंड के 34, जापान के 5 नागरिक शामिल हैं। बोर्ड ने दावा किया कि आपदा प्रभावित क्षेत्रों से विभिन्न देशों के 31 विदेशी नागरिकों को बचाया गया है।

- **नेपाल में मौतों का आकंड़ा लगातार बढ़ रहा है, लेकिन त्रासदी की भयावता को देखते हुए अनुमान लगाया जा रहा है कि यहां कम से कम 20-25 हजार लोगों की मौत हुई होगी, द काठमांडू पोस्ट के अनुसार फ्लैश फ्लड से स्याफ्रूबेसी, बेत्रावती, मेलुंग, सल्लेतार, शांतिबाजार, पाइरेबेसी, खल्ती बस्ती, सोले, त्रिशूली और बट्टार समेत करीब एक दर्जन गांव तथा बस्तियां प्रभावित हुई हैं।**
- **जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ अमेरिका (यूएसजीएस) ने कहा है कि ग्लेशियर टूटने की वजह से नेपाल में विनाशकारी सैलाब आया, इस सैलाब के पीछे भूकंप की थ्योरी को ज्यादा तवज्जो नहीं दी जा रही है, यूएसजीएस का कहना है कि लंबे समय तक चलने वाली भूकंपीय तरंगों के अतिरिक्त एनालिसिस से पता चला है कि ये झटके ग्लेशियर टूटने और मलबे के बहाव से आए थे।**

विज्ञान की नजर में सैलाब

जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ अमेरिका (यूएसजीएस) ने कहा है कि ग्लेशियर टूटने की वजह से नेपाल में विनाशकारी सैलाब आया। यूएसजीएस इस सैलाब के पीछे भूकंप की थ्योरी को ज्यादा तवज्जो नहीं दी जा रही है। यूएसजीएस का कहना है कि लंबे समय तक चलने वाली भूकंपीय तरंगों के अतिरिक्त एनालिसिस से पता चला है कि ये झटके ग्लेशियर टूटने और मलबे के बहाव से आए थे। यूएसजीएस ने घटना से संबंधित अपने बयान में कहा, 'शुरुआत में इस घटना को 4.4 तीव्रता का भूकंप बताया गया था। आसपास के भूकंपीय स्टेशनों से प्राप्त आंकड़ों, लंबी अवधि वाली भूकंपीय तरंगों और उपग्रह से प्राप्त तस्वीरों के अतिरिक्त विश्लेषण के बाद यह निष्कर्ष निकला कि यह कंपन ग्लेशियर के ढहने और मलबे के बहाव के कारण हुआ था तथा कोई भूकंप नहीं आया था।' यूएसजीएस ने निष्कर्ष निकाला कि कंपन की यह घटना ग्लेशियर के ढहने और मलबे के बहाव के कारण हुई, जिसके बाद निचले इलाकों की ओर विनाशकारी प्रभाव देखने को मिले। कनाडा की यूनिवर्सिटी ऑफ कैलगरी में भू-आकृति विज्ञान के सहायक प्रोफेसर डेनियल शुगर का कहना है कि नेपाल में बाढ़ 5,200 मीटर की ऊंचाई पर एक चट्टान से ग्लेशियर के खिसककर नीचे गिरने के कारण आई। शुगर ने प्राकृतिक आपदा से एक दिन पहले यानी मंगलवार और बुधवार को क्षेत्र की ली गई उपग्रह तस्वीरों की तुलना की। 'न्यू साइंटिस्ट' पत्रिका ने शुगर के हवाले से कहा, 'उपग्रह तस्वीरों की तुलना करने पर ऐसा लगता है कि आसपास के ग्लेशियरों में पिछले 24 घंटों के दौरान काफी बर्फ पिघली है।' उन्होंने कहा, 'मेरा अनुमान है कि बर्फ और ग्लेशियर की बर्फ के पिघलने से ग्लेशियर में काफी मात्रा में पानी हो गया। यह पानी नीचे रिसकर ग्लेशियर की सतह तक पहुंचा और उसे चिकना कर दिया। यही ग्लेशियर के ढहने के लिए पर्याप्त वजह थी।' अंतरराष्ट्रीय एकीकृत पर्वतीय विकास केंद्र (आईसीआईएमओडी) के विशेषज्ञों ने तिब्बत से मध्य नेपाल के जिलों में तबाही मचाने वाली बाढ़ का कारण हिमस्खलन बताया है। आईसीआईएमओडी ने इस आपदा को हिममंडल से जुड़ी घटनाओं की बढ़ती फ्रीक्वेंसी का उदाहरण बताते हुए शुरुआती चेतावनी प्रणालियों और मजबूत क्षेत्रीय सहयोग की जरूरत पर जोर दिया। सीमा पार होने वाली ऐसी आपदाओं से निपटने के लिए सरकारों को समन्वित तरीके से कार्रवाई करनी चाहिए। काठमांडू स्थित आईसीआईएमओडी और नेपाल तथा चीन के सहयोगी संस्थानों के वैज्ञानिक यह पता लगा रहे हैं कि क्या यह बाढ़ किसी ऊंचाई वाले क्षेत्र से शुरू हुए हिमस्खलन के कारण आई थी।

चेतावनी

चेतावनी दे रही है प्रकृति

हिमालयी क्षेत्र में हिमस्खलन और भूस्खलन का खतरा बना हुआ है, एक अध्ययन के बाद देश के 19 राज्यों के 181 जिलों में करीब 7,500 ऐसे स्थान चिह्नित किए गए हैं, जहां जमीन खिसकने (भूस्खलन) का खतरा बेहद ज्यादा है, ऐसा नहीं है कि आफत पहाड़ी राज्यों में ही आएगी, बल्कि पहाड़ों की आफत मैदानी राज्यों में भी रौद्र रूप दिखाएगी।

पड़ोसी देश नेपाल में जिस तरह की विनाशकारी बाढ़ आई और भारी जान-माल की क्षति हुई वो हिमालयी क्षेत्र की संवेदनशीलता और प्रकृति के साथ मानवीय छेड़छाड़ का नताजी कहा जा सकता है। वैसे भी विकास के नाम हिमालय को खोखला किया जा रहा है, टनल, पावर प्रोजेक्ट, सड़कें और अंधाधुंध निर्माण कर एक तरफ विकास किया जा रहा है तो दूसरी तरफ विनाश को आमंत्रित किया जा रहा है। नेपाल इसका एक नमूना है। जहां किस्मत वाले ही बच पाए वरना लोगों ने तो अपनों को 30-35 फिट गहरे मलवे (दलदल) में धसते और दफन होते देखा है। नेपाल के जो कारोबारी अपने कारोबार पर इतराते थे वो मीडिया के केमरे पर बता रहे हैं कि उनके पास अब सिर्फ तन पर पहने कपड़े ही बचे हैं, बाकी तो सैलाब के कीचड़ में दफन हो गया या फिर बह गया। नेपाल में सबसे ज्यादा नुकसान मलवे (कीचड़) की वजह से हुआ है। पानी के साथ जो कीचड़ आई वो जैसे जैसे सूख रही है पत्थर होती जा रही है। इसलिए मलवे में दफन हुए घरों और दुकानों को फिर से निकालना मुश्किल होता जा रहा है। इसलिए कहा जा रहा है कि नेपाल के बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में एक नई जमीन तैयार हो गई है। वैज्ञानिक और पर्यावरणविद् वर्षो से चिंता व्यक्त कर रहे हैं कि हिमालय की भौगोलिक परिस्थियों और संवेदनशीलता को समझे बिना जिस तरह से निर्माण किए जा रहे हैं वो आत्मघाती साबित होने लगे हैं। नेपाल में यह साबित हो चुका है। नेपाल की विनाशकारी घटना हिमालय क्षेत्र में बसे हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड से लेकर जम्मू-कश्मीर असम, केरल, मेघालय, सहित देश के 19 राज्यों के लिए चेतावनी है। क्योंकि हिमालयी क्षेत्र में हिमस्खलन और भूस्खलन का खतरा बना हुआ है। एक अध्ययन के बाद देश के 19 राज्यों के 181 जिलों में करीब 7,500 ऐसे स्थान चिह्नित किए गए हैं, जहां जमीन खिसकने (भूस्खलन) का खतरा बेहद ज्यादा है। ऐसा नहीं है कि आफत पहाड़ी राज्यों में ही आएगी, बल्कि पहाड़ों की आफत मैदानी राज्यों में भी रौद्र रूप दिखाएगी।

4.3 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को खतरा

हिमालयी क्षेत्र, पूर्वोत्तर और पश्चिमी घाट सबसे अधिक आपदा प्रभावित क्षेत्रों में आते हैं। खतरा सिर्फ आम आबादी तक सीमित नहीं है, बल्कि सड़कों, परिवहन गलियारों, सामरिक अवसंरचना और रक्षा प्रतिष्ठानों पर भी इसका असर पड़ सकता है। भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण ने 4.3 लाख वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र को भूस्खलन संभावित क्षेत्र में शामिल है। आपदा प्रबंधन पर गृह मंत्रालय की संसदीय समिति की 261वीं रिपोर्ट में कहा गया है कि भूस्खलन से महत्वपूर्ण अवसंरचना और परिवहन गलियारों को भारी नुकसान पहुंच सकता है। इससे निपटने के लिए हिम सुरक्षा सुरंग, छतनुमा सुरक्षा कवच, रिटेनिंग वॉल, अवरोध बांध और हिमस्खलन अवरोध टीले तैयार किए जा रहे हैं। खासकर पहाड़ी सड़कों पर बरसात के दौरान खतरा बढ़ जाता है। शोधकर्ताओं ने पहाड़ी क्षेत्रों के लिए अलग भवन मानक, ढलानों पर निर्माण की सीमा, बेहतर जल निकासी और वर्षाजल प्रबंधन तथा जलस्रोतों की सुरक्षा की सिफारिश की है। साथ ही माउंटेन पेरी-अर्बन प्लानिंग फ्रेमवर्क बनाने और ग्राम पंचायतों को योजना प्रक्रिया में शामिल करने पर जोर दिया गया है। पहाड़ी प्रदेशों के लिए जलवायु परिवर्तन और तेजी से हो रहा शहरीकरण एक साथ मिलकर बड़ी चुनौती बन रहे हैं।

उत्तरकाशी में धराली के जख्म हरे हुए

नेपाल की ताजा विनाशकारी घटना में बर्फ, चट्टान और मलबा खिसकने से नदी के रास्ते में अस्थाई रुकावट बनने और फिर अचानक भारी जलप्रवाह के संकेत मिले हैं। ऐसी रुकावट प्राकृतिक बांध का रूप ले लेती हैं। इसके टूटते ही पानी के साथ बोल्डर व मलबा तेज रफ्तार से नीचे की घाटियों और मैदानी इलाकों तक पहुंचता है। उत्तराखंड में भी भूस्खलन से नदी रुकने और बाद में प्राकृतिक अवरोध टूटने की घटनाएं हो चुकी हैं। अगस्त 2025 में उत्तरकाशी के धराली में सामान्य रूप से बहने वाली खीर गाड़ नदी ने अचानक रौद्र रूप लिया। जिसने एक बहुत बड़ी रिहायशी आबादी को जमींदोज कर डाला था। धराली बाजार में रहने वाले लोग भी सम्भल नहीं पाए और काल का ग्रास बन गए थे। धराली गांव नेपाल की तरह मलबे में तब्दील हो गया था। धराली आपदा से साबित हुआ था कि ऊंचाई वाले क्षेत्रों में ढलान, ग्लेशियर और मलबे में हलचल अचानक विनाशकारी बहाव का रूप लेती है। ऐसी विनाशकारी बाढ़ के पीछे पुराने नदी मार्गों और प्राकृतिक जल निकासी क्षेत्रों के करीब अंधाधुंध निर्माण और पहाड़ की संवेदनशीलता को नजर अंदाज करना भी एक कारण हैं। नेपाल की विध्वंसकारी बाढ़ ने उत्तराखंड के धराली में पिछले साल की आपदा के जख्म एक बार फिर हरे कर दिए हैं। इससे भी पहले जून 2013 में केदारनाथ में आई भीषण आपदा आधुनिक भारत की सबसे दर्दनाक प्राकृतिक त्रासदियों में से एक थी, जिसमें मूसलाधार बारिश और चोराबाड़ी झील के फटने से हजारों लोगों की जान चली गई थी। ये घटनाएं बताती है कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ होगी तो आपदा जन्म लेंगी।

जून 2013 में केदारनाथ में आई भीषण आपदा आधुनिक भारत की सबसे दर्दनाक त्रासदियों में से एक थी, जिसमें चोराबाड़ी झील के फटने से हजारों लोगों की जान चली गई थी, 2025 में उत्तरकाशी के धराली में सामान्य रूप से बहने वाली खीर गाड़ नदी ने अचानक रौद्र रूप लिया, जिसने एक बहुत बड़ी रिहायशी आबादी को जमींदोज हो गई थी, ये घटनाएं बताती है कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ होगी तो आपदा जन्म लेंगी।

कम बर्फवारी से ग्लेशियर खतरे में

प्रलयकारी विनाश को रोकने के लिए नेपाल से उत्तराखंड तक पूरे हिमालयी कैचमेंट में उपग्रह निगरानी, जलस्तर मापने वाले यंत्र, रिमोट सेंसर और रियल टाइम चेतावनी प्रणाली मजबूत करनी होगी, ताकि ऊपरी क्षेत्रों में नदी का बहाव रुकने या प्राकृतिक अवरोध बनने की सूचना तत्काल निचले जिलों तक पहुंच सके। नेपाल और तिब्बत में हुई त्रासदी के बाद अब गंगा व पर्यावरण संरक्षण से जुड़े लोगों ने गंगोत्री ग्लेशियर के गोमुख और केदारताल में बन रही छोटी-छोटी झीलों पर चिंता व्यक्त की है। उनका कहना है कि समुद्रतल से करीब चार से पांच हजार मीटर ऊंचाई वाले क्षेत्रों में बारिश अधिक होने से अब यह झीलें उत्तराखंड में कभी भी बड़ी आपदा का रूप ले सकती हैं। हालांकि वैज्ञानिकों का दावा है कि यह सभी सुपरा ग्लेशियर झीलें हैं। इनमें अधिकांश अस्थाई होती है इसलिए इनसे बड़ा खतरा कम है। गंगोत्री ग्लेशियर पर गोमुख वाले क्षेत्र में गंगा के उद्गम स्थल के आसपास ग्लेशियर मलबे पर छोटी-छोटी झीलें बनी हुई हैं। केदारताल क्षेत्र में भी इसी प्रकार की झीलें हैं। इस पर पर्यावरणविदों का कहना है कि गंगोत्री घाटी क्षेत्र के ग्लेशियर पूर्व से ही संवेदनशील बने हैं। हिमालय में चार से पांच हजार मीटर की ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पहले हल्की बारिश होते ही बर्फ गिरती थी। लेकिन अब यहां बारिश अधिक हो रही है। जिससे झीलों में पानी की मात्रा बढ़ रही है। लिहाजा गोमुख ग्लेशियर में मलबे पर बनी झीलें कभी भी बड़ी आपदा का रूप ले सकती हैं। इसलिए इनकी निगरानी के साथ ही अर्ली वार्निंग सिस्टम की स्थापना अति आवश्यक है।

छोटी झीलों का वैज्ञानिक अध्ययन हो

30 अगस्त को गंगा विचार मंच के प्रांत संयोजक लोकेंद्र बिष्ट और गोमुख से लौटे ग्राम प्रहरी प्रखर बिष्ट ने उत्तराखंड सरकार से गंगोत्री और केदारताल क्षेत्र में ग्लेशियर के मलबे पर बन रही छोटी झीलों का वैज्ञानिक एवं गहन अध्ययन कराने की मांग की है। वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों का कहना है कि नेपाल में लांगटांग-लिरुंग पर्वत पर ग्लेशियर के ढहने से विनाशकारी आपदा आई। लेकिन इस घटना की पूरी और सटीक जानकारी सामने आने में अभी कई महीने लग सकते हैं। विशेषज्ञों की तरफ से चेतावनी दी जा रही है कि यह कोई एक बार होने वाली घटना नहीं है। ऐसी घटनाएं भविष्य में भी हो सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक ब्रिटने (यूके) के लीड्स विश्वविद्यालय के ग्लेशियल बाढ़ विशेषज्ञ प्रोफेसर जोनाथन कैरिविक का कहना है कि जलवायु परिवर्तन की वजह से पहाड़ गर्म हो रहे रहे हैं। इससे पर्माफ्रॉस्ट (जमी हुई बर्फ) और ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। इसलिए भविष्य में नेपाल की घटना से भी भयानक आपदा की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है शोधकर्ताओं ने अनुमान जाताया है कि दुनिया भर में करीब 1.5 करोड़ लोग ऐसे इलाकों में रह रहे हैं, जहां उन पर इस तरह की आपदाओं का खतरा मंडरा रहा है। एशिया में हिमालय, काराकोरम, हिंदूकुश और आसपास की पर्वत श्रृंखलाएं सबसे ज्यादा जोखिम क्षेत्रों में शामिल हैं। हालांकि अमेरिका और कनाडा में रहने वाले लोगों पर भी खतरा कम नहीं है। डप्रोफेसर जोनाथन कैरिविक ने चेतावनी दी है कि उत्तरी अमेरिका में भी नेपाल जैसी घटना हो सकती है। हालांकि वैज्ञानिक अभी भी नेपाल की आपदा को समझने में लगे हुए हैं।

नेपाल में ही करीब 20 ग्लेशियर झीलें संवेदनशील हैं, इसके बावजूद पूरे हिमालयी क्षेत्र के लिए साझा और प्रभावी अर्ली वार्निंग सिस्टम नहीं है, वैज्ञानिकों की सलाह है कि पहाड़ों और ग्लेशियर की संवेदनशीलता को नजर अंदाज किया गया तो आने वाले समय में विकास परियोजनाएं खुद आपदा के जोखिम को बढ़ाने वाली साबित हो सकती हैं।

ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड का खतरा

वैज्ञानिकों ने यह भी चेतावनी दी है कि पर्वतीय इलाके एक अन्य खतरे के से भी संवेदनशील होते जा रहे हैं, जिसे ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड कहा जाता है। यह तब होता है, जब ग्लेशियर से पिघला पानी एक बड़ी झील का निर्माण कर देता है और यह झील एक पतले तथा अस्थिर प्राकृतिक बांध के पीछे रुकी रहती है। अगर ग्लेशियर का कोई हिस्सा ढह जाए या पिघले हुए पानी का स्तर बहुत ज्यादा बढ़ जाए, तो यह प्राकृतिक बांध टूट सकता है। इसके बाद पानी का एक बेहद शक्तिशाली प्रवाह पहाड़ से नीचे की तरफ तबाही मचा सकता है। हालांकि वैज्ञानिक फिलहाल यह नहीं मान रहे हैं कि नेपाल और तिब्बत में आई भयानक बाढ़ अस्थाई झील टूटने की वजह से आई थी, क्योंकि उपग्रह तस्वीरों में भूस्खलन से पहले इस क्षेत्र में किसी बड़ी झील के बनने के प्रमाण नहीं मिले हैं। फिर भी दुनिया भर में ग्लेशियर अब ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस तरह की बाढ़ के खतरे में डाल रहे हैं, जो नेपाल में देखी गई घटना से भी अधिक घातक साबित हो सकती है। वैज्ञानिकों ने नेचर कम्युनिकेशंस में प्रकाशित अपने शोधपत्र में नवीनतम मॉडलिंग तकनीकों का इस्तेमाल किया है और यह पता लगाया है कि किन इलाकों में सबसे ज्यादा खतरा है। उन्होंने शोध में पता लगाया कि इस खतरे में रहने वाले 1.5 करोड़ से ज्यादा लोगों में आधे से ज्यादा लोग सिर्फ चार देशों, भारत, पाकिस्तान, पेरू और चीन के हैं। हाई माउंटेन एशिया में हिमालय, काराकोरम, हिंदूकुश और आसपास की पर्वत श्रृंखलाएं शामिल हैं और यह सबसे ज्यादा जोखिम वाले क्षेत्रों में है। इन इलाकों में लोग सबसे ज्यादा जोखिम में हैं और ग्लेशियल झीलों के सबसे पास रहते हैं। इन इलाको में 10 किलोमीटर से कम दूरी पर 10 लाख से ज्यादा लोग रहते हैं। दुनिया में ग्लोफ के खतरे में आने वाली जनता में से करीब 62 फीसदी लोग हाई माउंटेन एशिया में रहते हैं। इनमें करीब 30 लाख भारत में और 20 लाख पाकिस्तान में रहते हैं। नेपाल में ही करीब 20 ग्लेशियर झीलें संवेदनशील हैं। इसके बावजूद पूरे हिमालयी क्षेत्र के लिए साझा और प्रभावी अर्ली वार्निंग सिस्टम नहीं है। इसलिए वैज्ञानिकों की सलाह है कि पहाड़ों और ग्लेशियर की संवेदनशीलता को नजर अंदाज किया गया तो आने वाले समय में विकास परियोजनाएं खुद आपदा के जोखिम को बढ़ाने वाली साबित हो सकती हैं। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या विनाश की शर्त पर विकास आवश्यक है?

उत्तराखंड बना 'लैंडस्लाइड' स्टेट

उत्तराखंड में 14,780 लैंडस्लाइड क्षेत्र मौजूद हैं, लैंडस्लाइड क्षेत्र के हिसाब से उत्तराखंड देश में तीसरे नंबर पर आता है, अरुणाचल प्रदेश में 26,213 लैंडस्लाइड जोन हैं, जो पहले नंबर है, जबकि दूसरे नंबर पर हिमाचल प्रदेश है, जहां 17,102 लैंडस्लाइड जोन हैं, जीएसआई ने उत्तराखंड में कुल 39,009 स्क्वायर किलोमीटर क्षेत्र का भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण किया जिसमें 14,780 लैंडस्लाइड क्षेत्र मिले हैं।

कमल कपूर
वरिष्ठ पत्रकार

देशभर में मानसून पूरी तरह से एक्टिव है। पहाड़ से लेकर मैदान तक बाढ़ और बारिश ने तबाही मचा रखी है। जन जीवन अस्त-व्यस्त है। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर में लैंडस्लाइड ने जिंदगी रोक दी है। रास्ते बंद सड़कों पर मलवा है और प्रशासन सड़क खोलने की जद्दोजहद में है। उत्तराखंड लैंडस्लाइड से नेशनल हाईवे बंद हो रहे है। इस पहाड़ी राज्य में लैंडस्लाइड जोन की संख्या लगातार बढ़ रही है। स्थिति ये है कि राष्ट्रीय स्तर पर लैंडस्लाइड की सूची में उत्तराखंड टॉप-3 राज्यों में शामिल हो चुका है। खास बात ये है कि इसमें संवेदनशील लैंडस्लाइड जोन की भी अच्छी खासी संख्या हो चुकी है, जो प्रदेश के लिए बड़ी चिंता और चुनौती है। उत्तराखंड के ऐसे कई क्षेत्र हैं, जो हर साल मानसून में सरकार के लिए चिंता बने रहते हैं। हालांकि उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदाओं का लंबा इतिहास है। 2013 की केदारनाथ आपदा हर मानसून में जख्मों को हरा कर देती है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि हर मानसून में एक नया क्षेत्र लैंडस्लाइड के रूप में चिह्नित होने लगा है। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने भी राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे लैंडस्लाइड जोन चिह्नित किए हैं। खास बात यह है कि सर्वेक्षण के बाद भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण ने जो आंकड़ा सार्वजनिक किया है, वो देश के कई राज्यों के साथ ही उत्तराखंड के लिए भी चिंता पैदा करने वाला है। एक्सपर्ट मानते हैं कि किसी राज्य के विकास के साथ विनाश भी साथ आता है। पहाड़ी राज्यों में जितना विकास नहीं होता उससे कहीं ज्यादा विनाश होता है। क्योंकि जब सड़कें, पुल, पुलिया बहती हैं तो राज्य का बुनियादी ढांचा प्रभावित होता है। जिसे फिर से खड़ा करने के लिए सरकार को फिर से भारी खर्च उठाना पड़ता है।

अरुणाचल प्रदेश पहले स्थान पर

भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण देश में लैंडस्लाइड का पूर्वानुमान भी देता है। आंकड़े बताते हैं कि उत्तराखंड में 14,780 लैंडस्लाइड क्षेत्र मौजूद हैं। लैंडस्लाइड क्षेत्र के हिसाब से उत्तराखंड देश में तीसरे नंबर पर आता है। इसके अलावा अरुणाचल प्रदेश में 26,213 लैंडस्लाइड जोन मौजूद हैं, जो पहले नंबर है। इसी तरह दूसरे नंबर पर हिमाचल प्रदेश है, यहां 17,102 लैंडस्लाइड जोन हैं। उत्तराखंड की बात करें तो जीएसआई ने उत्तराखंड में कुल 39,009 स्क्वायर किलोमीटर क्षेत्र का भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण किया जिसमें 14,780 लैंडस्लाइड क्षेत्र मिले। उत्तराखंड आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव का कहना है कि राज्य सरकार अपने स्तर से भी लगातार भूस्खलन क्षेत्र चिह्नित करती रहती है। उनका कहना है कि राज्य में इस समय 53 लैंडस्लाइड क्षेत्र चिह्नित हैं, जिनका पूरा डाटा आपदा प्रबंधन के पास मौजूद है। इन सभी लैंडस्लाइड क्षेत्रों पर सरकार की तरफ से काम किया जा रहा है, ताकि उनकी संवेदनशीलता को कम किया जा सके। उत्तराखंड के मुख्य रूप से चार जिले लैंडस्लाइड को लेकर सबसे ज्यादा संवेदनशील हैं। इसमें रुद्रप्रयाग, चमोली, उत्तरकाशी और टिहरी जिले शामिल हैं। हालांकि भूस्खलन को लेकर राज्य के 9 जिलों में कहीं ना कहीं संवेदनशील भूस्खलन क्षेत्र मौजूद हैं। भूस्खलन के क्षेत्र में कई संस्थाएं काम कर रही हैं।

हिमालय क्षेत्र में बारिश की मात्रा तेजी से बढ़ रही है और यह पर्वतीय क्षेत्र के लिए भूस्खलन को लेकर अच्छी खबर नहीं है, बादल फटने की घटनाओं ने लोगों के दिलों में खौफ पैदा कर रखा है, क्योंकि बादल फटने के कारण भूस्खलन की घटनाओं में वृद्धि होती है, साथ ही नदी और नाले तेज गति से उफान पर आ जाते हैं, जो अपने साथ सब कुछ बहाकर ले जाते हैं।

विकास के साथ विनाश भी

यहां बात केवल उत्तराखंड की नहीं है बल्कि पूरे हिमालय रीजन में यदि किसी भी तरह की छेड़छाड़ या बदलाव होता है तो भूस्खलन की संभावनाएं बहुत ज्यादा बढ़ जाती है। इसके अलावा फॉरेस्ट फैलिंग के कारण भी पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन की घटनाएं बढ़ रही हैं, जबकि लगातार हो रहे विकास कार्यों के कारण पहाड़ों से हो रही छेड़छाड़ ने लैंडस्लाइड की घटनाओं को और खतरनाक कर दिया है। जिन क्षेत्रों में जितने ज्यादा विकास कार्य हो रहे हैं, उन्हीं क्षेत्रों में लैंडस्लाइड जोन भी बढ़ रहे हैं। इस मानसून में तो कई जगह पर बड़े लैंडस्लाइड क्षेत्र भी रिकॉर्ड हुए हैं, जो अक्सर राष्ट्रीय राजमार्गों के बंद होने की भी वजह बने हैं। उत्तराखंड में पिछले एक दशक के भीतर कई बड़ी योजनाएं संचालित की गई है। इन क्षेत्रों में ही लैंडस्लाइड का रिकॉर्ड भी बढ़ा है। जानकार यह भी कहते हैं कि हिमालय क्षेत्र में बारिश की मात्रा तेजी से बढ़ रही है और यह पर्वतीय क्षेत्र के लिए भूस्खलन को लेकर अच्छी खबर नहीं है। बादल फटने की घटनाओं ने लोगों के दिलों में खौफ पैदा कर रखा है। जाहिर है कि बादल फटने के कारण भूस्खलन की घटनाओं में वृद्धि होती है। साथ ही नदी और नाले तेज गति से उफान पर आ जाते हैं, जो अपने साथ सब कुछ बहाकर ले जाते हैं। कई बार तो पहाड़ी क्षेत्र में पूरे गांव के गांव लैंडस्लाइड की वजह से दफन हो जाते हैं।

जोशीमठ में भयावह लैंडस्लाइड

इस बार जोशीमठ में लैंडस्लाइड का भयावह नजारा देखने को मिला है। घटना जोशीमठ से करीब 40 किलोमीटर दूर तमक वैली की है। यहां पर बीआरओ की ओर से वैली ब्रिज का निर्माण कराया गया था। यह ब्रिज भी सैलाब की चपेट में आ गया। पुल के बहने का पूरा नजारा कैमरे में रिकॉर्ड हुआ है। पहाड़ से पानी और मलबे का सैलाब ऐसा आया कि जो भी सैलाब के सामने आया उसे अपने साथ बहा कर ले गया। इसमें इंसान की जान और माल के साथ वन्यजीव, पालतू पशु सड़क, पुल और पुलिया सब शामिल है। जब तक लोग कुछ समझ पाते, तब तक पूरा इलाका उजड़ चुका था। इसी तमक वैली में बीआरओ ने वैली ब्रिज का निर्माण कराया था। इसी ब्रिज के जरिए इलाके के दर्जनों गांवों के लोग पास के शहर तक पहुंचते थे। जोशीमठ के तमक वैली में तबाही की तस्वीरें एक वीडियो के जरिये सामने आई है। वीडियो में देखा जा सकता है कि पहाड़ की चोटियों की तरफ से तेज आवाज आती है। ऐसा लगता है कि बारिश के कारण पहाड़ के बीच में जमा पानी नीचे की तरफ आ रहा है। इसके साथ मलबा, बड़े-बड़े पेड़ व बोल्डर भी पानी के साथ नीचे आ रहे हैं। देखते ही देखते पूरा नाला मलबे और पानी से भर जाता है। पानी की तेज रफ्तार को देखते हुए पुल पार करने की तैयारी कर रहे कुछ लोग रुक जाते हैं। लेकिन एक पिकअप गाड़ी पुल के पास खड़ी थी जो सैलाब के साथ बहती दिखाई देती है। यह मंजर देख कर लोगों के दिल कांपने लगते हैं। चमोली जिले में ऐसी तबाही हर मानसून में देखने को मिलती हैं।

भूस्खलन की डरावनी तस्वीरें

प्राकृतिक आपदा की दृष्टि से संवेदनशील उत्तराखंड में मानसून के दौरान पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन की डरावनी तस्वीरें सामने आती रहती हैं। कब कहां बादल फटने की धटना हो जाए, कब कहां जमीन दरक जाए, कुछ नहीं कहा जा सकता। आंकड़े गवाही दे रहे हैं उत्तराखंड में इस मानसून में 9 अगस्त और 10 अगस्त को भारी से बहुत भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया था। भारी बारिश को देखते हुए एडवाइजरी भी जारी कर दी गई थी। वहीं भारी बारिश से उत्तराखंड सरकार और जनमानस को काफी नुकसान हुआ है। राज्य में भारी बारिश के कारण 120 सड़कें मलबा, पत्थर और भूस्खलन के कारण बंद हो गई। उत्तराखंड में कई ग्रामीण सड़कों के बह जाने या मलवा आने से गांवों का संपर्क आसापास के गांवों तक से टूट गया था। मॉनसून सीजन में उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में लगातार बारिश होने से राज्य के सभी 13 जिले प्रभावित हुए हैं। अल्मोड़ा जिले में पांच सड़के बंद हुई थी। बागेश्वर में तीन, चमोली में 21, देहरादून में 17, नैनीताल में पांच, पौड़ी में 7, पिथौरागढ़ में 18, रुद्रप्रयाग में 8, टिहरी में 17 उत्तरकाशी में भी 17 सड़के काफी समय तक बंद रही। कई बार रास्ते बंद होने के करण चारधाम यात्रा को भी रोकना पड़ा। जोशीमठ के तमक नाले में आए उफान के बाद एक बीआरओ कर्मचारी के बहने की सूचना भी मिली। रेस्क्यू आपरेशन चला लेकिन कर्मचारी का कोई पता नहीं चल सका था।

- **उत्तराखंड के मुख्य रूप से चार जिले लैंडस्लाइड को लेकर सबसे ज्यादा संवेदनशील हैं, इसमें रुद्रप्रयाग, चमोली, उत्तरकाशी और टिहरी जिले शामिल हैं, हालांकि भूस्खलन को लेकर राज्य के 9 जिलों में कहीं ना कहीं संवेदनशील भूस्खलन क्षेत्र मौजूद हैं, भूस्खलन के क्षेत्र में कई संस्थाएं काम कर रही हैं।**
- **जोशीमठ क्षेत्र के तमक इलाके में तो एक के बाद एक कई बार बादल फटने की घटना से क्षेत्रवासी सहम गए, क्योंकि बादल फटने के बाद नीद-नाले और गदेरों में अचानक पानी का प्रवाह बढ़ गया, चूंकि पहाड़ से पानी नीचे आता है तो उसका बहाव भी तीव्र गति का होता है जो सब कुछ अपने साल ले जाता है।**

नीती घाटी में पुल बह गया

चमोली जिले में पुल के बहने से नीती घाटी की ओर आवाजाही पूरी तरह प्रभावित हो गई, यानी इस क्षेत्र का जिला मुख्यालय से सड़क संपर्क पूरी तरह बाधित हो गया था। जोशीमठ क्षेत्र के तमक इलाके में तो एक के बाद एक कई बार बादल फटने की घटना से क्षेत्रवासी सहम गए थे। क्योंकि बादल फटने के बाद नीद-नाले और गदेरों में अचानक पानी का प्रवाह बढ़ गया था। चूंकि पहाड़ से पानी नीचे आता है तो उसका बहाव भी तीव्र गति का होता है। तेज बहाव के सामने जो कुछ भी आता है उसे अपने साथ बहा ले जाता है। कई बार रात में बादल फटने की घटना होती है तो भारी नुकासान होता है। साथ ही भारी बारिश और अंधेरा होने के कारण कई बार रेस्क्यू में कठिनाई आती है। रेस्क्यू करने वाली एसडीआरएफ और एनडीआरएफ को रेस्क्यू रोकना पड़ता है या फिर रेस्क्यू की गति धीमी हो जाती है। फिलहाल सरकार सतर्क है और लोगों को नदी नालों से दूर रहने की हिदायत दे रही है। धौलीगंगा नदी में आए सैलाब ने पिछले साल भारी तबाही मचाई थी। लिहाजा इस बार धौलींगगा नदी के जलस्तर में संभावित वृद्धि को देखते हुए तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सुरक्षित स्थानों पर जाने के लिए कहा गया है। साथ ही जोशीमठ, उत्तरकाशी आदि में चल रही जल विद्युत परियोजनाओं में कार्यरत संबंधित कंपनियों को भी सतर्क रहने के निर्देश सरकार ने पहले ही दे दिए थे। किसी भी परिस्थिति से निपटने के लिए सरकार ने लैंडस्लाइड और बाढ़ अथवा सैलाब आने वाले संभावित क्षेत्रों में पुलिस बल तैनात कर सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित कर ली थी। पर्यटकों को हिदायत दी गई कि वो किसी भी तरह की जोखिम भरी यात्रा न करें और प्रशासन की ओर से जारी सूचना के बाद ही आगे बढ़े। चार धाम यात्रियों के साथ पर्यटकों को लगातार सावधानी बरतने की चेतावनी दी जाती रही है। चमोली में लगातार बारिश के कारण मौसम विभाग भी एक्टिव है। प्रदेश में भारी से भारी बारिश को लेकर अलर्ट जारी होता रहा। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के आपदा प्रभावित क्षेत्रों के गांवों में राशन, खाद्य सामग्री, दवाइयों एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति प्रभावित न हो, इसके लिए प्रशासन को विशेष व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए थे। ताकि आवश्यकता पड़ने पर वैकल्पिक मार्गों से ग्रामीणों तक आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति की जा सके।

मानसूनसत्र वॉशआउट

लोकसभा अध्यक्ष व राज्यसभा के उपसभापति जिन सांसदों का नाम लेने से पहले माननीय जैसा सम्मानित उच्चारण करते हैं उन सांसदों का बेहरुपिया या मदारी बन कर चंदा चोरी और टेडीबीयर लेकर संसद परिसर में ड्रामा करना संसदीय प्रणाली को कलंकित करने वाला आचरण जनता को क्या स्वीकार होगा? देश को सोचना चाहिए कि क्या मदारी और बेहरुपिया बनने के लिए ही सांसद चुनते हैं?

शालिनी चौहान
नई दिल्ली

संसद का मॉनसून सत्र वॉशआउट हो गया और जनता की गाढ़ी कमाई के 142 करोड़ रुपये पानी में बह गए। क्योंकि मानसून सत्र का 80 प्रतिशत समय विपक्ष (इंडी गठबंधन) के हंगामे की भेंट चढ़ गया। सरकार को अपना कामकाज निपटाना था, वह तो हो गया। लेकिन विधेयकों पर चर्चा नहीं हो पाई। दोनों सदनों की कार्यवाही 114 घंटे चलनी थी, लेकिन लोकसभा में 96 घंटे से ज्यादा का समय तो जंतर-मंतर और राम मंदिर के चढ़ावा चोरी को लेकर हुए हंगामे में बर्बाद हो गए। कांग्रेस ने जनहित के बजाये कॉकरोच जनता पार्टी के आंदोलन की संसद में पैरवी की। राज्यसभा में 77 घंटे हंगामा होता रहा और विपक्ष की अराजकता की वजह से मॉनसून सत्र एक दम वॉशआउट हो गया। सत्र के बीस दिन में विरोध के नाम पर जिस तरह की हरकतें की गई, वो भी शर्मनाक हैं। संसद सत्र के दौरान पहले बिहार के कांग्रेस समर्थक सांसद पप्पू यादव ने राम मंदिर चोरी को लेकर भगवा कपड़े पहने और फिर चंदा चोरी का जो नाटक किया उससे संत, सनातनी समाज और हिंदुओं में नाराजगी है। संत समाज ने पप्पू यादव के खिलाफ मोर्चा भी खोला और पप्पू यादव की संसद सदस्यता रद्द करने की मांग भी की। अभी ये मामला शांत हुआ ही था कि सत्र के आखिरी दिन कांग्रेस के राज्यसभा सांसद पवन खेड़ा के नेतृत्व में कांग्रेसी और सपाई सांसद मदारी बन गए। प्रियंका गांधी समर्थक कुछ गिनती के सांसद हाथों में टेडीबीयर लेकर आए और नारे लगाए '56 इंच का छोटा बंदर जल्दी आओ सदन के अंदर।' यानी ये नारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह को टारगेट कर लगाए गए। आखिर इस तरह की विपक्षी सांसदों की हरकतों में जनहित कहां है? क्या इस तरह की बेजा हरकतों के लिए जनता सांसद चुनती है? देश की सबसे बड़ी पंचायत संसद में जनकल्याण के विधेयकों पर चर्चा करने के बजाये जब देश के सांसद इस तरह की हरकतें करते हैं तो देश के लोकतंत्र में संविधान की शपथ लेने वाले ही संविधान को तार-तार करते हैं। संसद जिसे नेता मंदिर भी कहते हैं उसकी तौहीन करते हैं। संसदीय कार्यप्रणाली को अपमानित करते हैं। लोकसभा अध्यक्ष और राज्यसभा के उपसभापति जिन सांसदों का नाम लेने से पहले माननीय जैसा सम्मानित उच्चारण करते हैं उन सांसदों का बेहरुपिया या मदारी बन कर चंदा चोरी और टेडीबीयर लेकर संसद परिसर में ड्रामा करना संसदीय प्रणाली को कलंकित करने वाला आचरण जनता को स्वीकार नहीं होता है। अब देश को सोचना चाहिए कि क्या मदारी और बेहरुपिया बनने के लिए ही सांसद चुनते हैं?

संसद के अंदर और संसद परिसर में हंगामा तथा अराजकता के साथ संसदीय मर्यादा को अपमानित कर यदि विपक्षी सांसदों को लगता है कि मॉनसून सत्र की कार्यवाही ठप करके उन्होंने किला जीत लिया है, या उन्हें लगता है कि संसद की कार्यवाही में बाधा डालकर ही सत्ता मिल सकती है तो ये उनकी गलत फहमी है, क्योंकि जनता चाहती है कि किसी भी कानून पर संसद में सार्थक बहस होनी चाहिए।

नए सांसद क्या मुंह दिखाएंगे?

संसद के अंदर और संसद परिसर में हंगामा तथा अराजकता के साथ संसदीय मर्यादा को अपमानित कर यदि विपक्षी सांसदों को लगता है कि मॉनसून सत्र की कार्यवाही ठप करके उन्होंने किला जीत लिया है, या उन्हें लगता है कि संसद की कार्यवाही में बाधा डालकर ही सत्ता मिल सकती है तो ये उनकी गलत फहमी है। क्योंकि जनता चाहती है कि किसी भी कानून पर संसद में सार्थक बहस होनी चाहिए। लेकिन 12 साल सत्ता से बाहर रहकर विपक्ष खासकर कांग्रेस गलत फहमी में ही जी रही है। यदि विपक्षी सांसद सदन में हंगामे की जगह संसदीय कार्यवाही में हिस्सा लेते और संसद की कार्यवाही ठीक से चलने देते तो इसमें विपक्ष को ही ज्यादा लाभ हो सकता था। विपक्ष सरकार से तीखे सवाल पूछ सकता था। जो बिल सरकार लाई थी उनकी कमियों को जनता के सामने रख सकता था। विपक्ष को सोचना चाहिए कि उनके हंगामें से सरकार का क्या गया? सरकार को जो बिल पास कराने थे, वो बिना बहस के पास करा लिए और विपक्ष एक्सपोज हो गया कि उसका मकसद जनहित नहीं बल्कि जनविरोध है। मानसून सत्र में कुल 12 बिल पास हो गए और मंत्रियों को विपक्ष के किसी एक सवाल का जवाब तक नहीं देना पड़ा। विपक्ष के साथ खड़े उन सांसदों का भी भारी नुकसान हुआ, जो पहली बार संसद में आए हैं उन्हें बोलने का मौका तक नहीं मिला। कांग्रेस और इंडी गठबंधन ने उन्हें संसद में कैसे सवाल किए जाते हैं इसे जानने से रोक दिया। क्योंकि नए सांसद संसद के प्रश्नकाल में अपने चुनाव क्षेत्र से जुड़ी समस्या उठाते हैं, थोड़ा दबाव बना कर मंत्रियों से काम कराते हैं। नए सांसद ये सब सीखने के बजाये यह सीख रहे हैं कि संसद की कार्यवाही को कैसे बाधित किया जाता है? कैसे संसद में हंगामा किया जाता है। संसद में और संसद परिसर में कैसे मदारी बनकर नौटंकी की जाती है। खैर सत्ता पक्ष के सांसद तो अपने चुनाव क्षेत्र के काम आसानी से करा लेते हैं क्योंकि सभी मंत्री उन्हीं की पार्टियों के हैं। लेकिन अब विरोधी दल के सांसद अपने क्षेत्र में जाकर जनता को क्या मुंह दिखाएंगे? क्या जवाब देंगे? क्या ये बताएंगे कि कांग्रेस के जाल में फंसकर हम अपने संसदीय क्षेत्र की समस्या नहीं उठा पाए? या ये बताएंगे कि हमने संसद की कार्यवाही को ठप करने के लिए कौन-कौन से नारे लगाए। खैर संसदीय क्षेत्र की जनता को बताने के लिए अभी ढ़ाई साल बाकी हैं। क्योंकि चुनाव जीतने के बाद शायद ही विपक्ष का कोई सांसद अपने क्षेत्र में जाता हो और जनता से मिलता हो, क्योंकि एक बार चुनाव जीतने के बाद नेता सेवक से राजा बन जाता है और फिर पांच साल बाद ही जनता का सेवक बनने और पैरो में पड़ने का ड्रामा करता है।

शाह की चुनौती सुन भागा विपक्ष

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और सपा सांसद अखिलेश यादव सहित विपक्ष के सांसदों को लग रहा था कि उन्होंने ये दिखा दिया कि अमित शाह जंतर मंतर पर सीजेपी आंदोलन के दौरान पुलिस कार्रवाई का जवाब देने से भाग रहे हैं, तो उनका ये दांव फेल और भ्रम दूर हो गया, क्योंकि सत्र खत्म होने से पहले ही अमित शाह ने यह चुनौती दे कर कि नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और अखिलेश यादव सहित विपक्ष के हर सवाल का जवाब देने के लिए मैं तैयार हूं। आएं और संसद में जो पूछना है पूछे मैं एक-एक सवाल नोट करने के बाद विस्तार से जवाब दूंगा। भले ही इसके लिए सत्र को बढ़ाना ही क्यों न पड़े। अमित शाह की चुनौती की जानकारी संसद में संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने दी। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सभी सांसदों को सदन में अपने सवाल रखने की भी स्वीकृति दी, लेकिन राहुल गांधी और अखिलेश यादव सदन में नहीं दिखाई दिए। यानी नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सदन से भाग गए और अमित शाह का सामना करने की हिम्मत नहीं कर पाए। इसलिए भाजपा सांसदों ने एलओपी की नई परिभाषा बता दी। भाजपा राहुल गांधी को लीडर आफ प्रोपेगेंडा बता रही है। क्योंकि राहुल गांधी सिर्फ प्रोपेगेंडा की ही राजनीति कर रहे हैं। वो सवाल पूछते हैं, लेकिन जवाब सुनने की हिम्मत नहीं कर पाते। क्योंकि अमित शाह जब संसद में बोलते हैं तो कांग्रेस हो या सपा अथवा विपक्ष का कोई भी दल उसके खिलाफ पूरी तैयारी करके आते हैं और बिंदुवार जवाब देकर ऐसा धोते हैं कि विपक्षी

अमित शाह जब संसद में बोलते हैं तो कांग्रेस हो या सपा अथवा विपक्ष का कोई दल उसके खिलाफ पूरी तैयारी करके आते हैं और बिंदुवार जवाब देकर ऐसा धोते हैं कि विपक्षी सांसदों को उनकी चार पीढ़ियों का भारत और हिंदू विरोधी चेहरा दिखा देते हैं, कई बार तो विपक्षी सांसदों को भी लगता है कि कहां अमित शाह को छेड़ दिया।

सांसदों को उनकी चार पीढ़ियों का भारत और हिंदू विरोधी चेहरा दिखा देते हैं। कई बार तो विपक्षी सांसदों को भी लगने लगता है कि कहां अमित शाह को छेड़ दिया।

मॉनसून सत्र में 12 विधेयक पारित

मॉनसून सत्र के बाद संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने मीडिया से कहा कि यह सत्र विधायी दृष्टि से फलदायी रहा, लेकिन सार्थक बहस का अभाव रहा। संसदीय रिकॉर्ड के अनुसार न्यायाधिकरण, कराधान, सहकारी विकास, खनन सुधार, सार्वजनिक परीक्षाएं और सर्वोच्च न्यायालय में जजों की स्वीकृत संख्या में वृद्धि जैसे 12 विधेयक संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित कर दिए गए। सत्र के अंत तक केवल एक विधेयक-भारतीय सांख्यिकी संस्थान विधेयक-2026 लंबित रहा। विपक्ष के बहुमत वाली राज्यसभा में पारित सभी 12 विधेयकों पर हंगामे के बावजूद विचार किया गया और हंगामे के बीच ही विधेयक पारित हो गए। लोकसभा में 12 विधेयकों में से 11 बिना चर्चा के पारित हो गए। केवल सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) संशोधन विधेयक-2026 पर ही विस्तृत बहस हुई, जिसका उद्देश्य पेपर लीक और परीक्षा में नकल से निपटना था। बाकी विधेयकों को पारित करने के दौरान विपक्षी सांसदों ने या तो कार्यवाही में बाधा डाली या बहस में भाग नहीं लिया। राज्यसभा में जहां कांग्रेस और विपक्ष के कुछ सदस्य बहस के बीच में ही वॉकआउट कर गए, वहीं क्षेत्रीय दलों ने विधायी गतिविधियों में भाग लिया। संसदीय आंकड़ों बताते हैं कि सत्र के दौरान 285 तारांकित प्रश्न सूचीबद्ध किए गए थे, लेकिन 16 का ही उत्तर दिया जा सका। शून्यकाल में प्रस्तुत 380 प्रश्नों में से 52 का ही उत्तर दिया जा सका। इसी प्रकार, सूचीबद्ध 380 विशेष उल्लेखित प्रश्नों में से 93 पर ही बहस हो सकी।

विपक्ष चर्चा से भागा

संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने प्रमुख विपक्षी दल के जानबूझकर चर्चा से भागने पर आलोचना की। उन्होंने कहा कि लोकसभा और राज्यसभा में 12 विधेयक पारित किए गए हैं, लेकिन हम चर्चा की गुणवत्ता से संतुष्ट नहीं हैं क्योंकि विपक्ष ने उचित बहस नहीं होने दी, खासकर लोकसभा में। इस बार सत्र में एक असामान्य स्थिति देखने को मिली जिसमें सरकार चर्चा की मांग कर रही थी और विपक्ष इससे बचने के लिए संसद परिसर में मदारी मदारी खेल रहा था। विपक्ष सरकार से जवाब चाहता है और सरकार जवाब देने के लिए बाध्य है। लेकिन इस बार सरकार चर्चा का अनुरोध करती रही और विपक्ष बचने के बहाने ढूंढता रहा। किरेन रिजिजू ने कांग्रेस सांसदों के आचरण पर तीखी टिप्पणी करते हुए कहा कि पहली बार संसद पहुंचे सांसदों को डिबेट और चर्चाओं से कुछ सीखने का अवसर नहीं मिला, जो चिंतानक है। सरकार ने गतिरोध समाप्त करने का बार-बार प्रयास किया, लेकिन वे विफल रही क्योंकि सत्र के अंत तक गतिरोध जारी रहा। मानसून सत्र, जो 20 जुलाई को शुरू हुआ और 13 अगस्त को समाप्त हुआ, यह विधायी सत्र होने के साथ एक राजनीतिक टकराव भी बना रहा। संसद का अनिश्चितकाल के लिए सत्र स्थगित होने के साथ ही राजनीतिक लड़ाई संसद से बाहर भी होगी। क्योंकि सरकार जहां गतिरोध के बावजूद संसद में 12 विधेयकों को पारित कराने से उत्साहित है वहीं विपक्ष का आरोप है कि सरकार ने कुछ मुद्दों पर चर्चा करने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। सरकार और विपक्ष के अपने दावे हैं, लेकिन संसद की कार्रवाई जिसने भी देखी उसकी समझ में आ रहा है कि विपक्ष ने 12 सालों में सिर्फ हंगामा कर सदन की कार्यवाही में बाधा डालने का ही काम किया है। ●

मोदी ने निकाल लिए नक्सली

मोदी ने 'दिमागी नक्सली' शब्द का प्रयोग इसलिए किया था क्योंकि सरकार और कुछ एजेंसियों को 'दिमागी नक्सलियों' पहचान करनी थी, 'दिमागी नक्सलियों' को चिह्नित करना था, इसलिए पीएम मोदी का तीर निशाने पर लगा और दिमागी नक्सली खुद ही दिमागी नक्सली होने का प्रमाण देने लगे। भाजपा का कहना है कि पीएम मोदी ने किसी विपक्षी दल, नेता, पत्रकार या अभिनेता का नाम नहीं लिया है।

केके चौहान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को समझना विपक्ष के वरिष्ठ से वरिष्ठ नेता के लिए भी दूर की कोड़ी है। पीएम नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस पर लालकिले के प्राचीर से नेता, अभिनेता, राजनीतिक दल, सामाजिक संगठन अथवा पत्रकार का नाम लिए बगैर दो शब्द 'दिमागी नक्सल' क्या कहे दिमागी नक्सवाद खुद उछल-उछल कर बाहर आने लगा। पीएम मोदी ने कहा था कि जंगलों में हथियारबंद नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई में बड़ी सफलता मिली है और यह हिंसक आंदोलन अब कमजोर पड़ रहा है। पीएम ने चेताया था कि नक्सली विचारधारा से जुड़े 'दिमागी नक्सल' अब भी देश में मौजूद हैं। उन्होंने ऐसे लोगों की पहचान कर उन्हें अलग-थलग करने की जरूरत पर जोर दिया था। लालकिले से पीएम के इस बयान के बाद विपक्ष और सत्ता पक्ष के बीच ही नहीं मोदी विरोधी पत्रकारों बॉलीवुडियों में तीखी बहस छिड़ गई। किंतु इनमें न तो कोई वैज्ञानिक है, न कोई नामी डाक्टर है, न ही कोई बड़ा प्रोफेसर है, न ही कोई वास्तविक बुद्धिजीवि है, न ही कोई मशहूर कवि आदि है। बहस करने वाले वही लोग है जो कुछ दिन पहले खुद को कॉकरोच बताकर सरकार का विरोध कर रहे थे। ये वो मुट्ठीभर नेता और अभिनेता व पत्रकार हैं जो या तो सुर्खियों में रहना चाहते हैं या फिर अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। कुछ लोग तो सिर्फ सोशल मीडिया पर वायरल होने के लिए ही मोदी का विरोध करते हैं। हालांकि मोदी ने लालकिले से ही कहा था कि 'दिमागी नक्सल' की पहचान कर अलग-थलग करना है। ऐसे में सवाल ये है कि क्या 'दिमागी नक्सली' खुद ही अपनी पहचान बताने लगे?

चिंदंबरम व केजरीवाल दिमागी नक्सली

सबसे पहले वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व गृह मंत्री पी. चिदंबरम और फिर आम आदमी पार्टी संयोजक अरविंद केजरीवाल और कुछ अन्य विपक्षी नेता सामने आए। इन नेताओं ने कहा कि हमे दिमागी नक्सल होने पर गर्व है या मैं हूं 'दिमागी नक्सली।' विपक्षी नेताओं ने आरोप लगाया कि सरकार इस शब्द के जरिए असहमति की आवाज और विपक्ष को दबाना चाहती है। इसलिए कई विपक्षी नेताओं ने खुद को 'दिमागी नक्सली' कहना शुरू कर दिया। सोशल मीडिया पर मोदी विरोधी कुछ बॉलीवुड के अभिनेता भी खुद को 'दिमागी नक्सली' बताकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आलोचना करने लगे। कुछ पत्रकार ने भी वायरल होने के लिए सोशल मीडिया पर मोदी की आलोचना करते हुए खुद को 'दिमागी नक्सली' बताया दिया। पत्रकार राजदीप सरदेसाई ने मोदी के दो शब्दों को व्यक्तिगत रूप से ले लिया है और अपना आपा खो बैठे राजदीप सरदेसाई ने दावा किया कि पीएम मोदी उन्हें ही 'दिमागी नक्सली' कह रहे थे। असल में मोदी ने 'दिमागी नक्सली' शब्द का प्रयोग इसलिए किया था क्योंकि सरकार और कुछ एजेंसियों को 'दिमागी नक्सलियों' पहचान करनी थी। 'दिमागी नक्सलियों' को चिह्नित करना था। इसलिए पीएम मोदी का तीर निशाने पर लगा। उनके भाषण में भी 'पहचान' करने की बात थी। जिसे खुद को नक्सली बताने वाले समझ नहीं पाए। अब सत्ता पक्ष कह रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी ने किसी विपक्षी दल या नेता, पत्रकार या अभिनेता का नाम नहीं लिया था। यह टिप्पणी तो देश विरोधी और अराजक विचारधारा रखने वालों के संदर्भ में थी, न कि सरकार से सवाल पूछने वाले आम नागरिकों या राजनीतिक विरोधियों के लिए। भाजपा नेताओं का कहना है कि 'दिमागी नक्सल' क्या है दुर्भाग्य से ये कांग्रेस के स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में देखने को मिला। जहां 15 अगस्त को आजादी के जश्न में पूरा वंदे मातरम भी नहीं गाया गया। जबकि बंदे मातरम गाने व बजाने का फैसला देश के संविधान के तहत मिली शक्तियों के दायरे में लिया गया था, लेकिन कांग्रेस के जश्न-ए-आजादी कार्यक्रम में वंदे मातरम को बीच में ही बंद करा दिया गया। आखिर कांग्रेस को पूरे राष्ट्रगीत पर आपत्ति क्यों है?

सबसे पहले देश के पूर्व गृह मंत्री पी.चिदंबरम, आम आदमी पार्टी संयोजक अरविंद केजरीवाल व कुछ अन्य विपक्षी नेता सामने आए, इन नेताओं ने कहा कि हमे दिमागी नक्सल होने पर गर्व है या मैं हूं 'दिमागी नक्सली' विपक्षी नेताओं ने आरोप लगाया कि सरकार इस शब्द के जरिए विरोधियों की आवाज और विपक्ष को दबाना चाहती है।

विपक्ष ने दिमागी नक्सल परिभाषा पूछी

प्रधानमंत्री की टिप्पणी पर कांग्रेस ने सवाल उठाते हुए उनसे 'दिमागी नक्सल' की स्पष्ट परिभाषा बताने को कहा। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा, दो-तीन साल पहले भी पीएम मोदी ने अपने राजनीतिक विरोधियों को 'दिमागी नक्सल' कहा था, तब संसद में ये पूछा गया था कि 'दिमागी नक्सल' की परिभाषा क्या है? गृह मंत्री से जवाब आया था कि 'दिमागी नक्सल' कोई चीज नहीं है, कोई परिभाषा नहीं है। अब प्रधानमंत्री लालकिले से 'दिमागी नक्सल' की भाषा, अपने राजनीतिक विरोधियों को लेकर करते हैं। पूर्व गृह मंत्री पी चिदंबरम ने एक्स पर लिखा, मुझे 'दिमागी नक्सल' होने पर गर्व है। कांग्रेस के सांसद राजीव शुक्ला ने कहा, पहले तो 'दिमागी नक्सल' की परिभाषा बताई जाए कि ये क्या है? आप किसे 'दिमागी नक्सल' कह रहे हैं? ये उन युवाओं और बुद्धिजीवियों का अपमान है, जो देश और समाज के लिए सोचते हैं। अब पढ़े लिखे लोगों को 'दिमागी नक्सल' बता दिया। आरजेडी के सांसद मनोज झा ने एक्स पर पोस्ट किया, 'डियर प्राइम मिनिस्टर सर... बहुत छोटे, युवा और हमेशा जिज्ञासु रहने वाले हम लोग 'दिमागी नक्सल' शब्द देने के लिए आपका दिल से धन्यवाद करते हैं। अब वायरल होने वाले मीम्स, रील्स, कार्टून, पैरोडी, कविताओं और गानों के लिए तैयार रहिए।' ये अलग-अलग भारतीय भाषाओं और कई तरह के अंदाज में होंगे। तृणमूल कांग्रेस के सांसद कीर्ति आजाद ने कहा, प्रधानमंत्री का कमाल है, जो पढ़ा लिखा है वो नक्सल है और जो अनपढ़ और अज्ञानी है वो देशभक्त है, ये इनकी परिभाषा है। ये पेपर लीक कराते हैं और चाहते हैं कि सब अनपढ़ रहें। जबकि जो पढ़-लिख लेगा वो इनकी नजरों में 'दिमागी नक्सल' हो जाएगा।

भाजपा ने दिमागी नक्सल की परिभाषा बताई

भाजपा सांसद व प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने विपक्षी दलों टीएमसी, आरजेडी, कांग्रेस को 'दिमागी नक्सल' की परिभाषा भी बता दी और ये भी याद दिला दिया कि किसने कब क्या कहा था। साथ ही पूर्व गृह मंत्री पी.चिदंबरम के 'दिमागी नक्सली' होने पर गर्व करने पर भाजपा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने किसी नेता या पार्टी का नाम लिए बिना साबित कर दिया कि कौन 'दिमागी नक्सली' है? सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि पीएम मोदी ने तो किसी का नाम नहीं लिया था, लेकिन 24 घंटे के अंदर ही दिमागी नक्सली खुद-ब-खुद सामने आ गए। सांसद त्रिवेदी ने छत्तीसगढ़ के मशहूर झीरम घाटी हत्याकांड की भी याद ताजा कराई। कांग्रेस को 25 मई 2015 की याद दिलाते हुए बताया कि 25 मई के दिन नक्सलवादियों ने छत्तीसगढ़ के सुकमा की झीरम घाटी में घात लगाकर कांग्रेस नेताओं के काफिले पर ताबड़तोड़ गोलीबारी की थी। जिसमें 32 लोगों की मौत हुई थी, इनमें ज्यादातर कांग्रेस के नेता थे। नक्सलियों के हमले में छत्तीसगढ़ कांग्रेस का लगभग पूरा नेतृत्व ही खत्म हो गया था। इसके साथ ही सुधांशु त्रिवेदी ने दिमागी नक्सल की परिभाषा कुछ इस तरह भी बताई...। सुधांशु त्रिवेदी ने बताया कि जिन्हें 'आतंकी हाफिज सईद' में हाफिज साहब नजर आता है। याकूब मेनन में 'ज्यूडिशियल किलिंग' नजर आती है। जिसे ओसामा लादेन में 'ओसामा जी' नजर आता है। जिसको जाकिर नाईक में 'शांति का मसीहा' नजर आता है। जिसे इशरत जहां में 'बेटी' नजर आती है। बुरहान वानी में 'भटका हुआ नौजवान' नजर आता है। भारत के सेना अध्यक्ष में 'सड़क छाप गुंडा' नजर आता है वो 'दिमागी नक्सल' है। इस तरह के बयान समय-समय पर किस पार्टी के सीनियर लीडर्स द्वारा दिए गए थे, ये देश भलीभांति जानता है। भाजपा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने चिदंबरम पर तंज कसते हुए कहा कि हैरानी की बात है कि पीएम के बयान के तुरंत बाद यह सामने आ गया कि किसके दिमाग में नक्सल बैठा है। त्रिवेदी ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के 13 अप्रैल 2006 के उस बयान का भी जिक्र किया। जिसमें पूर्व पीएण मनमोहन सिंह ने उस समय नक्सलवाद को देश के सामने अब तक की सबसे बड़ी चुनौती बताया था। जबकि मोदी सरकार ने 31 मार्च 2026 तक देश से नक्सलवाद की समस्या को खत्म किया है। चिदंबरम पर तंज कसते हुए त्रिवेदी ने कहा कि एक तरफ मोदी सरकार ने नक्सलवाद को खत्म किया तो वहीं दूसरी तरफ दुर्भाग्य से भारत के पूर्व गृह मंत्री को दिमागी नक्सल होने पर गर्व है। सुधांशु त्रिवेदी ने कांग्रेस से सवाल किया कि उन्हें यह स्पष्ट करना चाहिए वे पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की बात का समर्थन करते हैं या फिर अपने स्वघोषित दिमागी नक्सली की।

- **जिन्हें 'आतंकी हाफिज सईद' में हाफिज साहब नजर आता है, याकूब मेनन में 'ज्यूडिशियल किलिंग' नजर आती है, जिसे ओसामा में 'ओसामा जी' नजर आता है, जिसे जाकिर नाईक में 'शांति का मसीहा' नजर आता है, जिसे इशरत जहां में 'बेटी' नजर आती है, बुरहान वानी में 'भटका हुआ नौजवान' और भारत के सेना अध्यक्ष में 'सड़क छाप गुंडा' नजर आता है वो 'दिमागी नक्सल' है।**
- **15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस पर पीएम मोदी ने 'दिमागी नक्सल' का उल्लेख यूं ही नहीं किया था, इससे पहले 22 जनवरी 2024 को अमित शाह ने छत्तीसगढ़ में पुलिस और कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ बड़ी बैठक में कहा था कि वामपंथी उग्रवाद के समर्थकों 'अर्बन नक्सल' की पहचान कर उनकी फंडिंग पर चोट की जाए।**

नक्सलवाद के खात्मे का अभियान

15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'दिमागी नक्सल' का उल्लेख यूं ही नहीं किया था। इससे पहले 22 जनवरी 2024 को अमित शाह ने छत्तीसगढ़ में पुलिस और अन्य कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ बड़ी बैठक की थी। जिसमें एजेंसियां को निर्देश दिए थे कि वो वामपंथी उग्रवाद के समर्थकों 'अर्बन नक्सल' की पहचान कर उनकी फंडिंग की छानबीन करें। वामपंथी उग्रवाद के इकोसिस्टम पर अंतिम प्रहार करने और माओवादी फंडिंग को रोकने की रणनीति के तौर पर शाह ने यह कड़ा संदेश दिया था। छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार बनने से विभिन्न नक्सल विरोधी एजेंसियों के बीच समन्वय बेहतर बनाने के निर्देश भी दिए थे। ताकि समयबद्ध योजना बनाकर खतरों को जड़ से उखाड़ने के लिए तेजी से काम किया जा सके। अमित शाह ने कहा था कि देश के दुश्मन सिर्फ आतंकी, जिहादी और बंदूकधारी नक्सली ही नहीं हैं बल्कि इसे अंदर से खोखला करने का सपना देखने वाले अर्बन नक्सल यानी दिमागी नक्सली सबसे बड़ा खतरा हैं। सरकार, पुलिस और सेना आतंकियों, बंदूकधारी नक्सलियों से तो निपट लेती है, लेकिन 'बुद्धिजीवी' की खाल में छिपा अर्बन नक्सल देश विरोधियों की नई फौज तैयार कर लेता हैं। इसलिए देश में शांति और प्रगति की नींव मजबूत करनी है तो अर्बन नक्सलों की जमात का समूल विनाश करना ही होगा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इसी मकसद से कानून लागू करने वाली एजेंसियों से कहा था कि वो शहरी नक्सलियों की नाभि नाल पर चोट करें जो उनको देश के दुश्मनों से होने वाली फंडिंग है।

आध्यात्मिक केंद्र बन रहा उत्तराखंड

उत्तराखंड को विश्व की आध्यात्मिक राजधानी के रूप में स्थापित करने का संकल्प राज्य सरकार ने लिया है, इसके लिए प्रदेश के प्रमुख पौराणिक व प्राचीन धार्मिक पर्यटन स्थलों को पर्यटन सर्किट से जोड़ने, केदारखंड की तर्ज पर मानसखंड मंदिरमाला मिशन के तहत कुमाऊं के प्रमुख मंदिरों का विकास, तीर्थस्थलों में बुनियादी सुविधाएं, सड़कों एवं परिवहन सेवाओं के विस्तार के लिए काम किया जा रहा है।

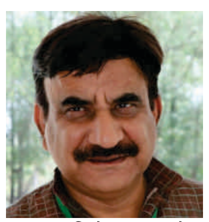

दिनेश मानसेरा
वरिष्ठ पत्रकार

देवभूमि उत्तराखंड दुनिया की आध्यात्मिक राजधानी बनने की दिशा में तेजी से कदम बढ़ा रहा है। प्रदेश में चारधाम के साथ ही अन्य प्रमुख धार्मिक स्थलों में दर्शन के लिए उमड़ रहा श्रद्धालुओं का सैलाब इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। राज्य सरकार का मानना है कि पीएम मोदी की धार्मिक यात्राओं के बाद से राज्य के देवालयों में श्रद्धालुओं की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। इस वर्ष की पहली छमाही में ही जागेश्वर धाम (अल्मोड़ा) और त्रियुगीनारायण (रुद्रप्रयाग) मंदिर में दर्शनार्थियों की संख्या ढाई गुना अधिक बढ़ी है। जबकि पूर्णागिरी धाम (चंपावत) में लगभग डेढ़ गुना और धारी देवी (श्रीनगर) में करीब दोगुना से ज्यादा बढ़ोत्तरी दर्ज हुई है। इसी तरह कैंची धाम (नैनीताल) में भी श्रद्धालुओं की संख्या तेजी से उछाला आया है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का कहना है कि उत्तराखंड को विश्व की आध्यात्मिक राजधानी के रूप में स्थापित करने का संकल्प राज्य सरकार ने लिया है। इसके लिए प्रदेश के प्रमुख पौराणिक व प्राचीन धार्मिक पर्यटन स्थलों को पर्यटन सर्किट से जोड़ने, केदारखंड की तर्ज पर मानसखंड मंदिरमाला मिशन के तहत कुमाऊं के प्रमुख मंदिरों का विकास, तीर्थस्थलों में बुनियादी सुविधाएं, सड़कों का विकास एवं परिवहन सेवाओं के विस्तार के लिए लगातार काम किया जा रहा है। सरकार की दूरदर्शिता और मजबूत प्रयासों का ही नतीजा है कि चारधाम यात्रा के साथ ही प्रदेश के अन्य प्रमुख मंदिरों और धार्मिक स्थलों में भी श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। चारधाम यात्रा नया रिकॉर्ड बना रही है। इस वर्ष 105 दिनों में 45 लाख 84 हजार 375 श्रद्धालुओं ने चारधाम यात्रा कर अपने आराध्य के दर्शन किए। उत्तराखंड पर्यटन विभाग के इस वर्ष की पहली छमाही (जनवरी 26 से जून 26) की रिपोर्ट के आकड़ों पर नजर दौड़ाएं तो जागेश्वर (अल्मोड़ा) में 1 लाख 74 हजार 119 श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचे हैं, जबकि बीते वर्ष 2025 में इसी अवधि में यह संख्या 67 हजार 875 थी। पूर्णागिरि धाम में इस वर्ष जून तक 20,91,788 श्रद्धालु पहुंचे हैं, जबकि बीते वर्ष इसी अवधि में 14,35,290 यात्रियों ने दर्शन किए थे। धारी देवी में दर्शनार्थियों की संख्या 5,42,626 रही है, जबकि वर्ष 2025 में यह आंकड़ा 2,83,275 था। रुद्रप्रयाग जिले में स्थित त्रियुगीनारायण मंदिर में भी श्रद्धालुओं की संख्या में खासी बढ़ोत्तरी हुई है। इस वर्ष पहली छमाही में यहां 3,40,385 श्रद्धालु पहुंचे हैं जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में भक्तों की संख्या 1,36,120 थी। टिहरी जिले के ऋषिकेश से सटी मुनि की रेती, तपोवन और शिवपुरी क्षेत्र पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। इस वर्ष जनवरी से जून तक 15,97,439 सैलानी यहां आ चुके हैं, जबकि बीते वर्ष यह आंकड़ा 13,62,600 था। इसी प्रकार रुद्रप्रयाग जिले में कार्तिक स्वामी मंदिर, टिहरी जिले में सुरकंडा देवी मंदिर नैनीताल के कैंची धाम में भी श्रद्धालुओं की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। कैंची धाम में श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या ने सभी पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। यहां इस वर्ष जनवरी से जून तक 24 लाख 34 हजार 507 यात्री बाबा श्री नींब करौरी महाराज के दर्शन के लिए पहुंचे। इनमें जून में सर्वाधिक 8 लाख, 66 हजार श्रद्धालुओं ने श्री नीब करौरी महाराज के दर्शन किए है। ये आंकड़े पर्यटन राज्य की सेहत के लिए बेहतरीन माने जा सकते हैं। क्योंकि जब पर्यटकों की आमद बढ़ती है तो न सिर्फ सरकार का खजाना भरता है बल्कि स्थानीय निवासियों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। जिससे पहाड़ों की खुशहाली रास्ता बनता है।

इस वर्ष जनवरी से जून तक 24 लाख 34 हजार 507 यात्री बाबा श्री नीब करौरी महाराज के दर्शन के लिए पहुंचे, इनमें जून में सर्वाधिक 8 लाख, 66 हजार श्रद्धालुओं ने श्री नीब करौरी महाराज के दर्शन किए है, ये आंकड़े पर्यटन राज्य की सेहत के लिए बेहतरीन माने जा सकते है, क्योंकि जब पर्यटकों की आमद बढ़ती है तो न सिर्फ सरकार का खजाना भरता है बल्कि स्थानीय निवासियों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होते हैं।

यमुनोत्री में टूटा पुराना रिकॉर्ड

उत्तरकाशी जिले में स्थित यमुनोत्री धाम की यात्रा कठिन होने के बावजूद यहां इस वर्ष श्रद्धालुओं की संख्या ने नया रिकॉर्ड बनाया है। इस यात्राकाल में दो अगस्त तक 6,54,958 यात्री मां यमुना जी के दर्शन कर चुके हैं। यमुनोत्री धाम के इतिहास में यह अब तक की सर्वाधिक संख्या है। इससे पूर्व 2025 में 6,44,637 तीर्थयात्री, यमुनोत्री धाम पहुंचे थे। जबकि 2024 में 5 लाख 15 हजार 067, और 2023 में 5 लाख 60 हजार 918, तथा 2022 में 6 लाख 21 हजार 504 तीर्थयात्री यमुनात्री धाम आए थे। बद्रीनाथ धाम यात्रा के 31 जुलाई को 100 दिन पूरे हुए थे। इस अवधि में 15 लाख 52 हजार 021 श्रद्धालु दर्शन कर चुके थे। जबकि बीते वर्ष इसी अवधि में 12 लाख 40 हजार 408 यात्रियों ने दर्शन किए थे। इस प्रकार बीते वर्ष के मुकाबले दर्शनार्थियों की संख्या 3 लाख 11 हजार 613 अधिक रही है। पिथौरागढ़ जनपद में स्थित श्री आदि कैलाश धाम में भी दर्शनार्थियों की संख्या में रिकार्ड वृद्धि हुई है। दो माह में ही 52,441 श्रद्धालु भोले के दरबार में शीश नवा चुके हैं। मानसून में प्राकृतिक आपदाओं की आशंका के कारण एक जुलाई से यात्रा को विराम दिया गया था। वर्ष 2023 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौरे के बाद श्री आदि कैलाश धाम में दर्शनार्थियों की संख्या में कई गुना वृद्धि हुई है। वर्ष 2022 से पहले यहां आने वाले यात्रियों की संख्या 2000 से भी कम थी। वर्ष 2023 से शिव भक्तों की संख्या लगातार बढ़ रही है। वर्षवार आंकड़ों पर गौर करें तो 2023 में 10,025। 2024 में 29,352 और 2025 में 36,526 यात्री श्री आदि कैलाश धाम अपने आराध्य शिव के दर्शन के लिए पहुंचे थे। इस वर्ष एक मई को श्री आदि कैलाश धाम यात्रा शुरू हुई थी और दो माह में ही 52,441 श्रद्धालु दर्शन कर चुके थे। देवभूमि उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में लगभग 1,319 मीटर की ऊंचाई पर स्थित गुप्तकाशी, संपूर्ण पंच केदार तीर्थयात्रा का वास्तविक केंद्र है। यहां पांचों तीर्थ मार्गों के भौगोलिक चौराहे पर केदारनाथ, मध्यमहेश्वर, तुंगनाथ, रुद्रनाथ और कल्पेश्वर मंदिर समान दूरी और सुलभ मार्ग पर है। ऋषिकेश से सोनप्रयाग (केदारनाथ धाम का आधार) तक की दूरी लगभग 200 किलोमीटर है, जो अच्छे मौसम में भी 6 से 7 घंटे का सफर है। वहीं गुप्तकाशी से सोनप्रयाग तक की यही दूरी 72 किलोमीटर है और इसमें 2.5 घंटे से भी कम समय लगता है।

वाराणसी है आध्यात्मिक राजधानी

उत्तर प्रदेश वाराणसी जिसे काशी या बनारस भी कहा जाता है। वाराणसी पवित्र गंगा नदी के तट पर स्थित एक प्राचीन शहर है। इसे भारत की आध्यात्मिक राजधानी का गौरव प्राप्त है। वाराणसी का इतिहास 3,000 वर्ष से भी अधिक पुराना बताया जाता है, जो इसे विश्व के सबसे पुराने निरंतर बसे शहरों में से एक बनाता है। यह पवित्र शहर हिंदुओं के लिए एक पूजनीय तीर्थस्थल और गहन आध्यात्मिक महत्व का स्थान है। वाराणसी नाम दो नदियों, वरुणा और असि के संगम से लिया गया है, जो यहां गंगा में मिलती हैं। शहर का आध्यात्मिक वातावरण, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और गंगा के किनारे स्थित अनगिनत मंदिर, आश्रम और पवित्र घाट इसे भक्ति, ध्यान और ज्ञान प्राप्ति का अद्वितीय केंद्र बनाते हैं। यानी अभी तक वाराणसी को आध्यात्म का केंद्र माना जाता था, लेकिन अब उत्तराखंड भी आध्यात्म की राजधानी बनने की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। वाराणसी तो सिर्फ एक शहर है, लेकिन उत्तराखंड के तो कण-कण में देवी देवताओं का वास है। इसलिए दिव्यता की खोज करने वालों के लिए उत्तराखंड दिव्य मार्ग पर चलने की पूरी प्रक्रिया को संग्रहित करता है। उत्तराखंड भारत के कुछ सबसे पवित्र स्थलों का घर भी है। इसके अलावा यह कई ऐसे अनजानी जगहों से भी घिरा है, जिनकी सदियों पुरानी उत्पत्ति के साथ अद्भुत शक्ति का विशेष महत्व है। इसलिए उत्तराखंड में छिपे हुए कुछ ऐसे ही रोचक आध्यात्मिक खजानों को पेश करती एक डॉक्यूमेंट्री बनाई गई है। दिलीप ताहिल की आवाज में बनी डॉक्यूमेंट्री स्पिरिचुअल ट्रेजर्स ऑफ उत्तराखंड, देवभूमि की अनूठी सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानने का अवसर देती है। डॉक्यूमेंट्री उत्तराखंड में कुछ गुमनाम दिव्य स्थल और उनके समृद्ध इतिहास का स्पष्ट रूप से चित्रण करती है। इस डॉक्यूमेंट्री में ऋषिकेश के पास कुंजापुरी मंदिर की गूंजती शक्ति जो एक स्थिर दिल की धड़कन की तरह पहाड़ों के माध्यम से गूंजती है, पूर्णागिरि का पवित्र निवास जहां सांसारिक चिंताएं हवा में विलीन हो जाती हैं और दिव्यता के मार्ग को रोशन करने वाले पवित्र प्रकाश स्तंभ के रूप में काम करती हाट कालिका मंदिर की दिव्य ज्वालाओं के बारे में विस्तार से उल्लेख करती है।

अभी तक वाराणसी को आध्यात्म का केंद्र माना जाता था, लेकिन अब उत्तराखंड भी आध्यात्म की राजधानी बनने की तरफ तेजी से बढ़ रहा है, वाराणसी तो सिर्फ एक शहर है, लेकिन उत्तराखंड के तो कण-कण में देवी देवताओं का वास है, इसलिए दिव्यता की खोज करने वालों के लिए उत्तराखंड दिव्य मार्ग पर चलने की पूरी प्रक्रिया को संग्रहित करता है।

आध्यात्मिक यात्रा पर डॉक्यूमेंट्री

श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक यात्रा में आगे ले जाते हुए, यह डॉक्यूमेंट्री अल्मोड़ा में गोल्जू देवता मंदिर के साधकों को आशीर्वाद और न्याय प्रदान करने के महत्व को बताती है। साथ ही पाताल भुवनेश्वर मंदिर की आश्चर्यजनक चट्टान संरचनाओं और भूमिगत धाराओं की स्वर्ग समान अलौकिकता और रुद्रप्रयाग के कार्तिक स्वामी मंदिर का महत्व समझाती है जहां ठंडी पहाड़ी हवाएं शांति की गहन भावना में समा जाती है। देवभूमि आध्यात्मिक ऊर्जा, प्रकृति की भव्यता और मानव प्रतिभा के शानदार संगम की गवाह है। जैसा कि कैंची धाम को एक दिव्य स्थान के रूप में देखा जा सकता है, जो नीब करौरी बाबा को समर्पित है। कटारमल सूर्य मंदिर अल्मोड़ा जिले के अधेली सुनार गांव में स्थित एक ऐतिहासिक और प्राचीन सूर्य मंदिर है। इसका निर्माण 9वीं शताब्दी में कत्यूरी राजवंश के राजा कटारमल द्वारा कराया गया था। समुद्र तल से लगभग 2,116 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह मंदिर अपनी भव्यता और अद्भुत वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। कटारमल मंदिर पहुंच कर लगता है जैसे समय थम गया हो। विशाल देवदार के पेड़ों के बीच प्राचीन मंदिरों से घिरा जागेश्वर धाम अल्मोड़ा जिले में 125 प्राचीन शिव मंदिरों का एक भव्य समूह है। यह पवित्र स्थल देवदार के घने जंगलों और जटा गंगा नदी के किनारे बसा हुआ है, जिसे भगवान शिव की तपस्थली और एक प्रमुख आध्यात्मिक केंद्र माना जाता है। डॉक्यूमेंट्री फिल्म में श्री आदि कैलाश और ओम पर्वत के पवित्र स्थलों का चित्रण भी किया गया है। कैलाश पर्वत के समान आदि कैलाश और पर्वत का स्वाभाविक रूप से निर्मित ओम प्रतीक एक आध्यात्मिक शक्ति रखता है जो साधकों को अपनी ओर आकर्षित करता है, जिससे वे इन दिव्य अभिव्यक्तियों की रहस्यमय भव्यता से मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। डॉक्यूमेंट्री में उत्तराखंड सरकार में पर्यटन व संस्कृति मंत्री सतपाल महाराज कहते नजर आते हैं कि दुनिया में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए भारत में आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ावा देने की सख्त आवश्यकता है। डॉक्यूमेंट्री के साथ अपने जुड़ाव के बारे में बात करते हुए, दलीप ताहिल ने कहा है कि डिवाइन ट्रेल्स पर काम करना मेरे लिए बेहद अच्छा अनुभव रहा है। मैं सभी से आग्रह करता हूं कि वे यह डॉक्यूमेंट्री देखें, जिसे हमने इस उम्मीद में बनाया है कि यह उनकी आध्यात्मिक यात्रा का मार्ग आनंदमय करेगी।

2027 में होगा सैफई महोत्सव?

जब से सत्ता गई है सैफई महोत्सव के लिए यादव फैमिली तरस गई है, 2016 के बाद सैफई में न तो बॉलीवुड नाइट हुई, न ही हेलिकॉप्टर चक्कर काट रहे हैं, न ही हवाई पट्टी पर प्लेन उतर रहे हैं, हालांकि सीएम योगी आदित्यनाथ ने सैफई महोत्सव पर कोई रोक नहीं लगाई है, फिर भी अखिलेश यादव सैफई महोत्सव क्यों नहीं कर रहे ये सवाल यूपी की जनता के मन में है।

कृष्ण कुमार चौहान

उत्तर प्रदेश में 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव में जीत के लिए भाजपा और समाजवादी पार्टी के साथ कांग्रेस तथा बसपा ने होमवर्क शुरू कर दिया है। सपा प्रदेश की सभी 403 सीटों पर माइक्रो मैपिंग कर रही है। तो उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश के सभी जिलों में मौजूदगी दर्ज कराकर फीड बैक ले लिया है। सपा और कांग्रेस में सीट बंटवारे को लेकर स्थिति अभी तक स्पष्ट नहीं है। हालांकि सपा हर जिले में कांग्रेस को एक सीट यानी 75 से 80 सीटें देने के मूड में हैं, लेकिन कांग्रेस नेता हर जिले में दो सीटों के हिसाब से 150 सीटें मांग रहे हैं, वैसे कांग्रेस को भी नहीं लगता कि उसे 150 सीटें मिलेंगी या नहीं? फिर भी सपा प्रमुख अखिलेश यादव पर प्रेशर बनाने की राजनीति तो हो ही रही है। सपा चाहती है कि जो सीट वो कभी नहीं जीती वो कांग्रेस को थमा दी जाए। इससे सपा की सेहत पर कोई असर भी नहीं पड़ेगा। यही फार्मूला अखिलेश यादव ने 2022 में भी लागू किया था। जब कांग्रेस को भाजपा के प्रभाव वाली सीटें दे दी थी और कांग्रेस सिर्फ दो सीटों पर सिमट कर रह गई थी। अखिलेश यादव के लिए यह चुनाव वैसे भी करो या मरो के लिए है। क्योंकि 2027 के विधानसभा चुनाव में सपा को हार मिली तो अखिलेश यादव के नेतृत्व पर सवाल उठने लगेंगे। वैसे भी अखिलेश यादव ने 2017 में सत्ता गवांने के बाद से कोई करिश्मा नहीं दिखाया है। अपने खुद के दम वो 2017 और 2022 का चुनाव नहीं जीत पाए। अखिलेश यादव को राजनीति विरासत में मिली है, बिना कोई मेहनत किए यूपी की बड़ी पार्टी के वो मुखिया बन गए। इसलिए राजनीति करने का उनका वो अनुभव नहीं है जो एक जमीन से जुड़े नेता का होता है। अखिलेश यादव को लग रहा है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में उनका पीडीए काम कर गया और रिकार्ड 37 सांसद जिता लिए थे, इसलिए उनके सिर पर पीडीए का फोबिया सवार है। हालांकि वो पीडीए की परिभाषा बदलते रहते हैं। फिलहाल पीडीए से पिछड़ों को बाहर कर नई परिभाषा के तहत पी से पंडित हो गया है। यानी सपा पंडितों पर डोरे डाल रही है। तो क्या इससे पिछड़े जिसमें यादव समाज भी आता है उनका वोट अखिलेश को नहीं चाहिए? भाजपा उनके पीडीए की अलग ही तरह से परिभाषित करती है। यानी पी-परिवार, डी-डिम्पल और ए-अखिलेश। यानी पीडीए का मतलब परिवार के इर्द गिर्द ही रहना है।

पारिवारिक क्लेश

2012 के चुनाव में यूपी की जनता ने मुलायम सिंह यादव और शिवपाल यादव के चेहरे पर वोट दिया था। इस चुनाव में अखिलेश का न तो वजूद था और न ही कोई बहुत योगदान था। किंतु मुलायम सिंह यादव ने शिवपाल सिंह को धोखा दिया और अपने बेटे अखिलेश यादव को यूपी का सीएम बना दिया। इसके बाद अखिलेश ने न सिर्फ चाचा शिवपाल सिंह को अपमानित किया बल्कि पार्टी को हाईजैक कर पिता मुलायम सिंह को भी अपमानित करने का काम किया। जिस शिवपाल यादव ने समाजवादी पार्टी को अपने खून पसीने से सींचा था उसी पार्टी में वो दोयम दर्जे के नेता बन गए। जिस सपा में शिवपाल यादव की तूती बोलती थी उसमें वो यूपी विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष का ओहदा भी हासिल नहीं कर पाए। सांसद बनने के बाद अखिलेश यादव दिल्ली की राजनीति में चले गए और यूपी विधानसभा में माता प्रसाद पांडेय को नेता प्रतिपक्ष बनाकर एक बार फिर चाचा शिवपाल यादव को लज्जित कर दिया। हालांकि अपमानित होने पर शिवपाल यादव ने अपनी अलग पार्टी भी बनाई, लेकिन उन्हें लगा कि अलग पार्टी बनाकर अखिलेश से अपमान का बदला नहीं लिया जा सकता। शिवपाल यादव ने भाजपा में शामिल होने की कोशिश भी की, लेकिन उन्हें सपा में रहकर सपा को कमजोर करने का मिशन दे दिया गया। इससे समझा जा सकता है कि राजनीति में घर का भेदी लंका कैसे ढाहता है। शायद इसलिए शिवपाल यादव फिर से समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए। ऐसे में सवाल है कि क्या अब चाचा भीतरघात कर अखिलेश को सत्ता से बाहर रखने का काम कर रहे हैं?

कन्नौज में एक ब्राह्मण डॉक्टर को सरेआम फटकार लगाकर अपमानित करने वाले अखिलेश यादव के कुछ बयान याद आ रहे हैं-ब्राह्मणों की कोई मदद न करें..., मैं पूजा नहीं करता..अरे मिश्रा जी कुछ तो शर्म करो...इससे भी बड़ी बेशर्मी सपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजकुमार भाटी ब्राह्मणों को वैश्या से भी खराब बताते हैं और अखिलेश भाटी की पीठ थपथपाते हैं।

सैफई महोत्सव पर ब्रेक?

जब-जब समाजवादी पार्टी सत्ता में रही जनता के पैसे से सैफई महोत्सव के नाम पर करोड़ों रुपये नाचने गाने वाले अभिनेता और अभिनेत्रियों पर उड़ा दिए जाते थे, लेकिन 2017 में जब से योगी आदित्यनाथ की सरकार यूपी में आई है तब से लेकर 10 साल हो गए सैफई महोत्सव नहीं हुआ। न ही सैफई महोत्सव में दिए जाने वाला कोई सम्मान किसी को दिया गया। सपा के शासनकाल में सैफई महोत्सव में हर दिन सेलिब्रिटी और वीवीआईपी आते थे। समापन पर बॉलीवुड नाइट में विदेशी मेहमानों के साथ बॉलीवुड के स्टार सलमान खान, माधुरी दीक्षित, रनबीर सिंह और मल्लिका शेरावत, अमिताभ बच्चन, जैसे टॉप के स्टार बुलाए जाते थे। बॉलीवुड नाइट की सुरक्षा के लिए कई जिलों से पुलिस फोर्स को बुलाया जाता था। पंडाल की सुरक्षा में आठ कंपनी पैरामिलिट्री फोर्स लगती थी। एक कंपनी में 132 जवान के हिसाब से 1055 जवानों के वेतन, टीए और डीए का खर्च जनता उठाती थी और मौज यादव परिवार करता था। 400 से अधिक सीओ व एसडीएम से लेकर आईजी स्तर तक के अधिकारियों के अलावा 1000 वीवीआईपी के लिए की जाने वाली व्यवस्था व मुंबई से बुलाए जाने वाले कलाकारों का मेहनताना, करोड़ों रुपये का स्टेज और अन्य खर्च मिलाया जाए तो सिर्फ बॉलीवुड नाइट पर ही 100 करोड़ से ज्यादा खर्च कर दिया जाता था। फिल्मी कलाकारों को लेकर आने वाले एयर प्लेन हवाई पट्टी पर उतारे जाते थे। इनके ईंधन व किराये पर ही सौ करोड़ से ऊपर का खर्च हो जाता था। इसके अलावा मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, सपा मुखिया मुलायम सिंह यादव, तत्कालीन लोक निर्माण मंत्री शिवपाल यादव व अन्य वीवीआईपी को लेकर आने वाले हेलिकॉप्टर सैफई व इटावा में ऐसे उतरते थे जैसे किसी शादी में कारें आकर पार्किंग में खड़ी हो रही हों। लेकिन जब से सत्ता गई है सैफई महोत्सव के लिए यादव फैमिली तरस गई है। 2016 के बाद सैफई में न तो बॉलीवुड नाइट हुई, न ही हेलिकॉप्टर चक्कर काट रहे हैं और न ही हवाई पट्टी पर प्लेन उतर रहे हैं। हालांकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सैफई महोत्सव पर किसी तरह की कोई रोक नहीं लगाई है, फिर भी अखिलेश यादव सैफई महोत्सव क्यों नहीं कर रहे ये सवाल यूपी की जनता के मन में है। जनता जानती है कि सत्ता में रहकर इस तरह की फिजूल खर्ची और मौज मस्ती की जा सकती है। जनता के धन को हवा में उड़ाया जा सकता है, लेकिन सत्ता के बाहर रहकर ये सब मुमकिन नहीं है। अब सवाल ये है कि क्या 2027 में सैफई महोत्सव होगा? क्या सपा के अच्छे दिन आने वाले हैं?

पंडितों पर डोरे डाल रहे अखिलेश

कन्नौज में एक ब्राह्मण डॉक्टर को सरेआम फटकार लगाकर अपमानित करने वाले अखिलेश यादव के कुछ बयान याद आ रहे हैं-ब्राह्मणों की कोई मदद न करें..., मैं पूजा नहीं करता...जिन्ना ने भारत की आजादी में योगदान दिया...अरे मिश्रा जी कुछ तो शर्म करो...गाय के गोबर से दुर्गंध आती है... पहलगाम हमले में मारे गए कानपुर के शुभम द्विवेदी के परिवार के घर जाने के सवाल पर अखिलेश ने कहा था कि इस परिवार से मेरा कोई संबंध नहीं है। इससे भी बड़ी बेशर्मी सपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजकुमार भाटी ब्राह्मणों को वैश्या से भी खराब बताते हैं और अखिलेश यादव राजुकमार भाटी की पीठ थपथपाते हैं। यही अखिलेश यादव अब ब्राह्मणों पर डोरे डालने की कोशिश कर रहे हैं। दरअसल देश की आजादी के बाद से लंबे समय तक यूपी में कांग्रेस का मजबूत सामाजिक आधार ब्राह्मण, दलित और मुस्लिम समुदाय को माना जाता था। कमलापति त्रिपाठी, हेमवती नंदन बहुगुणा, नारायण दत्त तिवारी से लेकर श्रीपति मिश्र जैसे कई बड़े ब्राह्मण चेहरे कांग्रेस की पहचान थे। हालांकि 1990 के दशक में मंडल और कमंडल की राजनीति ने प्रदेश की तस्वीर बदल दी। इसके बाद राम मंदिर आंदोलन के बाद बड़ी संख्या में ब्राह्मण वोटर भाजपा के साथ चला गया। अटल बिहारी वाजपेयी, मुरली मनोहर जोशी व कलराज मिश्र जैसे नेताओं ने ब्राह्मण समाज में पार्टी की मजबूत पकड़ बनाई। 2014 के बाद पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने गैर-यादव ओबीसी, गैर-जाटव दलित और सवर्ण मतदाताओं का बहुत बड़ा गठबंधन तैयार किया। इसमें ब्राह्मण समाज सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ बनकर उभरा। इसका भाजपा को चुनाव में फायदा भी मिला। लोकसभा चुनाव 2014 में भाजपा को यूपी में 72 फीसदी ब्राह्मण वोट मिला था। समाजवादी पार्टी और बसपा को 5-5 परसेंट और कांग्रेस को 11 फीसदी ब्राह्मण वोट मिला। 2017 यूपी विधानसभा चुनाव में भाजपा को 83 फीसदी ब्राह्मण वोट मिला। जबकि सपा को 7 प्रतिशत, बसपा को दो फीसदी और कांग्रेस को एक फीसदी ब्राह्मण वोट मिला था। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को 84 फीसदी ब्राह्मण वोट मिला। जबकि सपा और बसपा एक साथ लड़े तो भी इस गठबंधन के साथ ही कांग्रेस को 6-6 फीसदी ब्राह्मण वोट मिला। 2022 के यूपी विधानसभा चुनाव में भाजपा को 89 फीसदी ब्राह्मण वोट मिला था। जबकि सपा को 6 फीसदी वोट मिला। बसपा और कांग्रेस खिसक कर एक-एक फीसदी पर पहुंच गई थी। 2024 के लोकसभा चुनाव में एनडीए को 79 फीसदी ब्राह्मण वोट मिला। जबकि इंडिया गठबंधन को 16 फीसदी ब्राह्मण वोट मिला। इन आकंड़ों पर अखिलेश यादव गौर करेंगे तो पाएंगे कि यूपी का ब्राह्मण वोट भाजपा के साथ चुंबक की तरह चिपका हुआ है। 2014 से 2024 के बीच हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस और सपा मिलकर ब्राह्मण वोट का 16 फीसदी हिस्सा ही हासिल कर पाए हैं। हालांकि अखिलेश यादव को लगता है कि सवर्णों के सबसे बड़े ब्राह्मण वोट बैंक में सैंध लगाई जाए तो भाजपा कुछ वोट टूटेगा और सपा का वोट बढ़ेगा। इसे ध्यान में रखते हुए अखिलेश यादव ने जनेश्वर मिश्र की जयंती पर कहा की पीडीए में पी का मतलब पीड़ित पंडित है। उन्होंने पी का मतलब पिछड़ा बताने से परहेज किया। इससे सवाल उठ रहा है कि क्या अखिलेश को पिछड़ों पर भरोसा नहीं रहा है? खैर 2024 के लोकसभा चुनाव में फैजाबाद सीट जीतने से गदगद अखिलेश यादव ने अयोध्या सीट से पवन पांडेय को अपना प्रत्याशी घोषित कर दिया है। जो अखिलेश यादव ने पीडीए का मतलब पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक बताकर गर्व करते थे वो अब पीडीए की नई परिभाषा बताते हुए कह रहे हैं कि पी का मतलब पीड़ित पंडित है। यूपी में भले ही ब्राह्मणों की आबादी 12 फीसदी हो लेकिन इनका सत्ता में दखल का लंबा इतिहास रहा है। इस प्रदेश में 6 ब्राह्मण मुख्यमंत्री बन चुके हैं। यूपी में ब्राह्मण किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है बल्कि पूर्वांचल, अवध, बुंदेलखंड, पश्चिमी यूपी से लेकर मध्य यूपी तक लगभग हर क्षेत्र में ब्राह्मण जाति की उल्लेखनीय मौजूदगी है। राजनीतिक विश्लेषकों मानते है कि यूपी की 403 विधानसभा सीटों में से लगभग 60 विधानसभा सीटों पर ब्राह्मण मतदाता सीधे तौर पर चुनावी नतीजों को प्रभावित करने की स्थिति में हैं जबकि 100 से अधिक सीटों पर ब्राह्मण मतदाता भले ही संख्या में ज्यादा न हों लेकिन मुखर होने के कारण सियासी माहौल बनाने व बिगाड़ने का माद्दा रखते हैं। इसलिए अखिलेश की नजर ब्राह्मण वोट पर है। ●

शिवपाल यादव ने भाजपा में शामिल होने की कोशिश की, लेकिन उन्हें सपा में रहकर सपा को कमजोर करने का मिशन दे दिया गया, इससे समझा जा सकता है कि राजनीति में घर का भेदी लंका कैसे ढाहता है, शायद इसलिए शिवपाल यादव फिर से समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए, अब सवाल ये है कि क्या चाचा भीतरघात कर अखिलेश को सत्ता से बाहर रखने का काम कर रहे हैं?

कांग्रेस की अग्निपरीक्षा

2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस 11 और 2022 के विधानसभा चुनाव में 19 सीटों पर सिमट जाने के बाद पार्टी का मनोबल ही नहीं, कार्यकर्ताओं व परंपरागत वोट बैंक का विश्वास भी बुरी तरह डगमगा गया है, पहाड़ी राज्य के हर नुक्कड़ हर चौराहे पर चर्चा यही है कि इस बार कांग्रेस का क्या होगा? सीएम चेहरा कौन होगा?

आदित्य पंत
हल्द्वानी

राजनीति में जब भी किसी पार्टी या इंसान पर हार का साया मंडराने लगता है तो निराशा की धुंध सबसे पहले उसी के घर में उतरती है। चारों ओर नकारात्मकता इस कदर हावी हो जाती है कि जीत की छोटी-छोटी किरणें भी हार के अंधेरे में गुम सी लगने लगती हैं। ठीक यही हाल आज उत्तराखंड समेत अधिकांश राज्यों में कांग्रेस का है। अब जब उत्तराखंड में चुनाव सिर पर है तो कांग्रेस चुनाव से पहले संगठन को मजबूत करना चाहती है। क्योंकि 10 साल से सत्ता से बाहर होने के कारण कांग्रेस के कार्यकर्ताओं में हताशा और निराशा की झलक साफ दिखाई दे रही है। नेताओं और कार्यकर्ताओं में वो मनोबल नहीं रहा है जो 10 साल पहले देखने को मिलता था। वैसे भी निराशा की धुंध एक ऐसी मानसिक स्थिति है जहां जीवन में उम्मीदें धुंधली और भविष्य अंधकारमय लगने लगता है। यह एक गहरे कोहरे की तरह इंसान को घेर लेता है, जिससे प्रेरणा और ऊर्जा खत्म होने लगती है। लगातार हार देखते रहने से डिप्रेशन की स्थिति भी बन जाती है। भाजपा के बढ़ते प्रभाव के कारण विपक्ष की भाषा हताशा और निराशा को ही दर्शाती है। कांग्रेस वो पार्टी है जिसने देवभूमि उत्तराखंड को 'धर्मशाला' बनाने की राजनीति की है। कांग्रेस के शासनकाल में उत्तराखंड की डेमोग्राफी में बड़ा बदलाव हुआ। जिससे उत्तराखंड में लैंड जिहाद और लव जिहाद की घटनाएं बढ़ी है। धर्मान्तरण कराने वाले गैंग सक्रिय हुए। इसके विपरीत कांग्रेस ने वोट बैंक की खातिर जो पाप किए उन्हें पुष्कर सिंह धामी सरकार धो रही है। लैंड जिहाद करने वालों पर बड़ी कार्रवाई हुई और 600 के करीब मजारे ध्वस्त कर दी गई। सरकारी जमीन को अतिक्रमण से मुक्त कराया गया। अवैध मदरसों पर ताला ठोक दिया गया। हल्द्वानी के बनभूलपुरा पर अतिक्रमण विरोधी अभियान का खतरा बरकरार है। कभी भी सुप्रीम कोर्ट का एक आदेश हल्द्वानी के मुस्लिम बाहुल क्षेत्र को समतल बना सकता है। हालांकि हल्द्वानी के कांग्रेस विधायक सुमित हृदयेश ने सुप्रीम कोर्ट में मुस्लिम वोट बैंक की पैरवी में कोई कसर नहीं छोड़ी है, फिर भी खतरा टला नहीं है। इसलिए कांग्रेसी वोट में भी हताशा और निराशा है। यदि 2027 के चुनाव में कांग्रेस सरकार बनाने में नाकाम रहती है तो कांग्रेस का अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है।

कांग्रेस का कोई चेहरा होगा ?

उत्तराखंड में चुनावी सरगर्मी बढ़ गई है। उत्तराखंड की बात करें तो 2017 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस 11 और 2022 के विधानसभा चुनाव में सिर्फ 19 सीटों पर सिमट जाने के बाद कांग्रेस का मनोबल ही नहीं, कार्यकर्ताओं व परंपरागत वोट बैंक का विश्वास भी बुरी तरह डगमगा गया है। पहाड़ी राज्य के हर नुक्कड़ हर चौराहे पर चर्चा यही है कि इस बार कांग्रेस का क्या होगा? और हर चेहरे पर वही पुराना सवाल तैरता है, आखिर कांग्रेस का चेहरा कौन होगा? खैर उत्तराखंड में निर्धारित समय से पहले चुनाव नहीं हुए तो मानकर चलिए फरवरी 2027 में देवभूमि में चुनावी रण होगा। भाजपा ने लगभग साफ कर दिया है कि विधानसभा चुनाव में उसका चेहरा मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ही होंगे। ऐसे में सवाल पैदा होता है कि कांग्रेस का सीएम चेहरा कौन होगा? क्या यशपाल आर्य, गणेश गोदियाल, हरीश रावत, प्रीतम सिंह, करण महरा, हरक सिंह रावत में से किसी एक को सीएम चेहरा बनाया जाएगा? इनमें से किसी एक को सीएम चेहरा बनाया जाता है तो निश्चित मान लीजिए उत्तराखंड में भाजपा को सत्ता में आने से कोई नहीं रोक सकता। इसलिए कांग्रेस ने अभी से कहना शुरू कर दिया है कि वो बिना दूल्हे के बारात चढ़ाएगी। यानी कांग्रेस 2027 का उत्तराखंड विधानसभा चुनाव सामूहिक नेतृत्व में और सामूहिक एकजुटता के साथ लड़ेगी, सीएम चेहरा कोई नहीं होगा। क्योंकि उसे भी पता है कि सीएम चेहरा घोषित करने से परिणाम क्या आएगा? इसलिए कांग्रेस मुख्यमंत्री के चेहरे की आधिकारिक घोषणा करने की हिम्मत नहीं कर पा रही है।

हल्द्वानी के बनभूलपुरा पर अतिक्रमण विरोधी अभियान का खतरा बरकरार है, कभी भी सुप्रीम कोर्ट का एक आदेश हल्द्वानी के मुस्लिम बाहुल क्षेत्र को समतल बना सकता है, हालांकि हल्द्वानी के कांग्रेस विधायक सुमित हृदयेश ने सुप्रीम कोर्ट में मुस्लिम वोट बैंक की पैरवी में कोई कसर नहीं छोड़ी है, फिर भी खतरा टला नहीं है, इसलिए कांग्रेसी वोट में भी हताशा और निराशा है।

हरीश रावत चुनावी राजनीति में कहां हैं?

उत्तराखंड की सत्ता में वापसी का सपना देख रही कांग्रेस किस चेहरे के साथ चुनाव लड़ेगी, यही तय नहीं हो पा रहा। प्रदेश स्तर के नेताओं की बात करें तो हरीश रावत पूर्व मुख्यमंत्री और वरिष्ठ राष्ट्रीय नेता हैं और राज्य में सबसे बड़ा जनाधार भी उनका ही है, दिल्ली में भी मजबूत पकड़ है। लेकिन वह इस समय स्वास्थ्य कारणों के चलते चुनावी बैठकों और दौरों से दूर हैं। लिहाजा इस बार उनका चेहरा आगे किया जाएगा इस पर भी असमंजस के बादल छाये हुए हैं। गणेश गोदियाल की बात करें तो प्रदेश संगठन में प्रमुख नेतृत्व और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष हैं। लंबे समय से उत्तराखंड में कांग्रेस की राजनीति में सक्रिय हैं। इनके अलावा करण महरा जो प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष है और पार्टी की रणनीति तथा संचालन में सक्रिय भूमिका में हैं। यशपाल आर्य जो वरिष्ठ और दलित चेहरे के साथ विधायक हैं। इनका कुमाऊं क्षेत्र में व्यापक प्रभाव भी है। दलित वोट और पूर्व मंत्री का अनुभव उनके पास है। चकराता से विधायक और पूर्व नेता प्रतिपक्ष प्रीतम सिंह भी सीएम पद की दौड़ में पीछे नहीं हैं। मजबूत गढ़ और जमीनी पकड़ उनकी भी ठीक-ठाक है। इनके अलावा प्रदेश में कई और दावेदार भी लाइन में हैं जो खुद को चेहरा मानकर चल रहे हैं। नतीजा ये है कि कार्यकर्ता असमंजस में है। सिपाही लड़ने को तैयार हैं पर उन्हें पता ही नहीं कि उनका सेनापति कौन होगा? जब तक कांग्रेस ये साफ नहीं करेगी कि नैया किसके सहारे पार लगेगी, तब तक कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के गुरु मंत्र हवा में ही तैरते रहेंगे। चुनाव में चेहरा ही वोट खींचता है, और अभी कांग्रेस का चेहरा आईने में नहीं, अटकलों में दिख रहा है। आखिर चेहरा किसका होगा, गोदियाल का, यशपाल आर्य का या कोई और चौंकाने वाला नाम आएगा? यही सवाल आज कांग्रेस के हर कार्यकर्ता की जुबान पर है।

खड़गे का उत्तराखंड में प्रभाव?

विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की दो हार के बाद अब तीसरा विधानसभा चुनाव दरवाजे पर दस्तक दे रहा है, इसलिए यह चुनाव कांग्रेस के अस्तित्व की लड़ाई बन चुका है। पिछली बार महज 19 सीटों पर सिमट कर पार्टी जिस राजनीतिक कोने में पहुंच गई थी, उस जख्म को भरना आसान नहीं है। सबसे बड़ी चुनौती अब सीटें बढ़ाने की नहीं, बल्कि जनता का टूटा हुआ भरोसा और विश्वास वापस पाने की है। इसी कड़ी में 8 अगस्त 2026 को कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने हल्द्वानी में विजय शंखनाद रैली को संबोधित किया। कांग्रेसियों ने रैली में भीड़ तो जुटाई, नारेबाजी भी हुई, लेकिन सवाल वही है क्या मंच से गूंजे नारे, रामलीला मैदान में जुटी भीड़ जमीन पर वोट में बदल पाएंगे? क्या खड़गे की रैली से कांग्रेस को कोई ऑक्सीजन मिलेगी, क्या खड़गे का उत्तराखंड में कोई राजनीतिक प्रभाव है? सिवाए इसके कि वो कांग्रेस के अध्यक्ष है, जो उनका भाषण सुनने के बाद लोगों को मन बदलेगा। मुझे नहीं लगता कि खड़गे के हल्द्वानी आने से कांग्रेस को कोई चुनावी फायदा होने वाला है। कांग्रेस को यदि गंभीरता से चुनाव लड़ना है तो पहले संगठन में जान फूंकनी होगी, चेहरे बदलने होंगे और सबसे जरूरी, उस आम आदमी तक पहुंचना होगा जो आज कांग्रेस को विकल्प के बजाय विवशता मान बैठा है। अगर इस बार भी चूक हुई तो उत्तराखंड में कांग्रेस सिर्फ एक पार्टी नहीं, एक पुरानी याद बनकर रह जाएगी। खैर कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का कुमाऊं दौरा खत्म हो गया, नेताओं को कई टिप्स भी मिल गए, लेकिन पार्टी के भीतर के हाल चाल अभी भी विश्वास के योग्य नजर नहीं आ रहे है। दौरे के बाद हलचल तो हुई, मंच पर जोश भी दिखा, लेकिन धरातल पर तस्वीर अब तक धुंधली ही है और इस धुंध का सबसे बड़ा कारण है चेहरा। 2027 विधानसभा चुनाव में आखिरकार कांग्रेस के किस चेहरे को जनता वोट दे।

कांग्रेस कार्यकर्ता असमंजस में है, सिपाही लड़ने को तैयार हैं पर उसे पता ही नहीं कि उनका सेनापति कौन होगा? जब तक कांग्रेस ये साफ नहीं करेगी कि कांग्रेस नैया किसके सहारे पार लगेगी, तब तक कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के गुरु मंत्र भी हवा में ही तैरते रहेंगे।

रैली को फ्लॉप करने का आरोप

कांग्रेस पार्टी को इस बात पर भी गंभीरता से विचार करना होगा कि राजनीति में शोर से ज्यादा असर शालीनता में होता है। मल्लिकार्जुन खड़गे के हल्द्वानी पहुंचने से पहले कांग्रेस के नेताओं ने भाजपा और पुलिस पर उनके कार्यकर्ताओं की बसों को रोकने का आरोप लगाते हुए एसएसपी आफिस में जो हंगामा किया उससे कहीं न कहीं पार्टी की छवि धूमिल हुई। इस हंगामा में कांग्रेस के बड़े चेहरे नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल, हल्द्वानी विधायक सुमित ह्रयदेश सहित कई विधायक शामिल थे। इन नेताओं का कहना था कि भाजपा और प्रशासन द्वारा मिलकर कांग्रेस की विजय शंखनाद रैली को फ्लॉप करने की कोशिश की जा रही है। इस तरह के आरोप सामान्य होते हैं। क्योंकि जब उम्मीद के मुताबित भीड़ नहीं आती तो इस तरह का नाटक करना ही पड़ता है। हालांकि इस तरह के हंगामे से आम लोगों में एक अजीब सा संदेश गया, जिसका असर पार्टी की छवि पर भी जरूर पड़ा होगा। अगर कांग्रेस नेता शांतिपूर्वक बैठकर प्रशासन के सामने अपनी इस बात को रखते तो शायद आम आदमी की सहानुभूति भी उनके साथ होती, लेकिन जब आंदोलन का तरीका ही टकराव बन जाए तो मुद्दा पीछे छूट जाता है और चर्चा सिर्फ बदसलूकी पर आकर टिक जाती है। जनता आज भी उस नेता को पसंद करती है जो सत्ता से सवाल करे, लेकिन सड़क पर तमाशा न बनाए। अगर यही ऊर्जा शांति और संवाद में लगती, तो न सिर्फ प्रशासन पर दबाव बनता, बल्कि आम आदमी भी कहता कि हां ये हमारे लिए लड़ रहे हैं। वरना धमकाने से डर पैदा होता है समर्थन नहीं।

विवादों में खड़गे की रैली

हल्द्वानी के जिस रामलीला मैदान में खड़गे की रैली हुई थी उसे श्री राम सेना धर्मार्थ सेवा न्यास नाम के संगठन ने हवन करके और गंगाजल छिड़क कर शुद्ध किया तो ये मामला राज्यसभा तक में गूंजा। खड़गे ने खुद यह मामला राज्य सभा में उठाया और खुद को दलित बताकर विक्टिम कार्ड भी खेला। खड़गे ने कहा कि मेरे कार्यक्रम के बाद रामलीला मैदान का शुद्धिकरण किया जाना संविधान के खिलाफ है। हालांकि उत्तराखंड के कैबिनेट मंत्री और भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता खजान दास ने स्पष्ट किया कि हल्द्वानी में शुद्धिकरण एवं पूजा-अर्चना करने वाली संस्था श्री राम सेना न्यास को भाजपा से न जोड़ा जाए। ऐसी किसी संस्था से भाजपा का कोई लेना-देना नहीं है। हालांकि भाजपा को रैली के दौरान धर्म विशेष के नारे लगाए जाने पर एहतराज है। क्योंकि जिस स्थान पर आपत्तिजनक नारे लगाए गए वह पवित्र रामलीला मैदान है, जिसका सनातन धर्म में विशेष धार्मिक महत्व है। ऐसे पवित्र स्थल पर दूसरे धर्मों के नारे लगाना किसी भी स्थिति में स्वीकार्य या जायज नहीं ठहराया जा सकता। ●

सियासत

फ्रस्ट्रेशन का शिकार राहुल ?

राहुल गांधी जब भाषा की मर्यादा तोड़ते हैं तो हर किसी के मन में सवाल पैदा होता है कि क्या राहुल गांधी मानसिक रूप से स्वस्थ हैं? उनका व्यवहार उनकी भाषा किसी भी कसोटी पर बहुत अजीब और चौंकाने वाली क्यों होती है? क्या इस पर विश्लेषण की जरूरत नहीं है? क्या यह एक खास तरह की मनोवैज्ञानिक स्थिति है?

डा.भारत भूषण
आईएफटीएम

राजनीति में मतभेद और सहमति व असहमति अपनी जगह है, मगर राहुल गांधी की भाषा से अब उनका फ्रस्ट्रेशन और डिप्रेशन बाहर आने लगा है। उनके पालन-पोषण और संस्कारों पर प्रश्नचिह्न लगने लगे हैं। क्योंकि एक व्यक्ति जिसे एक बड़ा राजनेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष (एलओपी) कहा जाता है वो राहुल गांधी जब भाषा की मर्यादा तोड़ते हैं तो हर किसी के मन में सवाल पैदा होता है कि क्या राहुल गांधी मानसिक रूप से स्वस्थ हैं? उनका व्यवहार उनकी भाषा किसी भी कसोटी पर बहुत अजीब और चौंकाने वाली क्यों होती है? क्या इस पर विश्लेषण की जरूरत नहीं है? क्या यह एक खास तरह की मनोवैज्ञानिक स्थिति है? एक ऐसा व्यक्ति जो खतरनाक हद तक भ्रम में जी रहा है। ऐसा व्यक्ति जो भारत-विरोधी ताकतों के हाथों खेल कर भारत को कमजोर करने की साजिश का शिकार हो। क्या ऐसा व्यक्ति जो देश का नुकसान करके सत्ता चाहता है वो देश का वफादार हो सकता है? जो इंसान जन्म के बाद से ही देश का प्रधानमंत्री बनने का सपना देखकर भ्रम में जी रहा हो। ऐसा इंसान जिसने जन्म से ही सत्ता का सुख भोगा हो उसके मन से क्या कभी राजशाही निकल सकती है? जिस इंसान को यही नहीं पता कि वो क्या हासिल करना चाहता है और कैसे हासिल करना है? ऐसा नेता जो पूरे समाज और सामाजिक नियमों को तो छोड़िए संवैधानिक संस्थाओं और संवैधानिक पदों पर बैठे अधिकारियों व नेताओं को अपमानित करता हो, एक ऐसा इंसान जिसका देश और समाज के लिए कोई योगदान न हो जिसे नकारात्मक और सकारात्मक तथा रचनात्मक राजनीति का ज्ञान न हो उसके हाथों में क्या देश की बागडोर सौंपी जा सकती है? अगर 2029 में सत्ता से बाहर रहना पड़ा तो निश्चित ही राहुल गांधी का फ्रस्ट्रेशन और डिप्रेशन खतरनाक स्थिति में पहुंच जाएगा। वैसे फ्रस्ट्रेशन का लेवल अभी भी कोई कम नहीं है। क्योंकि कांग्रेस के एक कार्यक्रम में राहुल ने भद्दे तरीके से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और ईटली की प्रधानमंत्री का जो मजाक उड़ाया वो नेता प्रतिपक्ष की गरिमा को कलंकित करने ही है।

मुझे मेलोनी समझ कर तो नहीं पकड़ा?

मानसून सत्र समाप्त होने के बाद 'रचनात्मक कांग्रेस नेशनल कन्वेंशन' नाम से नई दिल्ली में एक कार्यक्रम हुआ जिसमें राहुल गांधी ने प्रजेंटेशन देने वाले अपने पुराने हो चुके नए अंदाज में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति और वैश्विक नेताओं से गले मिलने पर तंज कसा। बात करते-करते उन्होंने मोदी के गले मिलने का नाट्य रुपांतरण भी कर दिया। उन्होंने पहले से तैयार स्क्रिप्ट के अनुसार दिल्ली के कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित को मंच पर बुलाया और कसकर गले लगा लिया। जब दोनों अलग हुए तो संदीप दीक्षित ने कहा कि 'मुझे मेलोनी (इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी) समझकर तो नहीं पकड़ा?' यह संदीप दीक्षित का अश्लील व्यंग्य था। बस इसके बाद संदीप दीक्षित की स्वर्गीय मां शीली दीक्षित और बहन सोशल मीडिया पर वायरल होने लगी। हालांकि राहुल गांधी जब प्रधानमंत्री मोदी का मजाक उड़ाते हैं तो कोई आश्चर्य नहीं होता। वह पिछले 12 साल से मोदी को कभी 'चौकीदार चोर', कभी 'कायर', कभी 'कांपने वाला', कभी 'मोदी मुझसे आंख नहीं मिला सकता', 'मोदी मुझसे डरता है' कहते रहते हैं। यही उनकी राजनीति का स्टाइल है। लेकिन अब उनकी लिस्ट में अमित शाह भी शामिल हो गए हैं। राहुल गांधी ने मानसून सत्र के दौरान कहा कि अमित शाह को इतना डरा दिया है कि वो संसद में आने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा। मोदी तक तो ठीक था, लेकिन गृह मंत्री अमित शाह से पंगा राहुल गांधी को भारी भी पड़ सकता है। क्योंकि अमित शाह चुपचाप मिशन में लगते हैं। उनके मिशन का पता तब चलता है जब नतीजा आता है। खैर ये तो अपने देश के नेता हैं, लेकिन सबसे बड़ा सवाल ये है कि क्या कांग्रेस के कार्यक्रम के दौरान इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी का नाम लेना बहुत आवश्यक था या फिर जानबूझ कर ऐसी भद्दी, अश्लील और शर्मनाक हरकत की गई ताकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वैश्विक राजनीति प्रभावित हो? मुझे लगता है कि राहुल गांधी के डिप्रेशन और फ्रस्ट्रेशन में होने का ये प्रत्यक्ष प्रमाण हो सकता है। क्योंकि एक राष्ट्रीय दल के राष्ट्रीय मंच से लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष की अमर्यादित भाषा पर जितनी तालियां बजती हैं, उससे ज्यादा सोशल मीडिया गालियां पड़ती है। सच ये भी है कि तालियों से वोट नहीं मिलते। राहुल गांधी ठीक वैसी ही राजनीति कर रहे हैं जैसी हमने कुछ दिन पहले जंतर मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी के मंच पर देखी थी। जहां खुद को जेन जी कहने वाली कुछ लड़कियां ऐसी-ऐसी गंदी गालियां दे रही थी जिन्हें सुनकर भी शर्म आ रही थी। खैर ये उन लड़कियों के परिवार से मिले संस्कार ही हो सकते हैं। लेकिन राहुल गांधी पिंक शर्ट पहनकर और 56 साल के अधेड़ होकर क्यों गालीबाज जेन जी बन रहे हैं इस पर तो पूरी रिसर्च हो सकती है।

भाजपा नेता कहते हैं कि राहुल गांधी जितना कड़वा बोलते हैं, मोदी को उतना ही फायदा होता है, भाजपा नेता तो राहुल गांधी को भाजपा का स्टार प्रचारक तक कहते हैं, लिहाजा जब तक राहुल के पास कांग्रेस की कमान है, भाजपा को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है, चिंता अखिलेश यादव को करनी चाहिए कि वो राहुल गांधी के साथ गठबंधन में चुनाव लड़े तो उनकी स्थिति क्या होगी?

राहुल भाजपा के स्टार प्रचारक

राहुल गांधी जानते हैं कि देश में नरेंद्र मोदी और अमित शाह की छवि एक मजबूत राजनेता के साथ कड़े और बड़े फैसले लेने वाले नेता की है। वो ये भी मानते हैं कि उनकी अपनी पार्टी के नेता भी इन दोनों से डरते हैं। राहुल को यकीन है कि जब तक मोदी और शाह की ऐसी छवि सलामत रहेगी, वो भाजपा का कुछ नहीं बिगाड़ पाएंगे। फिर भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के लिए तू-तड़ाक की भाषा का इस्तेमाल कर वो खुद को पीएम से बड़ा नेता बताने की कोशिश करते हैं। इसलिए 'पागल कर दूंगा' 'नरेंद्र मोदी रात को नहीं सोता है।' उसके बहुत कारण है 'हिन्डन भी एक कारण है।' जैसे डायलॉग मारना, इसी मंशा का नतीजा है, लेकिन मोदी की लोकप्रियता ने राहुल को तीन-तीन बार लोकसभा चुनाव में हराया है। देश के 22 राज्यों में भाजपा की सरकारें हैं, फिर भी हर चुनाव में राहुल कहते हैं कि, 'लिख कर ले लो, इस बार मोदी को हराएंगे'। गारंटी ले लो इस बार भाजपा हारेगी। 12 साल से यही कहते आ रहे हैं और हर चुनाव हारते जा रहे हैं। ये हताशा अब कड़वाहट में बदल चुकी है और ये स्वाभाविक भी है। पर हमारे देश की जनता गालीबाज और अमर्यादित भाषा का प्रयोग करने वाले नेताओं को पसंद नहीं करती। इसलिए भाजपा नेता कहते हैं कि राहुल गांधी जितना कड़वा बोलते हैं, मोदी को उतना ही फायदा होता है। भाजपा नेता तो राहुल गांधी को भाजपा का स्टार प्रचारक तक कहते हैं। लिहाजा जब तक राहुल के पास कांग्रेस की कमान है, भाजपा को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। चिंता अखिलेश यादव को करनी चाहिए कि वो राहुल गांधी के साथ गठबंधन में चुनाव लड़े तो उनकी स्थिति क्या होगी?

प्रियंका ही राहुल की दुश्मन

राहुल गांधी और कांग्रेस इतनी आक्रामक क्यों हो रही है? इसके पीछे बडा कारण एक के बाद एक चुनावी हार तो है ही। लेकिन कांग्रेस और राहुल गांधी की आक्रामक, अराजकता और अमर्यादित राजनीति की डायरेक्टर प्रियंका गांधी वाड्रा हैं। प्रियंका संसद में भी बोलती हैं तो उनकी भाषा शालीन होती है। वो मुस्कुरा कर अपनी बात कहती हैं, खुद को नया भी बता देती हैं, लेकिन इसके उलट राहुल गांधी आक्रामक रुख अपनाते हैं। इसके पीछे का राज कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता रही राधिका खेड़ा ने मीडिया के सामने खोला। राधिका खेड़ा छत्तीसगढ़ की कांग्रेस प्रवक्ता भी रही हैं। फिलहाल वो भाजपा की प्रवक्ता हैं। उनका कहना था कि कांग्रेस में तीन गुट हैं। पहला सोनिया गांधी का, दूसरा राहुल गांधी का और तीसरा गुट प्रियंका गांधी का है। प्रियंका गुट में राज्यसभा सांसद पवन खेड़ा, छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल, दिल्ली के संदीप दीक्षित, हरियाणा के देवेंद्र हुडा आदि हैं। छत्तीसगढ़ में हरेती

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष की अमर्यादित भाषा पर जितनी तालियां बजती हैं, उससे ज्यादा सोशल मीडिया गालियां पड़ती है, सच ये है कि तालियों से वोट नहीं मिलते, राहुल गांधी ठीक वैसी ही राजनीति कर रहे हैं जैसी जंतर मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी के आंदोलन में देखी थी, जहां खुद को जेन-जी कहने वाली कुछ लड़कियां ऐसी गंदी गालियां दे रही थी जिन्हें सुनकर शर्म आ रही थी।

तेहार पर भूपेश बघेल ने अपने आवास पर कार्यक्रम का आयोजन किया। पूजा पाठ हुआ और फिर भाषण के दौरान भूपेश बघेल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मजाक उड़ाते हुए 56 इंच का छोटा बंदर बाल नरेंद्र बाल नरेंद्र का नारा दिया। 12 अगस्त को यह नारा छत्तीसगढ़ में लगा और इसके अगले दिन पवन खेड़ा के नेतृत्व में संसद परिसर में प्रियंका गुट के सांसद टेडीबीयर लेकर पहुंचे और 56 इंच का छोटा बंदर कब आएगा सदन के अंदर जैसे नारे लगाए। इस प्रदर्शन के दौरान दो-तीन सपा सांसद तो थे, पर मल्लिकार्जुन खड़गे व जयराम रमेश, प्रमोद तिवारी जैसे नेता नहीं थे। छत्तीसगढ़ और संसद परिसर में बंदर कांड की डायरेक्टर प्रियंका गांधी वाड्रा थीं, क्योंकि दोनों ही जगह उनके ही गुट के नेताओं ने 56 इंच का छोटा बंदर...के नारे लगाए। राधिका खेड़ा का कहना है कि प्रियंका, राहुल गांधी की छवि खराब करना चाहती है। लेकिन वो भूल रही हैं कि यदि कांग्रेस नेता के तौर पर राहुल गांधी की छवि या करियर खत्म होता है तो कांग्रेस भी इतिहास बन जाएगी। राधिका खेड़ा का कहना था कि कांग्रेस की दुर्गति होगी तो उसके लपेटे में प्रियंका गांधी भी आएंगी। राधिका खेड़ा ने बड़ी बात तो यह कही कि राहुल गांधी और प्रियंका गांधी कांग्रेस पर वर्चस्व की लड़ाई में उस डाली को काट रहे हैं जिस पर वो खुद भी बैठे हुए हैं। खैर कांग्रेस की दुर्गति तो देश देख ही रहा है फिर भी कांग्रेसियों व कांग्रेसियों के नेता राहुल गांधी को लगता हैं कि अमित शाह को तड़ी पार कहने से और प्रधानमंत्री को गाली देने से ही वोट मिलेंगे तो उन्हें इस तरह की आक्रामक व अराजकता वाली राजनीति मुबारक कह सकते हैं। प्रियंका को रायबरेली से चुनाव क्यों नहीं लड़ाया। जबकि प्रियंका, सोनिया के प्रतिनिधि के रूप में लगातार रायबरेली जाती थी, पब्लिक से संवाद करती थी, उनकी वहां मजबूत टीम भी थी। यानी प्रियंका गांधी के लिए सबसे सेफ सीट रायबरेली थी, इस पर राधिका खेड़ा का कहना था राहुल गांधी ने रायबरेली से नहीं लड़ने दिया। अमेठी से जीतने के बाद राहुल गांधी ने केरल के वायनाड से इस्तीफा दिया और फिर प्रियंका को उप चुनाव लड़ाया गया। इसके पीछे राहुल की साजिश थी।

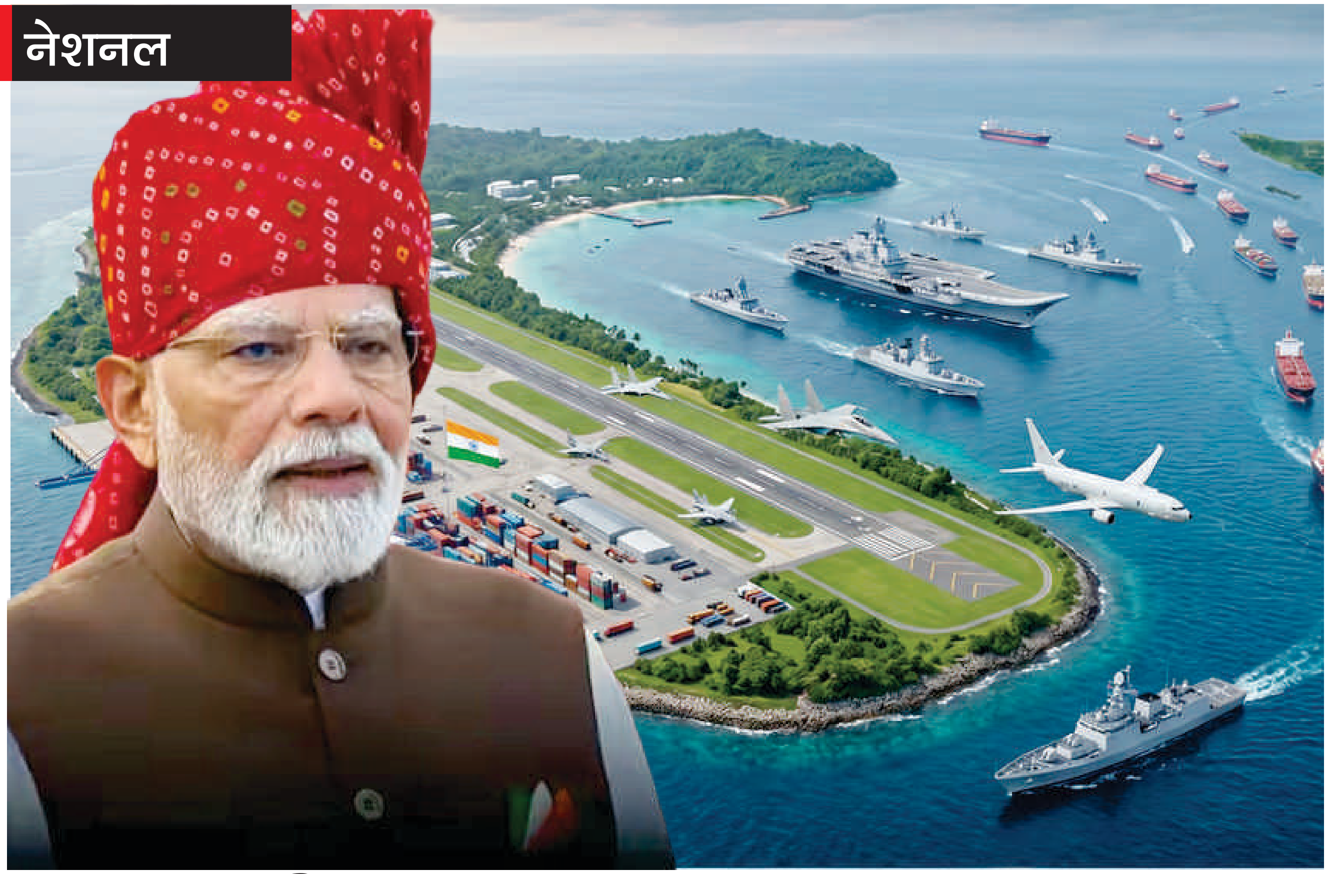

भारत हिंद महासागर का सिकंदर

2021 में प्रकाश में आई ग्रेट निकोबार परियोजना अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के सबसे दक्षिणी दीप को एक राजनीतिक और आर्थिक केंद्र में बदलने की विशाल और बहुआयामी परियोजना है, जिसके चलते खास कर चीन सहित उन तमाम देशों को गहरी चिंता है, जो हिन्द महासागर ने दखल रखने या दखल देने का इराद रखते हैं।

आलोक एम इंदौरिया
एवं दिवाकर शर्मा

हिंद महासागर में ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट भारत का वह प्रोजेक्ट है जो उसे वैश्विक सैन्य मंच पर एक ऐसे शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित करता है जो इस प्रोजेक्ट के माध्यम से न केवल हिन्द महासागर का सिकंदर कहलाएगा बल्कि भारत का इस क्षेत्र में एकमात्र ट्राई सर्विस कमांड का ऐसा केन्द्र बनेगा जिसकी जद और हद में मल्लका जलडमरू मध्य इस तरह रहेंगे की भारत वहां से बैठकर मल्लिका को न केवल ब्लॉक कर सकेगा बल्कि कन्ट्रोल भी कर सकेगा। भारत के इस कदम से इंडो पैसिफिक में शक्ति संतुलन पूरी तरह से बदल जाएगा। यह परियोजना हिन्द महासागर और दक्षिण पूर्व एशिया में भारत की बेहद मजबूत उपस्थिति दर्ज कराने में मील का पत्थर साबित होगी। यह भारत के सामरिक, आर्थिक और पर्यावरणीय भविष्य की वृहद और महत्वपूर्ण योजना हैं। अहम बात यह है कि एनजीटी ने इस परियोजना को पर्याप्त सुरक्षा उपाय और कड़ी शर्तों के साथ मंजूरी दी है जिसका पालन अनिवार्य हैं। लगभग 81000 करोड़ रुपये यानी करीब 9 अरब डॉलर की लागत वाला यह प्रोजेक्ट केवल एक विकास योजना नहीं है बल्कि यह हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की सैन्य और रणनीतिक ताकत को कई गुना बढ़ाने वाला मास्टरस्टोक है। नीति आयोग द्वारा तैयार किए गए इस विजन डॉक्यूमेंट के तहत अंडमान निकोबार द्वीप समूह के सबसे बड़े दक्षिणी द्वीप ग्रेट निकोबार को एक बड़े आर्थिक और सामरिक हब के रूप में विकसित किया जा रहा है।

- **भारत अपनी ग्रेट निकोबार परियोजना के कारण जो उसे हिन्द महासागर और दक्षिण पूर्व एशिया के महासागरीय क्षेत्र में एक ऐसी ताकत बना देगा जो इस क्षेत्र का न केवल नीति नियंता बन सकता है, बल्कि हिन्द महासागर का सिकंदर कहलाने की ताकत भी रखता है।**
- **लगभग 81000 करोड़ रुपये यानी करीब 9 अरब डॉलर की लागत वाला यह प्रोजेक्ट केवल एक विकास योजना नहीं है बल्कि यह हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की सैन्य और रणनीतिक ताकत को कई गुना बढ़ाने वाला मास्टरस्टोक है।**

दक्षिणी दीप की बहुआयामी परियोजना

दुनिया के नक्शे पर विश्व की प्रमुख पांच महाशक्तियों में अपना स्थान बनाने वाले भारत विश्व की एक प्रमुख आर्थिक शक्ति बनने के साथ-साथ सैन्य शक्ति बनने की ओर भी अग्रसर है। ब्रह्मोस ने सामरिक दृष्टिकोण से भारत को हथियारों की मंडी में एक ऐसा मुकाम दिया है। जिससे विश्व के हथियार उत्पादन करने वाले देश भी हक्का बक्का हैं। आज भारत स्वयं हथियारों का निर्माता और विक्रेता बन चुका है, लेकिन भारत इन दिनों पूरे विश्व में खास कर सैन्य क्षेत्र में चर्चित है। अपनी ग्रेट निकोबार परियोजना के कारण जो उसे हिन्द महासागर और दक्षिण पूर्व एशिया के महासागरीय क्षेत्र में एक ऐसी ताकत बना देगा जो इस क्षेत्र का न केवल नीति नियंता बन सकता है, बल्कि हिन्द महासागर का सिकंदर कहलाने की ताकत भी रखता है। मोदी सरकार के दौरान परिकल्पित और 2021 में प्रकाश में आई ग्रेट निकोबार परियोजना अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के सबसे दक्षिणी दीप को एक राजनीतिक और आर्थिक केंद्र में बदलने की विशाल और बहुआयामी परियोजना है। जिसके चलते खास कर चीन सहित उन तमाम देशों को गहरी चिंता है। जो हिन्द महासागर ने दखल रखने या दखल देने का इरादा रखते हैं। अंडमान और निकोबार दीप समूह में लगभग 836 दीप शामिल है जिसमें ग्रेट निकोबार दीप सबसे बड़ा द्वीप माना जाता है। इस परियोजना में गलाथिया खाड़ी, पम्मा खाड़ी और नानजप्पा खाड़ी विकास शामिल है और यह कोलम्बो फोर्डक्लांग मलेशिया और सिंगापुर से समान दूरी पर स्थित है। जिसके कारण भारत क्षेत्रीय समुद्री व्यापार के ठीक केन्द्र में आ जाता है।

चीन की विशात पलटी

दरअसल भारत को चीन ने स्टिंग ऑफ पर्लस की रणनीति के तहत हिन्द महासागर में एक तरह से घेर रखा है और यह उसकी दबाव में लेने की एक्सरसाइज का हिस्सा है। इसके चलते पाकिस्तान के ग्वादर, श्रीलंका के हंबनटोटा, बांग्लादेश के चटगांव और म्यांमार के क्योकप्यू पर बंदरगाह बनाकर तगड़ी घेराबंदी करने का खेल खेला है। मगर भारत सरकार ने इस ग्रेट निकोबार परियोजना को लाकर चीन की सारी बिसात को उलट पलट करके रख दिया है। करीब 81 हजार करोड़ की यह ग्रेट निकोबार परियोजना एक मेगा ड्यूल यूज प्रोजेक्ट है। यानी सेना और नागरिक दोनों के ही लिए। इस ग्रेट निकोबार परियोजना के चार मुख्य हिस्से हैं। इसमें है 1.6 मिलियन, टीईयू क्षमता वाला पोर्ट जो बनने जा रहा है यह सिंगापुर और कोलंबो को जबरदस्त टक्कर देगा। सिंगापुर, मलेशिया और कोलंबो के रास्ते भारत का 75 प्रतिशत कार्गो जाता है। इससे सिंगापुर की मोनोपोली खत्म हो जाएगी। 3300 मीटर का रनवे बनने जा रहा है। जिसमें अत्याधुनिक सुखोई 30 एमकेआई, पी.81 जैसे जंगी विमान आसानी से उतर सकेंगे। इसके अलावा यहां स्मार्ट सिटी और टाउनशिप बनाकर 8 हजार की आबादी को 3 लाख 50 हजार तक ले जाने की योजना है। इसके साथ ही यहां 450 मेगावाट का सोलर प्लस, गैस आधारित पावर प्लांट भी लगाया जाने वाला है। यह पूरा काम तीन चरणों में 2047 तक पूरा होगा।

भारत को 2000 करोड़ की सालाना कमाई

ग्रेट निकोबार परियोजना का महत्व ऐसे भी समझा जा सकता है कि यहां से मिल्के पॉइंट की शिपिंग लेन केवल 90 समुद्री किलोमीटर दूर है और भारत यहां से चीन के तेल व्यापार की सप्लाई को बाधित कर सकता है। इसी क्षेत्र से होकर चीन का 75 प्रतिशत के लगभग व्यापार होता है। अंडमान निकोबार कमान भारत की एकमात्र ऐसी सर्विस कमांड है जहां आईएनएस बाज, आईएनएस उत्कर्ष जैसे बेस के साथ नौसेना के बड़े युद्धपोत, पनडुब्बी तैनात होगी। पी.81 विमान से दक्षिण पूर्व एशिया में काफी दूर तक निगरानी हो सकेगी। यानी बंगाल की खाड़ी हिन्द महासागर में भारत का सुरक्षा कवच बन जाएगी। इसके अलावा नया पार्क बनने से मिनिवम 2 हजार करोड़ की सालाना भारत को कमाई होगी। जो अभी तक सिंगापुर के हिस्से में जाती है। इसके साथ ही मल्लका शिपिंग रूड पर होर्मुज की तरह ईरान जैसा भारत अपना कब्जा बना सकता है। इस प्रोजेक्ट से चीन सबसे ज्यादा परेशान है। क्योंकि उसका अधिकतर तेल इसी रास्ते से जाता है। भारत ने इसे अगर बंद कर दिया तो चीन मुश्किल में पड़ सकता है और इसी को मल्लका डिलेमा कहते हैं। ग्रेट निकोबार भारत की फारवर्ड डिफेंस लाइन बनकर स्ट्रिंग ऑफ पल्स की घेराबंदी को तहस नहस करने में सक्षम हैं, क्योंकि यह उसकी मारक क्षमता के भीतर आते हैं।

मोदी सरकार देश हित में चाहे कानून बनाए या फिर कोई परियोजना बनाए लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को उसका विरोध करना ही करना है, इसलिए नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में प्रस्तावित ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट को लेकर कहा कि यह परियोजना देश की प्राकृतिक और आदिवासी विरासत के खिलाफ सबसे बड़े अपराधों में से एक है।

ग्रेट निकोबार का विरोध क्यों

भारत के विपक्षी दल इस महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट का यह कहकर विरोध कर रहे हैं कि इससे शेंपेन और निकोबारी जनजाति के विलुप्त हो जाने के साथ-साथ लगभग 10 लाख पेड़ कटेंगे और कोलर की चट्टानें और दुर्लभ कछुओं के जीवन पर संकट भी उत्पन्न हो सकता है। मोदी सरकार देश हित में चाहे कानून बनाए या फिर कोई परियोजना बनाए लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को उसका विरोध करना ही करना है। इसलिए नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में प्रस्तावित ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट को लेकर केंद्र सरकार पर गंभीर आरोप लगा दिए। उन्होंने कहा कि यह परियोजना देश की प्राकृतिक और आदिवासी विरासत के खिलाफ सबसे बड़े अपराधों में से एक है। राहुल गांधी ग्रेट निकोबार द्वीप के कैंपबेल बे इलाके का दौरा करने भी पहुंच गए थे। वहां उन्होंने जंगलों और स्थानीय लोगों से मिलने के बाद कहा था कि यहां के जंगल बेहद पुराने और अनमोल हैं, जिन्हें बनने में कई पीढ़ियां लगी हैं, लेकिन अब इन्हें खत्म करने की तैयारी की जा रही है। राहुल गांधी ने कहा था कि इस प्रोजेक्ट के तहत करीब 160 वर्ग किलोमीटर के घने जंगल काटे जाएंगे और लाखों पेड़ों को हटाया जाएगा। राहुल गांधी ने इसे विकास के नाम पर विनाश बताया था। उनका कहना था कि इस परियोजना से यहां रहने वाली आदिवासी और स्थानीय समुदायों के अधिकारों को नजरअंदाज किया जा रहा है और उनके घर-जमीन को उजाड़ने की तैयारी है। राहुल गांधी के विरोध का सीधा मतलब है कि वो श्रीलंका बांग्लादेश और पाकिस्तान में चीन द्वारा बनाए जा रहे बंदरगाहों को फायदा और भारत को नुकसान पहुंचाना चाहते है।

इंडोनेशिया के साथ समुद्री सहयोग बढ़ेगा

हालांकि एनजीटी ने कठोर शर्तों के इस प्रोजेक्ट की परमिशन दे दी हैं। जिसका अक्षरशः पालन अर्थोरिटी को करना होगा। अहम सवाल यह है कि इतने महत्वपूर्ण सामरिक महत्व के प्रोजेक्ट को बंद करके क्या हम हिन्द महासागर में लूजर साबित नहीं होंगे? यह प्रोजेक्ट एक ऐसा प्रोजेक्ट हैं जो हिंद और प्रशांत महासागर में शक्ति संतुलन को पूरी तरह से बदल कर भारत को यहां का सिकंदर बना देगा और शायद चीन की परेशानी की यही सबसे बड़ी वजह है। श्रीलंका, पाकिस्तान, बांग्लादेश के बंदरगाहों को बनाने में चीन के अरबों डालर जिस सामरिक कारणों से लगाए थे या लगाए गए थे। ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट ने चीन के सारे षडयंत्रों को बहुत कमतर करके लगभग शून्य सा कर दिया है। बहरहाल ग्रेट निकोबार परियोजना भारत की बहुस्तरीय इंडो पैसिफिक रणनीति का एक प्रमुख आधार होगा और यह भारत को वैश्विक व्यापार और लॉजिस्टिक नेटवर्क से जोड़ने के साथ विदेशी हब पर हमारी निर्भरता को कम कर देगा। यह इंडोनेशिया के साथ हमारा समुद्री सहयोग भी बढ़ाएगा। पूर्व नौसेना उप प्रमुख शेखर सिन्हा का मानना है कि ये ट्रैफिक मॉनिटर करने की बेहतरीन जगह है। यह सच है कि आने वाले दशक में ग्रेट निकोबार यह तय करेगा कि हिन्द महासागर में कौन नियम बनाएगा भारत या चीन? एक बड़ा सवाल यह भी है कि पर्यावरणीय चिंता के नाम पर क्या इस महत्वपूर्ण सामाजिक परियोजना जो एक ओर तो चीन को आइना दिखाएगी वहीं दूसरी ओर हिन्द महासागर को नियंत्रित करेगी क्या इसे विपक्ष के कहने से बंद कर देना चाहिए?

कानून

एफसीआरए संसोधन जरूरी?

सपा सांसद अखिलेश यादव का कहना था कि भाजपा एनजीओ को नियंत्रित करना चाहती है और उन्हें कठपुतली बनाकर धीरे-धीरे उनकी संपत्ति पर कब्जा करना चाहती है, एफसीआरए बिल में केवल अल्पसंख्यकों को टारगेट किया जा रहा है, इसलिए भाजपा का विधेयक के माध्यम से कानून में संशोधन करना राष्ट्रीय हित के खिलाफ है।

बाबू सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

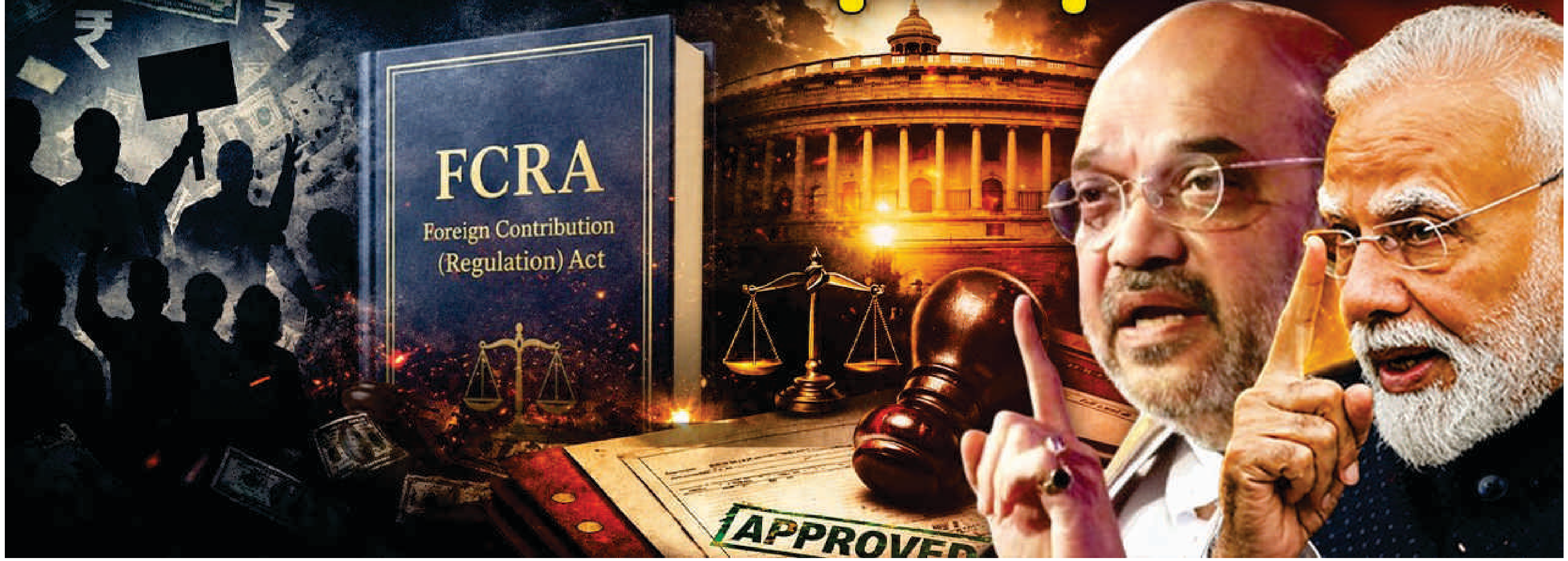

दिमागी नक्सलवाद’ पर चोट करने के लिए ही सरकार एफसीआरए बिल को संसद में पास करना चाहती है। जिसका पूरा विपक्ष और उसका ईको-सिस्टम विरोध कर रहा है। क्योंकि विदेशी फंडिग से देश में कुछ राजनीतिक, सामाजिक संगठन व गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) अराकता के साथ हिंसा फैलाना चाहते हैं। धर्मान्तरण को उद्योग बनाना चाहते है। एफसीआरए बिल पास होने के बाद विदेशी चंदा लेने वालों पर नकेल कसेगी और विदेश से मिले एक-एक पैसे का हिसाब सरकार को देना होगा। मसलन विदेशी फंड मिला तो किस लिए, विदेशी चंदे का उपयोग किन कार्यों में किया गया है? यानी समाज के उत्थान के नाम मिलने वाले चंदे का उपयोग धर्मान्तरण, लव जिहाद, लैंड जिहाद, हिंसा और अराजकता तथा नक्सलवाद फैलाने में तो नहीं किया जा सकेगा। ऐसे तत्वों का इलाज एफसीआरए के नियमों को कड़ा बनाकर ही किया जा सकता है। इसलिए केरल में एक दूसरे की प्रतिद्वंदी रहे कांग्रेस और वामपंथी दलों ने एफसीआरए संशोधन बिल 2026 के प्रावधानों के खिलाफ एकजुट होकर विरोध प्रदर्शन किया है। वामपंथियों व कांग्रेस का मानना है कि ये प्रावधान अल्पसंख्यकों, विशेषकर मुस्लिम व ईसाइयों द्वारा संचालित धर्मार्थ संस्थानों, जिनमें स्कूल, मदरसे और अस्पताल आदि शामिल हैं को निशाना बनाएंगे। हालांकि सरकार ने एफसीआरए संशोधित बिल जेपीसी को भेज दिया है। सरकार के इस कदम पर भी विपक्ष को आपत्ति है। कांग्रेस और सपा ने एफसीआरए बिल को अल्पसंख्यकों के खिलाफ बताते हुए इसे वापस लेने की मांग कर रही है तो वहीं सरकार इस बिल का एक भी प्रावधान-अल्पसंख्यकों के खिलाफ नहीं होने का दावा करती है। विपक्ष अच्छी तरह जानता है कि मोदी सरकार जिस बिल या विधेयक को लाती हैं उसे फिर संसद के दोनों ही सदनों में पारित भी करा लेती है। यह मोदी सरकार का रिकॉर्ड है।

किसे बचाना चाहता है विपक्ष?

समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव का कहना था कि भाजपा गैर सरकारी संगठनों (एनजीओ) को नियंत्रित करना चाहती है और उन्हें कठपुतली बनाकर धीरे-धीरे उनकी संपत्ति पर कब्जा करना चाहती है। एफसीआरए बिल में केवल अल्पसंख्यकों को टारगेट किया जा रहा है। इसलिए भाजपा का विधेयक के माध्यम से कानून में संशोधन करना राष्ट्रीय हित के खिलाफ है और इसके कथित दुरुपयोग को रोकना आवश्यक है। विपक्ष का दावा है कि यह विधेयक भारत के संविधान के अनुच्छेद 14, 19, 21 और 301(ए) का उल्लंघन करता है और इसका कड़ा विरोध किया जाना चाहिए। कांग्रेस ने तो अपने सांसदों को संसद के भीतर विरोध करने के लिए भी कहा था जबकि अन्य दलों को विरोध प्रदर्शन में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था। कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर का कहना था कि विपक्षी एकता ने सरकार को फिलहाल एफसीआरए विधेयक को जेपीसी में भेजने के लिए मजबूर किया है। एफसीआरए बिल को जेपीसी में भेजे जाने पर कांग्रेस सांसद पी.चिदंबरम ने कहा इस बिल को सिर्फ जेपीसी के पास ही नहीं भेजना चाहिए, बल्कि बिल को वापस भी ले लेना चाहिए। कम से कम शोर-शराबे के बीच बिल पास कराने से तो बेहतर यही है। कांग्रेस जेपीसी में भी बिल का विरोध करेगी और आखिरकार बिल को रद्द करना ही होगा। राजनीतिक दलों को यह भी पता है कि दो साल पहले छत्तीसगढ़ में धर्मांतरण विरोधी कानून के तहत गिरफ्तार की गई केरल की दो ननों की एक समुदाय के विरोध के कारण त्वरित रिहाई करनी पड़ी थी। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या विपक्षी दल धर्मान्तरण कराने वालों, देश में अराजकता फैलाने वालों अथवा देश विरोधी गतिविधियों में शामिल लोगों के साथ नक्सलवाद को खाद पानी देने वालों को बचाना चाहते हैं? क्या एफसीआरए के नाम पर देश की आतंरिक सुरक्षा, वित्तीय पारदर्शिता का विरोध किया जा रहा है। क्या विपक्ष भारत विरोधी विदेशी ताकतों का समर्थन किया जा रहा है। क्योंकि अमेरिका जैसा देश भी एफसीआरए में संशोधन का विरोध कर रहा है एफसीआरए संशोधन बिल क्या है

यह बिल विदेशी फंडिंग पर नियंत्रण करने वाला है। यदि किसी एनजीओ का एफसीआरए लाइसेंस रद्द या निलंबित होता है, तो उसकी विदेशी फंड से बनी संपत्ति और बैंक खातों की सरकार द्वारा नियुक्त अथॉरिटी जांच कर सकती है या नियंत्रण कर सकती है। एफसीआरए रजिस्ट्रेशन या नवीनीकरण के लिए संस्था के प्रमुख पदाधिकारियों के लिए आधार कार्ड और विदेशी नागरिकों के लिए पासपोर्ट अनिवार्य हो जाएगा। संशोधित विधेयक के तहत कोई भी एनजीओ अपना विदेशी फंड किसी दूसरे एनजीओ या संस्था को ट्रांसफर नहीं कर पाएगा। यदि नवीनीकरण आवेदन खारिज होता है या समय पर नवीनीकरण नहीं होता है, तो एफसीआरए का रजिस्ट्रेशन स्वतः समाप्त माना जाएगा। सरकार अब किसी संस्था का एफसीआरए सर्टिफिकेट 360 दिनों तक निलंबित कर सकती है, अभी यह अवधि 180 दिन है। सरकारी कर्मचारियों को विदेशी फंड लेने से पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया जाएगा। सभी एनजीओ को विदेशी अंशदान प्राप्त करने के लिए केवल भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई), नई दिल्ली की मुख्य शाखा में खाता खोलना अनिवार्य हो जाएगा।

कई देशों में ऐसी सरकारें और संस्थाएं हैं जो भारत की राजनीति को अपने हितों के हिसाब से प्रभावित करने का प्रयास करती रहती हैं, वे राजनीतिक दलों, सामाजिक, धार्मिक संगठनों व एनजीओ को उकसाती हैं, यह सारा कार्यक्रम आम तौर पर एनजीओ के जरिये कराया जाता है।

शीतकालीन सत्र में आएगी जेपीसी रिपोर्ट

एफसीआरए संशोधित बिल 2026 (विदेशी अंशदान विनियमन संशोधन विधेयक 2026) पहले बजट सत्र में लाया गया था और फिर मॉनसून सत्र में पेश किया गया। मॉनसून सत्र में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने लोकसभा में विदेशी अंशदान विनियमन संशोधन विधेयक, 2026 यानी एफसीआरए बिल को संसद की संयुक्त समिति (जेपीसी) को भेजने का प्रस्ताव पेश किया। नियम के अनुसार इस संयुक्त समिति में लोकसभा से 21 और राज्यसभा से 10 सदस्य शामिल होंगे। इस कमेटी को एफसीआरए विधेयक की जांच करने और संसद के शीतकालीन सत्र 2026 के पहले सप्ताह के आखिरी दिन तक अपनी रिपोर्ट लोकसभा को सौंपनी होगी। सरकार ने साफ कर दिया कि एफसीआरए संशोधित बिल पर विपक्षी सांसद कितना भी हंगामा करें या विरोध करे आज नहीं तो कल इसे पारित करा ही लिया जाएगा। इसलिए संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने मॉनसून सत्र में कहा कि कांग्रेस और वामपंथी दल लोगों को गुमराह कर रहे हैं। किरेन रिजिजू ने कहा एफसीआरए संशोधन विधेयक का कोई भी प्रावधान अल्पसंख्यक संस्थानों के खिलाफ नहीं है। फिर भी विपक्ष कुछ समुदायों को गुमराह करने के लिए अभियान चला रहा है। भारत में विदेशी फंड खर्च करने के लिए नियम और कानून होने चाहिए। उन्होंने इस बिल को देश की आंतरिक सुरक्षा से जुड़ा हुआ बताया है।

एफसीआरए में कई बार संशोधन

ऐसा पहली बार नहीं है जब विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए) में संशोधन किया जा रहा है। 1976 में लाए गए एफसीआरए कानून को कई बार संशोधन के जरिये सख्त बनाया गया है। क्योंकि भारत में विदेशी फंड या दान लंबे समय से आ रहा है जिसे रेगुलेट करने के लिए ही विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम है। यह अधिनियम तय करता है कि विदेश से आने वाला पैसा किन लोगों या संगठनों को मिल सकता है और इसका इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है? एफसीआरए विधेयक में प्रस्तावित संशोधन राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक समरसता को बनाए रखने में मदद करेंगे या ये राजनीतिक हथियार हैं इसकी पड़ताल भी जरूरी है। दरअसल संशोधित विधेयक में एक नामित प्राधिकरण बनाने का प्रविधान है। जब किसी संस्था का एफसीआरए लाइसेंस रद्द, सरेंडर या समाप्त होगा, तो उसकी विदेशी धनराशि और उससे बनाई गई संपत्तियों का नियंत्रण इसी प्राधिकरण के पास चला जाएगा। यदि कोई संस्था समय पर नवीनीकरण नहीं कराती, नवीनीकरण खारिज हो जाता है या लाइसेंस सरेंडर कर देती है, तो विदेशी धन या उसके आंशिक अथवा पूर्ण सहयोग से बनी संपत्तियां सरकार द्वारा अधिग्रहित कर ली जाएंगी। यदि अधिग्रहित की गई संपत्ति कोई पूजा स्थल या धार्मिक स्थान है, तो सरकार और प्राधिकरण के लिए उसका धार्मिक स्वरूप बनाए रखना अनिवार्य होगा। विधेयक के तहत नियमों के उल्लंघन करने पर अधिकतम जेल की सजा को पांच वर्ष से घटाकर एक वर्ष करने का प्रस्ताव है। समाचार या करंट अफेयर्स के प्रसारण से जुड़े किसी भी व्यक्ति द्वारा विदेशी अंशदान लेने पर पूर्ण प्रतिबंध को और व्यापक बनाया गया है। इससे किसी एनजीओ अथवा ट्रस्ट द्वारा एफसीआरए नियमों का पालन न करने या नवीनीकरण छूटने पर संस्थाओं की चल-अचल संपत्ति और बैंक फंड जब्त होने का जोखिम बढ़ जाएगा। अल्पसंख्यकों और धर्मार्थ संस्थाओं के साथ विपक्षी दलों का तर्क है कि इससे विशेष रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में काम कर रहे अल्पसंख्यक और धर्मार्थ संगठनों पर अत्यधिक प्रशासनिक दबाव बनेगा।

सरकार ने साफ कर दिया कि एफसीआरए संशोधित बिल पर विपक्षी सांसद कितना भी हंगामा करें या विरोध करे आज नहीं तो कल इसे पारित करा ही लिया जाएगा, इसलिए संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने मॉनसून सत्र में कहा कि कांग्रेस और वामपंथी दल लोगों को गुमराह कर रहे हैं, क्योंकि एफसीआरए संशोधन विधेयक का कोई भी प्रावधान अल्पसंख्यकों के खिलाफ नहीं है।

एक्सपर्ट की राय

एक्सपर्ट मान रहे हैं कि कई दशकों से ऐसा महसूस किया जा रहा है कि विदेश से फंड भारत आ रहा है तो यह किस कारण से आ रहा है और उपयोग किस लिए किया जा रहा है। इसका पूरा लेखा-जोखा होना चाहिए। यह सोच सिर्फ भारत में ही नहीं पूरी दुनिया में है। कई देशों में ऐसी सरकारें और संस्थाएं हैं जो भारत की राजनीति को अपने हितों के हिसाब से प्रभावित करने का प्रयास करती रहती हैं। वे राजनीतिक दलों, सामाजिक, धार्मिक संगठनों व एनजीओ को उकसाती हैं। यह सारा कार्यक्रम आम तौर पर एनजीओ के जरिये होता है। ऐसा माना जा रहा है कि भारत में एक ऐसी पारदर्शी व मजबूत व्यवस्था होनी चाहिए जिससे पता चले कि विदेश से पैसा किस मकसद से और किस उद्देश्य से भेजा जा रहा है। ऐसे में सवाल पैदा होता है कि क्या पैसा यहां इसलिए आना चाहिए कि गरीबों और आदिवासियों को लालच देकर उनका धर्मांतरण कराया जा सके। क्योंकि कुछ विदेशी ताकतों और संस्थाओं की दिलचस्पी वर्षो से भारत में धर्मांतरण कराने की रही है। इस कानून को सिर्फ अल्पसंख्यक विरोधी नहीं कहा जा सकता क्योंकि विधेयक में प्रस्तावित संशोधन सभी धर्मों पर समान रूप से लागू होगा। एफसीआरए में संशोधन देश की आंतरिक सुरक्षा, वित्तीय पारदर्शिता और अवैध विदेशी फंडिंग पर लगाम लगाने के लिए जरूरी है। ●

महाभारत कालीन
गुफा में कृष्ण

भटवाड़ी ब्लाक के ज्ञाणजा गांव के हरुना नामे तोक में जंगलों में स्वामी शंकर महाराज ने चार साल पहले करीब 250 मीटर प्राकृतिक गुफा की खोज की थी, उन्होंने ग्रामीणों के साथ गुफा के अंदर जाकर सर्वे किया तो गुफा के भीतर महाभारत कालीन श्रीकृष्ण की पत्थर की एक मूर्ति मिली थी, श्रीकृष्ण हाथ में बांसुरी लिए खड़े हैं, इसके साथ ही गुफा के अंदर स्थापित शिवलिंग भी मिला है।

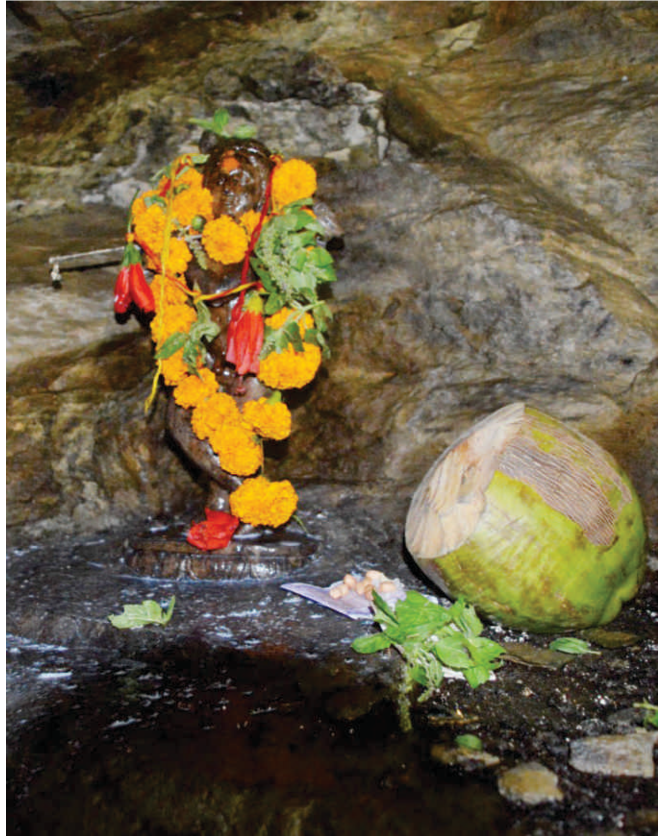

हरीश भट्ट
रामनगर

हिमालय की गोद में बसा उत्तराखंड प्रचीन व पौराणिक महत्व के धार्मिक स्थलों, जागेश्वधाम, चारधाम यात्रा, कैंचीधाम, शांत वादियों, झरनों, झीलों, रहस्यमयी गुफाओं, नदियों, दुर्लभ वनस्पतियों के साथ खूबसूरत पर्यटन स्थल के लिए प्रसिद्ध है। दुनिया भर के लोग यहां प्राचीन मंदिरों में अपने आराध्य देवी देवताओं के दर्शन के साथ पूजा अर्चना करने के लिए आते हैं। मोक्ष के लिए चारधाम यात्रा करते हैं। इसी देवभूमि उत्तराखंड में चार साल पहले उत्तरकाशी जिले में वरुणावत पर्वत की चोटी पर कुछ साधुओं को एक रहस्यमयी प्राकृतिक गुफा नजर आई थी। साधुओं ने गुफा के भीतर जाकर देखा तो वहां महाभारत काल की भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति और शिवलिंग मिला है। गुफा में भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति और शिवलिंग मिलने के बाद से ही यहां भक्तों के पहुंचने का सिलसिला शुरू हुआ। स्थानीय लोगों ने प्राकृतिक और रहस्यमयी गुफा के संरक्षण की मांग भी तभी से शुरू कर दी थी। उत्तरकाशी जिले का वरुणावत पर्वत अपनी भौगोलिक परिस्थिति, पौराणिक महत्व और 2003 तथा 2024 के भूस्खलन (लैंडस्लाइड) जैसी गंभीर आपदाओं के लिए जाना जाता है। लिहाजा भू-वैज्ञानिक इस पर्वत को संवेदनशील मानते हैं। इसी वरुणावत पर्वत से दो नदियां भी निकलती है एक ओर से अस्सी गंगा तथा दूसरी तरफ से वरुणा नदी निकल कर भागीरथी में मिलती है इस लिए इसे त्रिवेणी संगम भी कहा जाता है। इस पर्वत के शीर्ष पर विमलेस्वर महादेव विराजमान है। इसी वरुणावत पर्वत के शीर्ष पर ज्ञाणजा गांव है। भटवाड़ी विकासखंड के ज्ञाणजा गांव के हरुना नामे तोक में जंगलों में ही स्वामी शंकर महाराज ने चार साल पहले करीब 250 मीटर प्राकृतिक गुफा की खोज की थी। उन्होंने ग्रामीणों के साथ इस गुफा के अंदर जाकर सर्वे किया तो गुफा के भीतर महाभारत कालीन श्रीकृष्ण की पत्थर की एक मूर्ति मिली थी। श्रीकृष्ण हाथ में बांसुरी लिए खड़े हैं। इसके साथ ही गुफा के अंदर स्थापित शिवलिंग भी मिला है। इसके बाद स्वामी शंकर महाराज ने जोगड़ गांव आश्रम के स्वामी विपुल महाराज के साथ मिलकर इस गुफा को विकसित किया। दोनों साधुओं ने गुफा तक पहुंचने के लिए सीढ़ियां सहित गुफा के मुख्य द्वार को चौड़ा कर गेट का निर्माण कराया। गुफा के भीतर अंधकार दूर करने के लिए सोलर लाइट की व्यवस्था की। इस प्राकृतिक गुफा को धार्मिक पर्यटन का केंद्र बनाने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। स्वामी विपुल महाराज का कहना है कि इस गुफा को पाताल भुवनेश्वर के छोटे स्वरूप के तौर पर विकसित किया जा सकता है। उनका कहना है कि करीब 250 मीटर लंबी गुफा के भीतर एक अलग ही रोमांच का अनुभव होता है।

शास्त्रों में वरुणावत पर्वत का उल्लेख

वरुणावत पर्वत केवल पत्थरों का ढेर नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक प्रहरी है, जिसके चरणों में पतित-पावनी गंगा (भागीरथी) बहती है और जिसके मस्तक पर देवताओं का आशीर्वाद है। यह स्थान साधकों के लिए मोक्ष का द्वार और अशांत मन के लिए शांति का केंद्र है। इसलिए हिमालय के हृदय में बसे उत्तरकाशी शहर और इसे मुकुट की तरह सुशोभित करने वाले वरुणावत पर्वत श्रृंखला की महिमा का गुणगान कुछ इस तरह किया जाता है...।

एक ओर वरुणावत की ऊंचाई, दूजी ओर गंगा की निर्मल धारा,
कण-कण में शिव का वास यहां, जगमगाता भक्ति का सितारा।
इस पावन पर्वत की कंदराओं में, ऋषियों ने तप की अग्नि जलाई,
उत्तरकाशी की इस पावन माटी ने, अध्यात्म की नई ज्योत जलाई।

वेदों और पुरणों में भी वरुणावत पर्वत का उल्लेख मिलता है। 8 साल पहले वरुणावत पर्वत के शीर्ष पर बसे ज्ञानजा गांव में व्यासकुंड के पास विधि-विधान के साथ भगवान वेदव्यास की गुफा का जीर्णोद्धार किया गया था। शिंखलेश्वर धाम के श्रीमंत शंकर स्वामी महाराज और स्वामी महिमानंद महाराज ने ज्ञानजा गांव के लोगों के साथ विशेष पूजा-अर्चना व हवन के बाद वेद व्यास की मूर्ति गुफा में स्थापित की थी। जानकार संतों की मानें तो व्यास पर्वत का काफी धार्मिक महत्व भी है। शिंखलेश्वर महादेव धाम के संत श्रीमंत शंकर स्वामी का दावा है कि पुराणों के अनुसार भगवान वेद व्यास के हिमालय में दो स्थान हैं। पहला बदरीनाथ धाम के माणा गांव में अलकनंदा और सरस्वती नदी के बीच है, जहां पर वेद व्यास जी ने चार वेदों और महाभारत की रचना की थी। दूसरा वरुणावत पर्वत पर ज्ञानजा गांव में व्यास कुंड के पास है जहां 18 पुराणों का संकलन किया था। शंकर स्वामी का दावा है कि महाभारत में वर्णन है कि महाराज युधिष्ठिर भी दो बार वेदव्यास से मिलने और उनका आशीर्वाद लेने व्यास कुंड के पास व्यास पर्वत पर आए थे। पुराणों में उल्लेख है कि यह महाभारत काल में महातपा ऋषि की तपस्थली भी रही है। शंकर स्वामी का कहना है कि वरुणावत पर्वत के हर स्थान पर तीर्थ विराजमान हैं। लेकिन जब से ज्ञाणजा गांव में प्राकृतिक गुफा मिली है आसपास के ग्रामीण उत्साहित है। क्योंकि पर्यटन विभाग द्वारा जिले में टूरिज्म के लिए गुफाओं की एक साइट तैयार की जा रही है, जिसमें इस गुफा को भी शामिल किया गया है। यह गुफा उत्तरकाशी जिला मुख्यालय से महज 10 किलोमीटर की दूरी पर है और पंचकोसी यात्रा के मुख्य पड़ाव पर है। क्षेत्र पंचायत सदस्य तनुजा नेगी ने ग्रामीणों की भावनाओं के अनुरूप पुरातत्व विभाग से गुफा में मिली मूर्तियों के संरक्षण की मांग की है। इसके बाद ही पर्यटन विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों ने ज्ञाणजा गांव पहुंच कर गुफा का निरीक्षण किया था।

वेदों और पुरणों में भी वरुणावत पर्वत का उल्लेख मिलता है, 8 साल पहले वरुणावत पर्वत के शीर्ष पर बसे ज्ञानजा गांव में व्यासकुंड के पास विधि-विधान के साथ भगवान वेदव्यास की गुफा का जीर्णोद्धार किया गया था, शिंखलेश्वर धाम के श्रीमंत शंकर स्वामी महाराज और स्वामी महिमानंद महाराज ने ज्ञानजा गांव के लोगों के साथ विशेष पूजा-अर्चना व हवन के बाद वेद व्यास की मूर्ति गुफा में स्थापित की थी।

पंचकोसी वारुणी परिक्रमा

हर साल चैत्र मास की त्रयोदशी को पंचकोसी वारुणी परिक्रमा के तहत वरुणावत पर्वत की पैदल परिक्रमा की जाती है। करीब 15 किलोमीटर लंबी इस पदयात्रा के पथ पर बड़ेथी संगम स्थित वरुणेश्वर, बसूंगा में अखंडेश्वर, साल्ड में जगरनाथ और अष्टभुजा दुर्गा, ज्ञाणजा गांव में ज्ञानेश्वर और व्यास कुंड, वरुणावत शीर्ष पर शिखरेश्वर तथा विमलेश्वर महादेव, संग्राली में कंडार देवता, पाटा में नर्वदेश्वर मंदिर में जलाभिषेक और पूजा-अर्चना का सिलसिला चलता है। वरुणावत से उतरकर श्रद्धालु गंगोरी में अस्सी गंगा और भागीरथी के संगम पर स्नान के बाद विभिन्न मंदिरों में पूजा-अर्चना एवं जलाभिषेक कर उत्तरकाशी के काशी विश्वनाथ मंदिर पहुंचकर यात्रा संपन्न करते हैं। स्कंद पुराण के केदारखंड में कहा गया है कि वरुणावत पर्वत की सच्चे मन से पैदल परिक्रमा करने पर श्रद्धालुओं की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं और हजारों तीर्थों की यात्रा का पुण्य लाभ मिलता है। मान्यता यह भी है कि इस यात्रा को पूर्ण करने वाले व्यक्ति को 33 करोड़ देवी देवताओं की पूजा-अर्चना का पुण्य लाभ मिलता है। क्योंकि वरुणावत पर्वत को देवी-देवताओं का निवास स्थान माना जाता है। पंचकोसी वारुणी परिक्रमा मार्ग पर बड़ेथी संगम पर वरुणेश्वर महादेव, बसूंगा में बासू कंडार, साल्ड में जगन्नाथ एवं अष्टभुजा ज्वाला देवी, ज्ञाणजा में ज्ञानेश्वर महादेव एवं व्यास कुंड, वरुणावत शीर्ष पर शिखरेश्वर, राजराजेश्वरी एवं विमलेश्वर महादेव, संग्राली में कंडार देवता, पाटा में नर्मदेश्वर महादेव, गंगोरी त्रिवेणी घाट पर गंगेश्वर, लक्षेश्वर, उज्ज्वला देवी, महिषासुर मर्दिनी, कंडार देवता, परशुराम, अन्नपूर्णा, भैरव, गोपेश्वर महादेव, शक्ति मंदिर, हनुमान मंदिर, कीर्तेश्वर महादेव, काशी विश्वनाथ एवं मणिकर्णिका घाट स्थित गंगा मंदिर पड़ते हैं। पुराणों में यहां भगवान परशुराम एवं महर्षि वेदव्यास द्वारा तपस्या किए जाने का उल्लेख भी मिलता है।

वरुणावत पर्वत के अस्तित्व पर खतरा

पौराणिक महत्व के वरुणावत पर्वत जहां 33 करोड़ की देवी-देवताओं का वास माना जाता है वो इतना संवेदनशील है कि वर्षाकाल में यहां तबाही मचती है। इसलिए भूगर्भ वैज्ञानिक मान रहे है कि वरुणावत पर्वत के अस्तित्व पर खतरा मंडराता रहता है। बरसात में पर्वत से लगातार होने वाले भूस्खलन को रोकने के लिए कृत्रिम पहाड़ की परत लगाकर वरुणावत को स्थिर करने की कोशिश भी हो चुकी है। भूगर्भ वैज्ञानिकों का कहना है कि वरुणावत पर हजारों टन ऐसा मलबा है जो आसपास की आबादी के लिए खतरा है। वर्ष 2003 में हुए भारी भूस्खलन के बाद हजारों लोग यहां से घर छोड़कर जा चुके थे। क्योंकि लैंडस्लाइड से 600 से भी अधिक घर टूट चुके थे। करोड़ों की संपत्ति स्वाहा हो चुकी थी। गंगोत्री-यमुनोत्री का द्वार माना जाने वाला उत्तरकाशी शहर पहाड़ों की तलहटी में बसा है। भागीरथी नदी इसके केंद्र में है। मानसून के समय वरुणावत की घाटी में बड़ी आबादी खतरे की जद में रहती है। भूगर्भ वैज्ञानिक और विशेषज्ञ चेतावनी दे चुके हैं कि पहाड़ की ढलान और ऊंची चोटियों को मजबूत करके ही खतरा टाला जा सकता है। उत्तरकाशी में 1991 में भूकंप ने भी वरुणावत पर्वत को पूरा हिला दिया था, उसमें दरारें आने के साथ बारिश से बड़े-बड़े गड्ढों में पानी भर गया था। इससे पहाड़ कई जगहों से धंसना शुरू हो गया था। गंगा भागीरथी में 1978 में बाढ़ से भयानक विनाशलीला हुई थी।

- **शिंखलेश्वर महादेव धाम के संत श्रीमंत शंकर स्वामी का दावा है कि पुराणों के अनुसार भगवान वेद व्यास के हिमालय में दो स्थान हैं, पहला बदरीनाथ धाम के माणा गांव में अलकनंदा और सरस्वती नदी के बीच है, जहां पर वेद व्यास जी ने चार वेदों और महाभारत की रचना की थी, दूसरा वरुणावत पर्वत पर ज्ञानजा गांव में व्यास कुंड के पास है जहां 18 पुराणों का संकलन किया था।**
- **वरुणावत पर्वत जहां 33 करोड़ की देवी-देवताओं का वास माना जाता है वो इतना संवेदनशील है कि वर्षाकाल में यहां तबाही मचती है, इसलिए भूगर्भ वैज्ञानिक मान रहे है कि वरुणावत पर्वत के अस्तित्व पर खतरा मंडराता रहता है, बरसात में पर्वत से लगातार होने वाले भूस्खलन को रोकने के लिए कृत्रिम पहाड़ की परत लगाकर वरुणावत को स्थिर करने की कोशिश भी हो चुकी है।**

ज्ञाणजा गांव की प्रकृति नेगी

उत्तरकाशी जिला इतना संवेदनशील है फिर भी वरुणाघाटी क्षेत्र के ज्ञाणजा गांव की प्रतिभाशाली बेटी प्रकृति नेगी ने अपनी मेहनत, लगन और दृढ़ संकल्प के दम पर उत्तराखंड लोक सेवा आयोग यानी परीक्षा 2024 में शानदार सफलता हासिल करते हुए गृह विभाग में पुलिस उपाधीक्षक जैसे प्रतिष्ठित पद हासिल किया। प्रकृति नेगी, बड़ेथी में होटल व्यवसायी रविंद्र नेगी की बेटी हैं, उनकी इस उपलब्धि से न केवल उनका परिवार बल्कि पूरा गंगोत्री विधानसभा क्षेत्र और समूचा उत्तराखंड गौरवान्वित है। दुर्गम और संवेदनशील गांव की बेटी ने यह सफलता वर्षों की कठिन मेहनत, अनुशासन, मजबूत इच्छाशक्ति और परिवार के निरंतर सहयोग से ही हासिल की है। प्रकृति नेगी क्षेत्र की उन बेटियों और बेटों के लिए प्रेरणा हैं जो बिना मेहनत के सब कुछ हासिल करना चाहते हैं।

छिपा हुआ रत्न है गांव सारी

उत्तराखंड राज्य के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित सुरम्य सारी गांव प्रसिद्ध देवरिया ताल की ओर जाने वाले पर्वतारोहियों के लिए बेहतर स्थान है, समुद्र तल से लगभग 2,000 मीटर की ऊंचाई पर बसा यह गांव अपनी मनमोहक प्राकृतिक सुंदरता, शांत वातावरण और पारंपरिक ठेठ गढ़वाली संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है, सारी गांव अपने आकर्षक घरों, सीढ़ीदार खेतों और गर्मजोशी भरे आतिथ्य सत्कार के साथ गढ़वाली लोगों की पारंपरिक जीवनशैली का प्रतीक है।

अफजल फौजी
नैनीताल

उत्तराखंड के गांवों में हरी-भरी वादियां, बादलों से ढके पहाड़, शांत झीलें, शोर करते झरने, घने जंगल, बर्फ की चादर ओढ़े पर्वतमाला वन्यजीवों के साथ जड़ी बूटी और स्थानीय संस्कृति खान-पान, त्योहार, रीति-रिवाजों का खूबसूरत संगम देखने को मिलेगा। उत्तराखंड के गांवों की सादगी, ताजी हवा और मनमोहक नजारे शहर की भागदौड़ से दूर सुकून के कुछ पल बिताने वालों के लिए एक दम परफेक्ट होते हैं। अगर आप नेचर लवर्स हैं या ऑफबीट डेस्टिनेशन की तलाश कर रहे हैं तो उत्तराखंड राज्य के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित सुरम्य सारी गांव, प्रसिद्ध देवरिया ताल की ओर जाने वाले पर्वतारोहियों के लिए बेहतर स्थान है। समुद्र तल से लगभग 2,000 मीटर (6,600 फीट) की ऊंचाई पर बसा यह गांव अपनी मनमोहक प्राकृतिक सुंदरता, शांत वातावरण और पारंपरिक ठेठ गढ़वाली संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। सारी गांव अपने आकर्षक घरों, सीढ़ीदार खेतों और गर्मजोशी भरे आतिथ्य सत्कार के साथ गढ़वाली लोगों की पारंपरिक जीवनशैली का प्रतीक है। गांववासी मुख्य रूप से कृषि और पशुपालन में व्यस्त रहते हैं और वे आगंतुकों का खुले दिल से स्वागत करते हैं, साथ ही उन्हें अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की झलक भी दिखाते हैं। दिवाली, होली और स्थानीय मेले जैसे त्योहार यहां बड़े उत्साह के साथ मनाए जाते हैं, जो इस क्षेत्र की जीवंत परंपराओं, लोकगीतों, लोकनृत्यों को प्रदर्शित करते हैं। सारी गांव आने वाले पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षणों में से एक है देवरिया ताल, जो गांव से लगभग 3 किलोमीटर दूर ऊंचाई पर बनी झील है। देवरिया ताल तक की ट्रेकिंग अपेक्षाकृत आसान है और इसे कुछ ही घंटों में पूरा किया जा सकता है, इसलिए यह नौसिखियों और परिवारों के लिए उपयुक्त है। यह रास्ता हरे-भरे जंगलों से होकर गुजरता है और आसपास के पहाड़ों के मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है, जिनमें राजसी चौखंबा और केदारनाथ चोटियां भी शामिल हैं। देवरिया ताल पहुंचने पर, पर्वतारोहियों को झील के निर्मल जल में बर्फ से ढकी चोटियों का मनमोहक प्रतिबिंब दिखाई देता है, जो मनमोहने वाला दृश्य होता है। इस झील का पौराणिक कथाओं में भी उल्लेख मिलता है। मान्यता है कि यह वही स्थान है जहां महाभारत काल में पांडवों से यक्ष ने प्रश्न पूछे थे। इसलिए सारी गांव रुद्रप्रयाग जिले का एक छिपा हुआ रत्न है, जो प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध संस्कृति और रोमांच का एक अनूठा संगम है। चाहे आप प्रकृति प्रेमी हों, संस्कृति के अंवेषक हों या ट्रेकिंग के शौकीन हों, सारी गांव आपको एक शांत और समृद्ध अनुभव करता है जो गढ़वाल हिमालय के सार को समाहित करता है।

शिव को समर्पित मंदिरों की श्रृंखला

सारी गांव के आसपास का क्षेत्र जैव विविधता से भरपूर है, जिसमें विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे वनस्पति और जीव-जंतु पाए जाते हैं। जंगलों में ओक, रोडोडेंड्रोन और पाइन जैसी प्रजातियां पाई जाती हैं, जो गांव और ट्रेकिंग मार्गों को एक हरे-भरे स्वच्छ वातावरण के दर्शन कराती है। पक्षी प्रेमी हिमालयी मोनाल, चील और विभिन्न प्रकार के तीतर सहित कई प्रजातियों के पक्षियों को देख सकते हैं। इस क्षेत्र में हिरण, लंगूर और कभी-कभी तेंदुए जैसे वन्यजीव भी देखने को मिल जाते हैं। सारी गांव से ही पर्यटक चोपटा घूमने के लिए जा सकते हैं। चोपटा को भारत का मिनी स्विट्जरलैंड कहा जाता है। यह सारी गांव से लगभग 25 किलोमीटर दूर स्थित है। यह हरे-भरे घास के मैदानों और घने जंगलों से घिरा एक खूबसूरत हिल स्टेशन है। चोपटा से तुंगनाथ (विश्व का सबसे ऊंचे शिव मंदिर) और चंद्रशिला शिखर (जहां से हिमालय के मनोरम दृश्य दिखाई देते हैं) की ट्रेकिंग शुरू की जा सकती है। 3,680 मीटर की ऊंचाई पर स्थित, तुंगनाथ मंदिर भगवान शिव को समर्पित सबसे ऊंचा मंदिर है। चोपटा से तुंगनाथ तक की ट्रेकिंग मध्यम रूप से 4 किलोमीटर की चुनौतीपूर्ण हो सकती है। यह मंदिर पंच केदार का हिस्सा है और इसका पौराणिक महत्व है। चंद्रशिला, जिसका अर्थ है चंद्रमा की चट्टान। यह तुंगनाथ पर्वतमाला का शिखर है, जो लगभग 4,000 मीटर की ऊंचाई पर है। चंद्रशिला की यात्रा के दौरान हिमालय के चारों ओर से 360 डिग्री के मनमोहक दृश्य दिखाई देते हैं, इनमें नंदा देवी, त्रिशूल, केदार शिखर, बंदरपुंछ और चौखंबा जैसी चोटियां शामिल हैं। सारी गांव से लगभग 20 किलोमीटर दूर उखीमठ एक छोटा सा कस्बा है, जिसका धार्मिक महत्व बहुत अधिक है। यह भगवान केदारनाथ का शीतकालीन निवास स्थान है और सर्दियों के महीनों में केदारनाथ मंदिर से देवता को यहां लाया जाता है। उखीमठ में स्थित ओंकारेश्वर मंदिर एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है।

देवरिया ताल पहुंचने पर झील के निर्मल जल में बर्फ से ढकी चोटियों का मनमोहक प्रतिबिंब दिखाई देता है, जो मनमोहने वाला होता है, इस झील का पौराणिक कथाओं में भी उल्लेख मिलता है, मान्यता है कि यह वही स्थान है जहां महाभारत काल में पांडवों से यक्ष ने प्रश्न पूछे थे, इसलिए सारी गांव रुद्रप्रयाग जिले का एक छिपा हुआ रत्न है, जो प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध संस्कृति और रोमांच का एक अनूठा संगम है।

रोहिणी बुग्याल कैंपिंग के लिए बेस्ट

मध्यमहेश्वर मंदिर पंच केदार का हिस्सा है। मध्यमहेश्वर मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और 3,497 मीटर की ऊंचाई पर है। मध्यमहेश्वर का ट्रेक थोड़ा चुनौतीपूर्ण है, लेकिन यह मनोरम दृश्यों से होकर गुजरता है, जो इसे ट्रेकर्स और तीर्थयात्रियों दोनों के लिए आनंददायक बनाता है। रोहिणी बुग्याल, देवरिया ताल के रास्ते में रमणीय घास का मैदान है। यह कैंपिंग के लिए एक आदर्श डेस्टिनेशन है और आसपास की घाटियों तथा पहाड़ों के सुंदर दृश्य के दर्शन करता है। हरे-भरे घास के मैदान प्रकृति की गोद में एक सुकून भरा दिन बिताने के लिए एकदम उपयुक्त है। पंच केदार श्रृंखला का एक और मंदिर, कल्पेश्वर, भगवान शिव को समर्पित है और दुर्गम घाटी में स्थित है। यह एकमात्र पंच केदार मंदिर है जहां पूरे वर्ष दर्शन किए जा सकते हैं। इस मंदिर की अनूठी विशेषता यहां पूजी जाने वाली भगवान शिव की जटा (बालों की प्रतिमा) है। सारी गांव से लगभग 50 किलोमीटर दूर रुद्रप्रयाग, अलकनंदा नदी के पंच प्रयागों (पांच संगमों) में से एक है। यह अलकनंदा और मंदाकिनी नदियों का संगम स्थल है। इस नगर का नाम भगवान शिव के नाम पर रखा गया है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे यहां रुद्र रूप में प्रकट हुए थे।

सारा गांव में होम स्टे का कारोबार

रुद्रप्रयाग जिले में तुंगनाथ, चोपता ट्रैक पर मौजूद सारी गांव उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में ग्रामीण पर्यटन और स्वरोजगार की मिसाल कायम करता है। सारी गांव में करीब 50 से ज्यादा होम स्टे संचालित हो रहे हैं। जिसमें 300 से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार मिल रहा है। सारी गांव में होम स्टे की शुरुआत, 1999 में माउंटेन गाडड मुरली सिंह नेगी ने की थी। तब उन्होंने अपने पुराने घर की मरम्मत करके इस क्षेत्र में ट्रैकिंग के लिए आने वाले पर्यटकों को ठहरने और खाने की सुविधा शुरू की थी। चूंकि यहां वर्ष भर पर्यटकों की आवाजाही रहती है, इसलिए जल्द ही अन्य लोगों ने भी अपने परंपरागत घरों के दरवाजे पर्यटकों के लिए खोल दिए। ग्रामीण शुरुआत से ही, पर्यटकों को पहाड़ी जीवनशैली के अनुरूप आवास और भोजन उपलब्ध कराते आ रहे हैं। जो पर्यटकों को नया अनुभव देते हैं। 40 से ज्यादा होम स्टे पर्यटन विभाग में पंजीकृत भी हैं। कई लोगों ने प्रदेश सरकार की दीन दयाल उपाध्याय पर्यटक होम स्टे योजना के तहत भी होम स्टे शुरू किए हैं। ग्रामीण कैलाश भट्ट का कहना है कि एक साल में करीब 7 से 8 हजार पर्यटक होम स्टे में ठहरने के लिए आ ही जाते हैं। इस स्वरोजगार के कारण सारी गांव में पलायन की समस्या बहुत कम है। आसपास के बाकी गांवों के विपरीत सारी गांव पूरी तरह जीवंत बना हुआ है। रुद्रपयाग जिले के दौरे पर पहुंचे उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी भी सारी गांव के एक होम स्टे में रात्रि विश्राम कर चुके हैं। मुख्यमंत्री ने गांव में पयर्टन और स्वरोजगार के मॉडल की सराहना भी की थी। सारी गांव के होम स्टे में ठहरकर पर्यटक स्थानीय जीवनशैली का अनुभव कर सकते हैं। अधिकांश होम स्टे में बुनियादी सुविधाएं मिल जाती है। मसलन घर का बना भोजन जो स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्री से तैयार किया जाता है। सादगी और अपनापन सारी गांव में ठहरने के आकर्षण को और बढ़ा देते हैं। रुद्रप्रयाग से सारी गांव की दूरी लगभग 60 किलोमीटर है। सारी गांव की आबादी की बात करे तो गांव में करीब 200 परिवारों के लगभग 1200 सदस्य हैं।

चंद्रशिला की यात्रा में हिमालय के चारों ओर से 360 डिग्री के दृश्य दिखाई देते हैं, इनमें नंदा देवी, त्रिशूल, केदार शिखर, बंदरपुंछ और चौखंबा जैसी चोटियां हैं, सारी गांव से लगभग 20 किलोमीटर दूर उखीमठ एक छोटा सा कस्बा है, जिसका धार्मिक महत्व बहुत अधिक है, यह भगवान केदारनाथ का शीतकालीन निवास स्थान है और सर्दियों में केदारनाथ मंदिर से देवता को यहां लाया जाता है।

सारी गांव आने का बेहतर समय

सारी गांव घूमने और देवरिया ताल तक ट्रेकिंग करने का सबसे अच्छा समय मार्च से जून और सितंबर से नवंबर तक का है। इस दौरान मौसम सुहावना रहता है, आसमान साफ रहता है और तापमान मध्यम रहता है। मानसून के मौसम (जुलाई से अगस्त) में भारी बारिश होती है, जिससे रास्ते फिसलन भरे हो जाते हैं, जिससे चलने में मुश्किल होती है। कई बार भूस्खलन से रास्ते बंद भी हो जाते हैं। सर्दियों में दिसंबर से फरवरी के बीच काफी ठंड होती है, बर्फबारी के कारण ट्रेकिंग चुनौतीपूर्ण हो जाती है, लेकिन साहसी लोगों को एक अनूठा, बर्फीला दृश्य देखने को मिलता है। सारी गांव पहुंचने के लिए पर्यटक ऋषिकेश से अपनी यात्रा शुरू कर सकते हैं, जो सड़क, रेल और हवाई मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। निकटतम हवाई अड्डा देहरादून में जॉली ग्रांट हवाई अड्डा है, जो ऋषिकेश से लगभग 20 किलोमीटर दूर है, जबकि निकटतम प्रमुख रेलवे स्टेशन हरिद्वार और ऋषिकेश में है। ऋषिकेश से टैक्सी किराए पर ली जा सकती है या उखीमठ जाने वाली बस ले सकते हैं। उखीमठ पहुंचने के बाद, सारी गांव 20 किलोमीटर दूर है, जहां स्थानीय टैक्सी या साझा जीप से पहुंचा जा सकता है। सड़कें आमतौर पर अच्छी तरह से रखरखाव की गई हैं, जो गढ़वाल हिमालय के मनोरम दृश्यों का आनंद लेने का अवसर देती हैं। ●

पीएम बनने की हसरत अधूरी...

पिंक शर्ट और बादामी पेंट पहन कर लम्बी सी कार में सवार होकर मैं शपथ लेने रामलीला मैदान पहुंच जाता हूं, शपथ ग्रहण का मुहूर्त आता है तभी पत्नी जोर-जोर से चिल्लाती है भोर हो गई उठ जाओ, बस सपना टूट जाता है और मेरा पारा आसमान पर चढ़ जाता है, मेरे मुंह से पत्नी के लिए बद...दुआ निकलती है और सोचता हूं कि इडियट अगर थोड़ी देर और सोने देती तो मैं प्रधानमंत्री की शपथ भी ले ही लेता।

खुद को खानदानी प्रधानमंत्री मानने वाले परिवार के चश्मे-ए-चिराग का सोशल मीडिया पर आजकल ट्रेंड चल रहा है कि 'कितने लोग मेहरे बेटहे को बारत का पीएम बनता देखना चाहते है?' कितने लोग मुझे पीएम बनाना चाहते हैं? कितने लोग मेरे भाई को पीएम की कुर्सी पर बैठे देखना चाहते हैं? ऐसी पोस्ट पर कैसे कैसे कमेंट आते हैं बताने काबिल भी नहीं है। खैर सोशल मीडिया पर ऐसी पोस्ट पढ़ते पढ़ते मुझे भी नींद आ गई। अब नींद में ख्वाब देखना मेरा लोकतांत्रित और मौलिक अधिकार है। संवधािन में मुझे सपना देखने की इजाजत दी है। अब मैं अपने सपने का शपथ पूर्वक वर्णन करता हूं...। मई-जून की गर्मी, चिल्ड एसी रूम वाह क्या मजा है, मैं एक 56 साल का लेखक, कवि, व्यंगकार और ज्यादातर विदेश में रहने वाला पार्ट टाइम पॉलिटिशियन हूं। एक दिन अपनी पार्टी से चुनाव लड़ने के बाद घर लौटता हूं। चुनाव की थकान उतारने के लिए सोडा चखना और एक गिलास के साथ महंगी वाली विदेशी बोतल। सामने टीवी पर समाचार में चुनाव के नतीजे, मेरी अपनी पार्टी सबसे आगे चल रही है, फाइनल नतीजे घोषित होते हैं, मेरी पार्टी 99 सीट जीत लेती है, मेरे दरबारी जय जयकार कर रहे हैं, पटाखे फोड़ रहे हैं, मिठाई बांट रहे हैं, हर तरफ से बधाई मिल रही है, क्या बात है अपनी पार्टी ने तो कमाल ही कर दिया। सपने का अब पार्ट टू शुरू होता है- अपनी पार्टी वाले मुझे नेता मान लेते हैं, मुझे प्रधानमंत्री बनाने का प्रस्ताव पास कर देते हैं, रामलीला मैदान में विशाल पंडाल लग जाता है, देशी विदेशी मेहमान आने लगते हैं। मैं भी पिंक शर्ट और बादामी पेंट पहन कर लम्बी सी कार में सवार होकर शपथ लेने रामलीला मैदान पहुंच जाता हूं, शपथ ग्रहण का मुहूर्त आता है तभी पत्नी जोर-जोर से चिल्लाती है भोर हो गई उठ जाओ। बस फिर क्या सपना टूट जाता है और मेरा पारा आसमान पर चढ़ जाता है। मेरे मुंह से पत्नी के लिए बद...दुआ निकलती है और सोचता हूं कि इडियट अगर थोड़ी देर और सोने देती तो मैं प्रधानमंत्री की शपथ भी ले ही लेता। अगले दिन हमने भरी महफिल में अपने यार-दोस्तों को बताया कि यार सवेरे-सवेरे पत्नी ने मूड खराब कर दिया। जाहिर है सामने से सवाल आएगा ही आएगा, क्यों, क्या हुआ। तब हमने वृतांत सुनाया, भाई मैं प्रधानमंत्री की शपथ लेने ही वाला था कि पत्नी ने जगा दिया और मेरा पीएम बनने का सपना अधूरा रह गया। कमोवेश मेरे जैसा सपना हर पार्ट टाइम, फुल टाइम पॉलिटिशियन देख रहा है। इसलिए संविधान कहता है कि सपना देखों तो बड़ा देखो जैसे मैंने देखा है। ये इंसान का मौलिक और लोकतांत्रिक अधिकार है इस पर कोई भी सरकार रोक नहीं लगा सकती।

> **मोबाइल पर एक रील देख रहे थे उसमें एक नारा लग रहा था, 'सारे यादव देश के जो बचे वो लालू, अखिलेश के...' मतबल लोग भी ना जाने कैसे-कैसे नेताओं की खिल्ली उड़ाते हैं, जरा सोचिए क्या 2029 में सारे यादव देश के हो जाएंगे, तो फिर फैमिली के बचे-खुचे यादव ही लालू और अखिलेश के रहेंगे, वैसे सपा में तो यादव का मतलब परिवार ही है।**

प्रदीप भट्ट
लेखक मेरठ

डिंपल भाभी का ख्वाब

पीएम की कुर्सी की तरफ लालच भली नजरों से देखने वालों में से ममता का नाम तो लगभग डीलिट सा हो गया है। लिहाजा मार्केट में केजरी बाबू खुद को बतौर पीएम लॉन्च करने का षड्यंत्र तन-मन-धन से रच रहे हैं। अपने चमचों से महौल बनवा रहे हैं। कॉकरोचों को काम पर लगा रखा है। नशे में उड़ते पंजाब की मेहरबानी हुई तो पीएम की कुर्सी पर सवार होने का सपना भी पूरा हो जाएगा। लेकिन एक अड़चन है वो ये कि दिल्ली में एक के साथ एक फ्री देने के चक्कर में कहीं तिहाड़ जाकर पीएम यानी परमानेंट मुल्जिम की शपथ न लेनी पड़ जाए। शपथ ये कि मैं पूरी इमानदारी से मुल्जिमों वाले सारे काम करुंगा। खैर माहौल बनाने में क्या जाता है तिलचट्टे पूरी शिद्दत से लगे हैं। राहुल भैया तो पीएम की कुर्सी के लिए 2014 से हर पांच साल में एक बार लॉन्च हो ही जाते हैं, पर लॉन्चिंग में ईवीएम ब्रेक लगा देती है। अखिलेश भैया बचे है उनका भी एक-आध दरबारी शिगूफा छोड़ देता है कि अखिलेश में क्या कमी है वो भी पीएम बन सकते हैं। इससे राहुल की टेंशन बढ़ जाती है। क्योंकि जैसे राहुल को विरासत में नेतागिरी मिली है वैसे ही अखिलेश को विरासत में यूपी की सियासत मिली है। राजनीति में दोनों की क्वालिफिकेशन में तनिक सा अंतर है वो ये कि राहुल जिस परिवार से है उससे तीन प्रधानमंत्री रहे हैं और अखिलेश के पापा मुलायम सिंह यादव सिर्फ यूपी के सीएम रहे हैं। अखिलेश अपना जलवा यूपी में 2024 के लोकसभा चुनावों में दिखा चुके हैं। तब से डिम्पल भाभी के दिमाग में भी एक सवाल रैंग रहा है कि मैं अपने हसबेंड अखिलेश के साथ पीएम के बंगले में क्यों नहीं रह सकती? क्या कमी है अखिलेश में। डिम्पल भाभी की पार्टी के तो 37 देवर संसद में हैं। इसलिए बात तो ठीक ही है इस देश में और प्रदेशों में कई बार ये फार्मूला अपनाया भी गया है, तो उम्मीद लगाए रखने में क्या जाता है जी। जय हो डिंपल भाभी की!

सारे यादव देश के जो बचे अखिलेश के

हम कल ही मोबाइल पर एक रील देख रहे थे उसमें एक नारा था, 'सारे यादव देश के जो बचे वो लालू और अखिलेश के...' मतबल लोग भी ना जाने कैसे-कैसे नेताओं की खिल्ली उड़ाते हैं। जरा सोचिए 2029 में सारे यादव देश के हो जाएंगे तो फिर फैमिली के यादव ही लालू और अखिलेश के रह जाएंगे। सपा में तो यादव का मतलब परिवार से ही है। अब रहे केजरीवाल तो भैया दिल्ली जीता तो लगा पूरे देश का दिल जीत लिया। बस फिर क्या था दिमाग की नसे ऐसी फटी की मुकाबला सीधे पीएम मोदी से करने लगे, चैलेंज पे चैलेंज बस मोटा भाई की सनक गई और मोटा भाई ने सोने का पानी चढ़ी परात से पानी हटा दिया और भरे चौक में परात पीतल की रह गई। अब भाई साहब जो खुद अपनी सीट हार बैठा उसकी राजनीति में कितनी औकात बचती है खुद सोच लो। पर जो शांति से बैठ जाए वो केजरीवाल नहीं हो सकता सो एक लम्बे पॉज के बाद उन्हें फिर खुजली मची तो गटर से निकल कर कॉकरोच-कॉकरोच खेलने लगे। आप को क्या लगा मैं झूठ बोल रहा हूं, तो भैय्या खुद ही गूगल में उगल कर देख लो ये रांका-पांका, दीपके-सिपके सौरभ सब आप के तिल चट्टे पाए जाएंगे। ये बेचारे तो गटर की गंदगी हैं इन्हें जंतर मंतर पर लॉन्च करने वाले रियल डायरेक्टर तो केजरीवाल ही हैं। खैर केजरीवाल भी अपनी खुजली मिटा रहे हैं, उनका एक साथी पुनः जेल यात्रा पर है और इनका नंबर भी आने वाला है। क्योंकि केजरीवाल ने खुद उगल दिया कि मैं दिमागी नक्सली हूं।

राहुल का कॉन्फिडेंस

अब बचे राहुल गांधी भाई 140 साल बूढ़ी पार्टी के इकलौते वारिश हैं जिन्हें हारने से डर नहीं लगता और जीत से कोई फर्क नहीं पड़ता। जीतना या हारना कोई बुरी बात थोड़े ही है। इसलिए भाई साहब इस बंदे का कॉन्फिडेंस इतना हाई है कि उसे टच करने भर से 440 वोल्ट का झटका लगता है। मतलब उसके कॉन्फिडेंस को छूना खतरे से खाली नहीं है। फिर भी दरबारी लगे पड़े हैं भाई को पीएम बनाने में। वैसे कहूं तो राहुल भैया भले ही चार साल बाद सीनियर सिटीजन बन जाएं पर उनके चाहने वाले आज भी युवा नेता मानते हैं। माने भी क्यों न वो गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं, पहले कुर्ता पाजामा पहन कर आते थे। फिर किसी तांत्रिक ने बता दिया कि कुर्ता पाजामा पीएम बनने में बाधा डाल रहा है। इसलिए तांत्रिक की बताई सफेद टी-शर्ट और बादामी कलर की पेंट में राहुल भैया घुस गए। 2024 में 99 सीट जीत कर लगा कि अब तो पीएम बन ही गए। खुशी के मारे सारे दरबारी पापकॉन की तरह उछलने लगे। पर अरमानों पर पानी तब फिरा जब मोदी जी ने पीएम की शपथ ले ली। खैर अब तांत्रिक ने बताया है कि पिंक शर्ट पहनकर जेन-जी बन जाओ देश का युवा दिवानों की तरह पीछे-पीछे होगा और 2029 में तो पीएम बना ही देगा। खैर अब देखते हैं आगे क्या होता है। क्योंकि गांधी-नेहरू खानदान के चश्मे-ए-चिराग है तो पीएम की कुर्सी पर हक तो बनता ही है।

अब महाकुंभ में ही पाप धुलेंगे

आजकल क्या पिछले दो साल से कुछ नेताओं में प्रधानमंत्री बनने की होड़ लगी हुई है, होड़ लगनी भी चाहिए, क्योंकि जम्हूरियत में ये तो सबका हक है। लेकिन जिस तरह विपक्षी पार्टियों के नेता आपस में एक-दूसरे को धकियाते-लतियाते हुए पीएम की कुर्सी से चिपकने का ख्वाब देख रहे हैं उससे लगता है जैसे सब अपने अपने पाप इस गंगा मैया रूपी कुर्सी पर बैठकर धो लेना चाहते हैं। वास्तव में अगर पाप किए हैं तो धुल सकते हैं लेकिन महापाप किया है तो नहीं धुलेगा। उसके लिए महाकुंभ का इंतजार करना पड़ेगा। पापी नेताओं को कुंभ और गंगा से

> - **अखिलेश अपना जलवा यूपी में 2024 के लोकसभा चुनावों में दिखा चुके हैं, तब से डिम्पल भाभी के दिमाग में भी एक सवाल रैंग रहा है कि मैं अपने हसबेंड अखिलेश के साथ पीएम के बंगले में क्यों नहीं रह सकती? क्या कमी है अखिलेश में, डिम्पल भाभी की पार्टी के तो 37 देवर संसद में हैं।**
> - **मार्केट में केजरी बाबू खुद को बतौर पीएम लॉन्च करने में लगे है, कॉकरोचों को महौल बनाने के लिए लगा रखा है, लेकिन एक अड़चन है वो ये कि दिल्ली में एक के साथ एक फ्री देने के चक्कर में कहीं तिहाड़ जाकर पीएम यानी परमानेंट मुल्जिम की शपथ न लेनी पड़ जाए।**

नफरत है इसलिए नेताओं की हरकतों को देखकर ऐसा बिलकुल भी नहीं लगता कि ये अपने कर्मों के बलबूते सत्ता हासिल कर पाएंगे। राज्यों के चुनाव में इक्का दुक्का तुक्का लगाकर जरूर अपनी आत्मा को संतुष्ट कर सकते हैं। भाजपा की बिहार और उसके बाद बंगाल की भारी भरकम जीत या उसे फिर विपक्ष का सूपड़ा साफ करना भी कह सकते हैं या इंडी की भिंडी बनना भी कह सकते हैं। इससे एक बात तो तय है कि विपक्ष को भाजपा से कुछ नहीं वरन बहुत कुछ सीखने की जरुरत है, अगर वो सीखना चाहें तो। लालू का तेजस्वी हो या ममता का अभिषेक, हार के बाद लालू पहले भी चारा चोर थे और बाद में भी लेकिन गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले उनको किसी ने चोर-चोर कहकर बेइज्जत नहीं किया, किंतु बंगाली मानस तो बाकी देश से आगे की सोचता है सो लोगों ने ममता की हार को उनके भतीजे अभिषेक के प्रति उनके मोह पर ममत्व लुटाने को माना। अब स्थिति ये कि गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले में टीएमसी नेताओं को चोर-चोर का भूत पीछा छोड़ने को तैयार नहीं है। वैसे इस स्थिति पर मुझे 1972 की राजेश खन्ना की पिक्चर राजा रानी का एक गाना वो भी जोर से याद आ रहा है 'जब अंधेरा होता है, आधी रात के बाद, एक चोर निकलता है, काली सी सड़क पे, एक आवाज आती है चोर...चोर...।' पर टीएमसी की मुसीबत ये है कि चोर-चोर की आवाज रात में नहीं उन्हें दिन में सुननी पड़ रही है।

परिवर्तन

पहाड़ की वो शादियां...

पहाड़ की शादी में दूल्हे के लिए न तो सजी हुई घोड़ी होती है, न बग्घी अथवा विंटेज कार, बल्कि बाराती और दूल्हा पगडंडी के रास्ते ही ढलान से उतरते और चढ़ाई के रास्तों से होते हुए, वधु के घर तक पहुंचते हैं, पहाड़ों की बारात में हर कोई अपनी मस्ती में जरूर देखने को मिलेगा, भले ही रास्ता चाहे जैसा हो किंतु पहाड़ी ढोल दमाऊं की धुन पर बाराती चढ़ाई और ढलान वाले रास्तों पर डांस करते हुए पूरा एंजॉय करते हैं।

अनिल ममगाई
वरिष्ठ पत्रकार

उत्तराखंड के पहाड़ी और दूरदराज वाले गांवों में शादियां भी सीमित संसाधनों में ही हो जाती है। यानी ना कोई बड़ा पंडाल, न जगमगाती लाइटों की सजावट न ही खाने के फेंसी स्टाल। इसलिए मैदानी इलाकों की शादी और पहाड़ी क्षेत्र के गांवों की शादी में बड़ा अंतर देखा जाता है। मैदानी इलाकों में घर से कुछ ही दूरी पर विवाह स्थल, वैंक्विट हॉल, रिजॉर्ट, धर्मशाला जैसी सुविधा मिल जाती है पर पहाड़ों की शादी में ये सब इतनी आसानी से नहीं मिलते। इसके लिए पहाड़ के लोगों को शहर जाना पड़ता है। पहाड़ की शादी में तो दूल्हे के लिए न तो सजी हुई घोड़ी होती है, न बग्घी अथवा विंटेज कार, बल्कि बाराती और दूल्हा पगडंडी के रास्ते ही ढलान से उतरते और चढ़ाई के रास्तों से होते हुए, वधु के घर तक पहुंचते हैं। विवाह की सभी रस्में दिन में ही पूरी करनी होती है, शाम तक बारात विदा करनी होती है। हालांकि पहाड़ों की बारात में हर कोई अपनी मस्ती में जरूर देखने को मिलेगा। भले ही रास्ता चाहे जैसा हो किंतु पहाड़ी ढोल दमाऊं की धुन पर बाराती चढ़ाई और ढलान वाले रास्तों पर डांस करते हुए पूरा एंजॉय करते हैं। छोटे बच्चों से लेकर बड़े तक इस मस्ती में शामिल होते हैं। इसके विपरीत मैदानी क्षेत्र की शादी में बाराती और दूल्हा सजी विटेंज कार, घोड़ी, बग्घी में बैठकर विवाह स्थल तक पहुंचते हैं पर पहाड़ों की शादी में बाराती और दूल्हा जब पगडंडी, ढलान और ऊंचाई वाले रास्तों से हो कर आगे बढ़ते हैं तो दूर से ही पता चल जाता है कि बारात अभी कहां है और कितनी देर में कन्या पक्ष के द्वार तक पहुंचेगी। इसके हिसाब से वधु पक्ष के लोग अपनी तैयारी शुरू कर देते हैं। अगर किसी को उत्तराखंड की मूल संस्कृति को देखना है और यहां की संस्कृति का आनंद लेना है तो एक बार यहां की शादियों में जरूर शिरकत करनी चाहिए। कई गांव ऐसे हैं, जो सड़क से एक-दो किलोमीटर नीचे या ऊपर बसे हुए हैं। इन रास्तों से गुजरते हुए लोग कन्या पक्ष के घर तक पहुंचते हैं। कुछ गांव के लोग आज भी इस परंपरा को जीवित रखे हुए हैं। पहाड़ी शादी में उत्तराखंड का कल्चर देखने को मिल जाएगा।

पहाड़ों पर वधु की तलाश होती थी

उत्तराखंड की शादियों में जो रस्में होती थी, उनमें से कई आज पुरानी यानी बूढ़ी हो गई हैं। ऐसा भी कह सकते हैं कि बदलते दौर में अपनी सार्थकता खो चुकी हैं। किसी भी समाज की संस्कृति, रीति-रिवाज व रस्में देश, काल एवं परिस्थिति के अनुरूप होती हैं। यदि काल के प्रवाह में पुराने रीति-रिवाज या रस्में बदलती हैं तो यह संस्कृति का परिशोधन होता है। समाज में जब दूल्हा-दुल्हन की तलाश करने का तरीका ही बदल गया हो तब रस्मों में बदलाव स्वाभाविक हो जाता है। यदि कोई समाज पारंपरिक रस्मों को नए दौर में उपयुक्तता जाने बिना अपना रहा है तो इसे पुरानी परंपराओं को ढोना ही कहा जाएगा, पारंपरिक रस्मों के साथ जीना नहीं। एक दौर था जब पहाड़ी परिवार बेटे के लिए एक सुंदर, सुशील, घरेलू व खेती के काम में दक्ष कन्या की खोज में जाया करते थे, कन्या पक्ष द्वारा वर की तलाश अशोभनीय मानी जाती थी। वर व कन्या पक्ष के बुजुर्गों की रजामंदी से ही शादी तय हो जाती थी, जिसमें वर व कन्या की सहमति जरूरी नहीं होती थी। समय के साथ समाज में थोड़ी जागरूकता आई और वर व कन्या की सहमति को प्राथमिकता दी जाने लगी, वर व कन्या के विवाह से पूर्व परस्पर विचार विमर्श तक बात आगे बढ़ी। लेकिन आज पहाड़ी क्षेत्र में भी वर व कन्या स्वयं अपने जीवनसाथी का चयन करने लगे हैं और माता-पिता या परिवार की भूमिका केवल औपचारिक सहमति तक रह गई है। पुराने समय में शादी से पहले कई रस्में होती थी। मसलन कुंडली मिलान, परिवार की पृष्ठभूमि, परिवार की आर्थिक व सामाजिक स्थिति जैसी बहुत सी बातें अनुकूल होने पर ही वर पक्ष, कन्या पक्ष के घर रिश्ता लेकर जाता था। रिश्ता तय होने की स्थिति में आगे के प्रोग्राम तय होते थे, जिसे क्षत्रिय लोग परस्पर वार्तालाप तथा ब्राह्मण वाक्यदान कहते थे। इसका मतलब लड़के पक्ष को लड़की देने या विवाह करने के लिए वचन देने से होता है। इसके बाद रिश्ता पक्का करने के लिए कुछ माह पहले भी टीका लगाने की रस्म होती थी, जिसमें क्षत्रिय वर्ग पालक की सब्जी का आंठा (गड्डी) तथा दही की ठेकी लेकर कन्या का टीका करते थे जिसे साग धरण की रस्म कहा जाता था और ब्राह्मण मिठाई, फल आदि ले जाते थे जिसे पिठ्या लगूण यानी टीका लगाना कहा जाता था। इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि मैदानी क्षेत्र में कन्या पक्ष के लोग वर की तलाश करते है जबकि पहाड़ी क्षेत्र में इसका उलटा है। यहां लड़के के लिए दुल्हन की तलाश की जाती थी। ग्रामीण क्षेत्र में कन्या यानी होने वाली बहू का खेत के काम में निपूर्ण होने को प्राथमिकता दी जाती थी।

> **पहाड़ी गांव के नौजवान पंगत में बैठाकर जिस प्यार से खाना वितरित करते थे वो प्यार आज के 'बुफे सिस्टम' में नहीं मिल सकता, कन्या के विवाह में बारातियों को विशेष सम्मान दिया जाता था, जब तक सारे बारातियों ने भोजन ग्रहण न कर लिया हो तब तक किसी की क्या मजाल कि कोई घराती या गांव वाला भोजन कर ले, यहां तक कि बच्चे भी नहीं।**

दो दिन भी लगते थे बारात पहुंचने में

इंगेजमैंट, सगाई अथवा रोका जैसे शब्द पहाड़ी समाज का हिस्सा नहीं थे। पहाड़ों पर शादी से पहले कन्या को टीका लगाने के बाद शादी की तैयारियां शुरू हो जाती थी। आज भी दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में यातायात के साधनों का अभाव है। इसलिए बारात कई किलोमीटर पैदल चलती है। अगर कन्या पक्ष का गांव बहुत ज्यादा दूर होता था तो बारात को कई बार रास्ते में रात्रि पड़ाव भी करना पड़ता था। कुछ बारातों को दो या तीन की पैदल यात्रा भी करनी पड़ती थी। आज की तरह तब मोबाइल फोन नहीं होते थे। संदेश पहुंचाने का एक मात्र साधन चिट्ठियां या संदेशवाहक ही होते थे। चिट्ठी पहुंचने में तो कई दिन या सप्ताह भी लग जाता था। इसके अलावा संदेश पहुंचाने के लिए परिवार या पड़ोस के किसी व्यक्ति को संदेश वाहक बनाकर भेजना होता था। बारात रवानगी से पहले वर पक्ष के दो विश्वनीय लोगों को कन्या पक्ष के घर भेजकर आश्वस्त किया जाता था कि बारात उनके पीछे आ रही हैं। पहाड़ी गांवों में शादी के समय अनेकता में एकता का भाव देखने को मिलता था। बारात के स्वागत से लेकर उनके आदर सतकार और खाने आदि की जिम्मेदारी पूरा गांव उठाता था। गांव के लोग चूल्हों के लिए लकड़ी इकट्ठा करने से लेकर घर की साफ-सफाई, रंगाई, पुताई, बर्तनों की व्यवस्था तक हर काम में हाथ बंटाते थे। सब मिल जुलकर ही बारात के लिए खाना तैयार करते थे। बाराती हों या घराती सभी को जमीन पर पंगत में बैठाकर खाना खिलाया जाता था। बारात के खाने में पूड़ी, दाल का बड़ा, सूजी का हलवा या खीर, दो-एक सब्जी, अमचूर की खटाई और ज्यादा से ज्यादा रायता रहता था कुछ शादियों में साधारण खाना दाल-भात, सब्जी रोटी और मटठा तथा बूंदी के लड्डू होते थे। गांव के नौजवान पंगत में बैठाकर जिस प्यार से खाना वितरित करते थे वो प्यार आज के 'बुफे सिस्टम' में नहीं मिल सकता। कन्या के विवाह में बारातियों को विशेष सम्मान दिया जाता था। जब तक सारे बारातियों ने भोजन ग्रहण न कर लिया हो तब तक किसी की क्या मजाल कि कोई घराती या गांव वाला भोजन कर ले। यहां तक कि बच्चे भी नहीं।

पहाड़ी शादियों में सुआल पथाई आवश्यक रस्म

शादी में हल्दी की रस्म तब भी थी और आज भी है, बल्कि तब यह आज से ज्यादा जरूरी थी, आज तो इसका औचित्य परंपरा को ढोने जैसा है। दरअसल हल्दी व मेंहदी की रस्म कोई धार्मिक अनुष्ठान का हिस्सा न होकर वास्तव में दूल्हा-दुल्हन की खूबसूरती बढ़ाने के लिए किया जाने वाला एक उपक्रम भर है।

> **50 से 80 तक के दशक में दूल्हे को झगुला पहनाया जाता था, झगुला गांव में किसी एक के पास ही होता था, जिसे मांगकर पूरे गांव का काम चलता था, दूल्हे के सिर पर मुकुट और मुंह पर झालरदार सेहरा, हाथ में शीशा और दांतों में रुमाल दबाए रखना अनिवार्य था, दांतों के बीच रुमाल दबाने के पीछे मकसद यह था कि दूल्हा किसी से कुछ बोल न पाए, ऐसी मान्यता थी कि शादी के समय दूल्हा यदि बोलेगा तो उसकी संतान गूंगी होगी।**

हल्दी व जौं के आटे तथा सरसों के तेल का उबटन का प्रयोग चेहरे व शरीर की खूबसूरती बढ़ाना है। क्योंकि तब सौंदर्य प्रसाधनों का चलन नहीं था, तो हल्दी का उबटन चेहरे पर निखार लाने के लिए लगाया जाता था, लेकिन आज तमाम सौंदर्य प्रसाधनों के बावजूद यह रस्म बदस्तूर जारी है। पहाड़ी शादियों में सुआल पथाई आवश्यक रस्म मानी जाती है। शादी के दिन अथवा एक दिन पूर्व गणेश पूजन के बाद सुआले व लाडू बनाए जाते हैं। लाडू, तिल व चावल के आटे को भूनकर तथा गुड़ के मिश्रण से लड्डूनुमा आकार में बनाए जाते हैं और सुआले चावल के बारीक पीसे आटे को गुथकर तथा पूड़ी से कुछ बड़े आकार में बहुत पतले बेले जाते हैं और फिर धूप में सुखाये जाते हैं। जब इनका पानी सूख जाता है, तो सुहागिन महिलाओं द्वारा इनको घी अथवा तेल में तला जाता है। इस रस्म में नजदीकी रिश्तेदार तथा पड़ोस की महिलाओं को आमंत्रित कर सुआल पथाई में सहयोग लिया जाता है। इन सुआलों व लाडू को लम्बे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। जब मिठाई जैसी चीजें चलन में न रही होंगी तो दूर-दूर तक भेजने के लिए बुजुर्गों की यह सोच रही होगी, लेकिन आज के समाज में सुआले व लाडू रस्म अदायगी भर रह गई है। इन्हें अब देवी-देवताओं को भोग लगाने तथा वर व कन्या पक्ष के बीच आदान प्रदान की औपचारिकता भर है। इसकी जगह रेडिमेड मिठाई जिसे भाजी भी कहते हैं, के डिब्बों ने ले ली है।

आधुनिक दौर में आधुनिक शादी

50 से 80 तक के दशक की बात करें तो दूल्हे को झगुला पहनाया जाता था। झगुला गांव में किसी एक के पास ही होता था, जिसे मांगकर पूरे गांव का काम चलता था। दूल्हे के सिर पर मुकुट और मुंह पर झालर लटका सेहरा, हाथ में शीशा और दांतों में रूमाल दबाए रखना अनिवार्यता थी। दांतों के बीच रूमाल दबाने के पीछे मकसद यह था कि दूल्हा इस बीच किसी से कुछ बोल न पाए। ऐसी मान्यता थी कि शादी के समय दूल्हा यदि बोलेगा तो उसकी संतान गूंगी होगी। फिर दूल्हे के लिए झगुले का स्थान कोट तथा पीली धोती ने लिया। यह फैशन भी नहीं टिक पाया तो दूल्हा को सूट में उतारा जाने लगा, लेकिन आज शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा दूल्हे की पहली पसंद बन चुकी है। महिला संगीत की बात करें तो पहले सुआल पथाई के समय ही मांगलिक गीत गाए जाते थे। महिला संगीत का चलन शहरी सभ्यता से आया है। बल्कि अब तो इसे महिला संगीत न कहकर महिला नृत्य का कार्यक्रम कहा जाना चाहिए। क्योंकि शुरूआत में महिलाओं द्वारा एक-दो गीत गाने की रस्म अदायगी कर बाकी सब 'डीजे' में ही गाने बजाए जाते हैं। महिलाएं केवल इन्हीं फिल्मी, पंजाबी तथा पहाड़ी गानों पर नृत्य करती हैं। पहाड़ी गाने भी ऐसे जिनमें पहाड़ीपन की झलक नहीं दिखती, गानों का चयन ही कुछ इस तरह होता है, जिसमें 'फास्ट म्यूजिक' के साथ थिरकने की गति हो। 'कान में डबल झुमका' अथवा 'फ्वां बागा रे' जैसे गीतों में पहाड़ी संगीत का लालित्य तो कहीं नजर नहीं आता। यह बदलाव पहाड़ी शादियों में आया है। गांव वाले भी शहर आकर शादियां कर रहे हैं। लड़कियों की शर्तें भी सामने आने लगी है। पहाड़ की लड़कियां सरकारी नौकरी करने वाले को प्राथमिकता दे रही है। नई पीढ़ी लकीर की फकीर बनना नहीं चाहती इसलिए बदलते परिवेश में जो पुरानी रस्में अप्रासंगिक हो गई है उनके पीछे नहीं पड़ना चाहिए। कहने का मतलब ये नहीं है कि पुरानी परंपराओं व रस्मों से विद्रोह करें, आवश्यकता इस बात की है कि जो रस्म परिस्थितिवश पहले प्रासंगिक थी और अब अप्रासंगिक हो चुकी है, उनमें समयानुकूल तब्दीली लाना आवश्यक है।

किलोंग मंडी होगी गुलजार

1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद सीमापार से व्यापार बंद हो गया और यह ऐतिहासिक किलोंग मंडी वीरान ही नहीं हुई बल्कि उजड़ गई थी, अब करीब छह दशक बाद 'सीमा दर्शन योजना' और बेहतर सड़क संपर्क के कारण किलोंग मंडी एक बार फिर सुर्खियों में है, प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक महत्व के कारण यह पर्यटकों, इतिहास प्रेमियों व स्थानीय लोगों के आकर्षण का केंद्र बन रही है।

हरिश चंद्र अंडोला
दून यूनिवर्सिटी

उत्तराखंड के चमोली जिले की नीती घाटी में भारत-चीन सीमा पर स्थित किलोंग मंडी एक बार फिर गुलजार होने जा रही है। यह मंडी कभी भारत-तिब्बत के बीच व्यापार का सबसे बड़ा केंद्र हुआ करती थी। यहां दूर-दूर से व्यापारी ऊन, नमक, जड़ी-बूटियां और अन्य सामान लेकर पहुंचते थे। लेकिन 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद सीमापार से व्यापार बंद हो गया और यह ऐतिहासिक मंडी वीरान ही नहीं हुई बल्कि उजड़ गई थी। अब करीब छह दशक बाद 'सीमा दर्शन योजना' और बेहतर सड़क संपर्क के कारण किलोंग मंडी एक बार फिर सुर्खियों में है। प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक महत्व के कारण यह स्थान पर्यटकों, इतिहास प्रेमियों और स्थानीय लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बनता जा रहा है। नीती गांव से 35 किलोमीटर आगे मखमली बुग्यालों से घिरी किलोंग मंडी तक पहुंचने के लिए आज भी प्रशासन की अनुमति लेनी पड़ती है, लेकिन अब सड़क मार्ग से जुड़ने के बाद स्थानीय लोग यहां पहुंच रहे हैं और अपनी पुरानी यादों को ताजा कर रहे हैं। स्थानीय जनप्रतिनिधियों और युवाओं को भी इस मंडी के बारे में धीरे-धीरे पता चलने लगा है। ब्लॉक प्रमुख जोशीमठ का कहना है कि यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हमारी पुरानी विरासत फिर से जीवंत हो रही है। स्थानीय निवासी लक्ष्मण फरकिया बताते है कि किलोंग मंडी हमारे पूर्वजों की विरासत है। बचपन से उन्होंने अपने पूर्वजों से इस मंडी के बारे में सुना था, लेकिन यहां आने का अवसर अब मिला है। आज भी यह क्षेत्र भारतीय सेना की निगरानी में पूरी तरह सुरक्षित है। वर्ष 1962 से पहले यही मार्ग कैलाश-मानसरोवर यात्रा का भी प्रमुख रास्ता हुआ करता था, जो युद्ध के बाद बंद हो गया था। यही वो मंडी है जहां तिब्बत से लोग नमक लेकर आते थे। यहां से हमारे पूर्वज मसाले और चीनी ले जाते थे, पूरा बाजार लगता था। किंतु समय के साथ यह किलोंग मंडी उजड़ गई। अब केंद्र की मोदी सरकार की सीमा दर्शन योजना से हमें अपनी जड़ों से जुड़ने का मौका मिल रहा है।

भोटिया समाज की विरासत

भोटिया जनजाति समाज के लोग आज भी किलोंग मंडी को अपनी सबसे बड़ी और प्राचीन विरासत मानते हैं। कभी यहां पैदल रास्तों से भेड़ों व कच्चरों पर माल लाद कर लाया जाता था और व्यापार होता था। वर्तमान समय में यहां सड़क पहुंच चुकी है, इसलिए प्रशासन की विशेष अनुमति से यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है। आने वाले समय में इसे और विकसित करने की योजनाएं बनाई जा रही है। जोशीमठ के उप जिलाधिकारी चंद्रशेखर वशिष्ठ का कहना है कि हम किलोंग मंडी को पर्यटन के नक्शे पर लाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देगा, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित करेगा। एक समय जो जगह व्यापार का केंद्र थी, आज वो यादों और पर्यटन का केंद्र बन रही है। किलोंग मंडी सिर्फ एक मंडी नहीं, भोटिया समाज की पहचान भी है। जिसे अब फिर से संवारने की जरूरत है। भोटिया समुदाय का पारंपरिक जीवन पशुपालन, ऊनी वस्त्र बुनाई, खेती और जड़ी-बूटी संग्रह करने पर आधारित है। पुराने समय में यह समुदाय तिब्बत के साथ व्यापार भी करता था। पुरुष मुख्यतः पशु चराने और पर्वतीय कृषि कार्यों में लगे होते हैं, जबकि महिलाएं भेड़ के बालों की ऊन तैयार करने और बुनाई में विशेष दक्षता रखती हैं। मेहनत, सादगी और आत्मनिर्भरता भोटिया जीवनशैली की सबसे बड़ी पहचान हैं। संगीत और नृत्य भोटिया समुदाय की संस्कृति की आत्मा माने जाते हैं। त्योहारों और खास मौकों पर लोग ढोल, दमुआ और झाली जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों की थाप पर उत्साह से नृत्य करते हैं। उनके लोकगीतों में प्रेम, प्रकृति और जीवन की सरल लेकिन गहरी कहानियां होती हैं, जो सामूहिक आनंद, एकता और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक हैं।

> **किलोंग मंडी भोटिया समाज की विरासत है, आज की युवा पीढ़ी ने अपने पूर्वजों से इस मंडी के बारे में सुना था, लेकिन यहां आने का अवसर अब मिल रहा है, आज भी यह क्षेत्र भारतीय सेना की निगरानी में पूरी तरह सुरक्षित है, वर्ष 1962 से पहले यही मार्ग कैलाश-मानसरोवर यात्रा का भी प्रमुख रास्ता हुआ करता था, जो युद्ध के बाद बंद हो गया था।**

प्रशासन की अनुमति आवश्यक

1962 के बाद इतिहास के पन्नों में सिमटने वाली किलोंग मंडी तक सीमांत क्षेत्र के लोगों का दल हाल ही में गया था, जिसने पुरानी यादों को ताजा ही नहीं किया बल्कि अपने पूर्वजों की इस विरासत को देखकर उस समय की परिस्थितियों को समझने का प्रयास भी किया। सड़क बनने से किलोंग मंडी का प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों को आकर्षित करने लगा है। चारों ओर फैले हरे-भरे बुग्याल, हिमालयी पर्वत श्रृंखलाएं और शांत वातावरण इसे एक विशेष पर्यटन स्थल बना रहा है। क्योंकि यहां तक सड़क बन जाने से यात्रा पहले की तुलना में अधिक सुगम हो गई है। स्थानीय लोगों का मानना है कि यदि इस ऐतिहासिक स्थल का संरक्षण और प्रचार-प्रसार किया जाए तो किलोंग मंडी सीमांत पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण केंद्र बन सकती है। किलोंग मंडी केवल एक पुरानी व्यापारिक मंडी नहीं, बल्कि भारत-तिब्बत के ऐतिहासिक संबंधों, सीमांत संस्कृति और पूर्वजों की विरासत की जीवंत पहचान है। चारों ओर फैली समतल भूमि, ऊंचे पर्वत और शांत वातावरण इस स्थान को बेहद खास बनाते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक महत्व का यह संगम इसे उत्तराखंड के प्रमुख विरासत स्थलों में शामिल करता है। सीमा से सटे इस संवेदनशील क्षेत्र में आज भी भारतीय सेना की निगरानी रहती है। सुरक्षा कारणों से यहां जाने के लिए स्थानीय प्रशासन की अनुमति आवश्यक है। इससे एक ओर क्षेत्र की सुरक्षा सुनिश्चित होती है तो दूसरी ओर नियंत्रित तरीके से पर्यटन को भी बढ़ावा मिल रहा है।

कैसे पहुंचे किलोंग मंडी?

किलोंग मंडी भारत-चीन सीमा के नजदीकी क्षेत्र का दौरा करना चाहते हैं, तो सबसे पहले पर्यटकों को इनर लाइन परमिट बनवाना होता है। यह परमिट जोशीमठ के एसडीएम कार्यालय से ऑफलाइन बनवाया जा सकता हैं। इसके अलावा ऑनलाइन भी आवेदन किया जा सकता है। परमिट के लिए सभी को अपना यात्रा संबंधी आवश्यक विवरण देना जरूरी होता है। यदि आप अपने निजी वाहन कार, बाइक या स्कूटी से यात्रा कर रहे हैं, तो वाहन की पूरी जानकारी दर्ज करनी होगी। पर्यटक जोशीमठ से भी वाहन बुक करके इस यात्रा को शुरू कर सकते हैं। आमतौर पर लोग समूह बनाकर भारत-चीन सीमा के नजदीकी क्षेत्रों के दर्शन के लिए आते हैं। जोशीमठ से किलोंग मंडी की दूरी करीब 120 किलोमीटर है। यहां से आगे नीती गांव के पास तक जा सकते हैं, लेकिन इसके लिए भी निर्धारित नियमों और अनुमति जरूरी है। इस यात्रा के लिए मेडिकल फिटनेस अनिवार्य है क्योंकि ऊंचाई वाले क्षेत्र में जाने से पहले स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक शर्तों को पूरा करना जरूरी होता है।

नीती गांव के लोग हंसमुख हैं

नीती गांव भारत का पहला गांव है। उत्तराखंड का सीमांत नीती गांव होने के कारण इसका अपना प्राचीन इतिहास है। चमोली में भारत-चीन सीमा पर स्थित नीती गांव में आज भी अतिथि देवो भवः की परंपरा निभाई जाती है। भोटिया जनजाति के लोग बहुत हंसमुख और खुश दिल होते हैं। इनके पास पर्यटकों को सुनाने के लिए हजारों कहानियां और अनुभव हैं। स्थानीय ग्रामीण गांव में पहुंचने वाले अतिथियों के आदर सत्कार में किसी भी तरह की कोई कमी नहीं रखते, बल्कि दिल खोलकर अतिथियों का स्वागत करते हैं। नीती गांव में पहुंचने वाले प्रत्येक अतिथियों के स्वागत के लिए गांव के 2 परिवारों को 6 माह के लिए जिम्मेदारी दी जाती है। इस समय नीती घाटी में 125 परिवार निवास करते हैं। भारत-चीन सीमा पर होने के कारण नीती गांव को द्वितीय रक्षा पंक्ति भी कहा जाता है। स्थानीय ग्रामीण सैनिकों के सुख-दुख में हर समय तैयार रहते हैं। नीती गांव में पहुंचने वाले पर्यटकों और सरकारी कर्मचारियों के रहने-खाने का जिम्मा गांव के दो परिवार उठाते हैं। इस आवभगत को स्थानीय भाषा में 'बारी' कहा जाता है। इसके साथ ही गांव के मंदिर में पूजा अर्चना के साथ ही अन्य सभी सार्वजनिक व्यवस्थाओं का निर्वहन करने की भी उसी परिवार की जिम्मेदारी होती है। नीती गांव में खाने-पीने के लिए होटल की सुविधा नहीं है। ऐसे में यहां आने वाले पर्यटकों के लिए गांव के स्थानीय लोग ही व्यवस्था करते हैं। जिसका उल्लेख गांव के रजिस्टर में भी किया जाता है। पूर्व में बारी निभाने वाले परिवारों के नाम भी वर्ष के हिसाब से रजिस्टर में दर्ज होते रहते हैं। नीती गांव में भोटिया जनजाति के अलावा कुछ अनुसूचित जाति के लोग भी रहते हैं, जो शीतकाल शुरू होते ही निचले स्थानों पर आ जाते हैं। शीतकाल में नीती घाटी बर्फ से ढक जाती है। तब यहां सिर्फ सेना व आईटीबीपी रहती है। पर्यटक नीती गांव तक ग्रीष्मकाल में ही आवाजाही कर सकते हैं। हालांकि, ग्रीष्मकाल में भी यहां ठंड ही रहती है। ऊंची पर्वत श्रृंखलाओं की तलहटी में धौली गंगा के किनारे-किनारे होने वाला घाटी का सफर पर्यटकों रोमांच का भी अनुभूति कराता है। मान्यता है कि यहां से 15 किलोमीटर की दूरी पर तपोवन नामक स्थान है। द्रोणागिरी पर्वत पर संजीवनी लेने जाते समय हनुमान को यहीं कालनेमी राक्षस ने साधु भेष बनाकर भ्रमित किया था। तब हनुमान को उसका वध करना पड़ा था। इसलिए यह नीती घाटी रामायण काल की गवाह भी है। द्रोणागिरी पर्वत के दिव्य दर्शन यहां से होते है तो वहीं नीति गांव में छोटा अमरनाथ अर्थात टिम्मरसैंण महादेव के अद्वितीय दर्शन होते है। यदि थोड़ा भी सच्चा भाव है तो यह स्थान कुछ पलो के लिए आपको दूसरे लोक में ले जाने की क्षमता रखता है। ●

> - **पुराने समय में भोटिया समुदाय तिब्बत के साथ व्यापार करता था, पुरुष मुख्यतः पशु चराने और पर्वतीय कृषि कार्यों में लगे होते हैं, जबकि महिलाएं भेड़ के बालों की ऊन तैयार करने और बुनाई में विशेष दक्षता रखती हैं, मेहनत, सादगी और आत्मनिर्भरता भोटिया जीवनशैली की सबसे बड़ी पहचान हैं, संगीत और नृत्य भोटिया समुदाय की संस्कृति की आत्मा माने जाते हैं।**
> - **भारत-चीन सीमा पर स्थित नीती गांव में आज भी अतिथि देवो भवः की परंपरा निभाई जाती है, भोटिया जनजाति के लोग बहुत हंसमुख और खुश दिल होते हैं, इनके पास पर्यटकों को सुनाने के लिए हजारों कहानियां और अनुभव हैं, स्थानीय ग्रामीण गांव में पहुंचने वाले अतिथियों के आदर सत्कार में किसी भी तरह की कोई कमी नहीं रखते, बल्कि दिल खोलकर अतिथियों का स्वागत करते हैं।**

मंदिर में चढ़ावा स्वीकार नहीं

देहरादून-मसूरी के रास्ते में पड़ने वाला एक अनोखा शिव मंदिर है जहां दर्शनों के लिए एक सख्त शर्त है, शर्त ये कि कोई भी श्रद्धालु चढ़ावा नहीं चढ़ाएगा, मंदिर में श्रद्धालुओं को पैसा चढ़ाने की मनाही है, दान देने के लिए इस भव्य मंदिर में दान पात्र जैसी कोई व्यवस्था नहीं है, न ही दान स्वीकार करने के लिए कोई काउंटर बनाया गया है, बल्कि मोटे अक्षरों में चेतावनी लिखी है कि यहां पैसा चढ़ाने की सख्त मनाही है।

डा.वीरेंद्र पुष्पक
वरिष्ठ पत्रकार

उत्तराखंड को यूं ही देवभूमि नहीं कहा जाता। इसे देवभूमि इसलिए कहा जाता है क्योंकि हिमालय की गोद में बसे इस पहाड़ी राज्य के कण-कण में भगवान शिव के साथ 33 कोटि देवी देवताओं का वास है। उत्तराखंड की राजधानी देहरादून से कुछ ही दूरी पर एक ऐसा आलोकिक व अनोखा प्रकाशेश्वर महादेव शिव मंदिर हैं जहां दान देना सख्त मना है। पहाड़ों की रानी मसूरी के रास्ते में पड़ने वाला ये एक ऐसा शिव मंदिर है जहां दर्शनों के लिए एक सख्त शर्त है। शर्त यह है कि कोई भी श्रद्धालु किसी तरह का चढ़ावा नहीं चढ़ाएगा। यानी मंदिर में श्रद्धालुओं को पैसा चढ़ाने की मनाही है। दान देने के लिए इस भव्य मंदिर में दान पात्र जैसी कोई व्यवस्था नहीं की गई है। न ही दान स्वीकार करने के लिए कोई काउंटर आदि बनाया गया है। बल्कि मोटे-मोटे अक्षरों में चेतावनी लिखी है कि यहां पैसा चढ़ाने की सख्त मनाही है। यानी इस मंदिर में चढ़ावा न चढ़ाने की शर्त पर ही भगवान शिव के दर्शन होते हैं। जो इसे भारत के अन्य मंदिरों से अलग और अनोखा बनाता है। बावजूद इसके इस मंदिर में हर दिन भक्तों के लिए प्रसाद के तौर पर खीर और चाय की व्यवस्था की जाती है। मंदिर के संचालक कहते हैं कि यहां भक्तों से किसी तरह का दान नहीं लिया जाता लेकिन मंदिर में प्रवेश करने वाले सभी देवों के देव महादेव शिव भक्तों को प्रसाद के रूप में कढ़ी-चावल, दलिया या चाय आदि जरूर दिया जाता है। प्रसाद को तैयार करने में जितना भी खर्च आता है उसकी व्यवस्था स्वयं मंदिर संचालक करते हैं। हां इस मंदिर में भक्त महादेव के दर्शन करने के साथ कोई कीमती राशि रत्न खरीद सकते हैं। इन रत्नों की खरीददारी से जो भी पैसे जमा होता है उनका इस्तेमाल मंदिर के सदस्यों द्वारा मंदिर के सौन्दर्यीकरण, रखरखाव, प्रबंधन और प्रसाद के लिया किया जाता है। पहाड़ों की गोद में बसे इस शिव मंदिर से दून वैली का सुंदर नजारा दिखाई देता है। मंदिर के पीछे मालसी हिरण पार्क और मालसी आरक्षित वन क्षेत्र के हरे-भरे जंगल देख सकते हैं। जो पर्यटकों के मन को मोह लेते हैं।

सावन में भक्तों का तांता

प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर कोई पौराणिक शिव मंदिर नहीं है, बल्कि 1987 में यहां एक छोटा सा शिव मंदिर बनाया गया था। यहां कुछ साधु-संत ही शिव की आराधना करते थे। जिसके बाद 1990 में हरिद्वार के रहने वाले शिवदास मूलचंद खत्री ने इस मंदिर की देखरेख की जिम्मेदारी संभाली। बाद में देखते ही देखते सड़क किनारे इस छोटे से शिव मंदिर को एक भव्य शिव मंदिर का रूप मिलता चला गया। मंदिर की देखरेख करने वाले शिवदास मूलचंद खत्री कीमती रत्नों के व्यापारी हैं। जिनका मानना है कि मनुष्य के पास जो कुछ भी है, वह ईश्वर की कृपा से है। ऐसे में जो ईश्वर मनुष्य को जिंदगी में सब कुछ दे रहा है उस ईश्वर को मनुष्य आखिर क्या दान देगा? यही कारण है कि इस मंदिर में दान करने पर पूरी तरह प्रतिबंधित है। इस शिव मंदिर में आपको दीवारों पर 'नो डोनेशन' लिखा मिलेगा। यह मंदिर हरी-भरी पहाड़ियों के बीच सड़क के किनारे मसूरी-देहरादून मार्ग पर स्थित है। उत्तराखंड से लेकर पूरे भारत में कई शिव मंदिर हैं, लेकिन यह शिव मंदिर विशेष है इस मंदिर में हिंदू त्योहार शिवरात्रि और सावन में भक्तों का तांता लगा रहता हैं। पौराणिक 'शिव महापुराण' में उल्लेख है कि भगवान शिव जी को धतूरे के फूल, हरसिंगार व नागकेसर के सफेद पुष्प, सूखे कमल गट्टे, कनेर, कुसुम, आक, कुश आदि के फूल अतिप्रिय हैं। कहने का मतलब भगवान धन, ऐश्वर्य, छप्पन भोग आदि के नहीं, बल्कि प्रेम और सच्चे भाव के भूखे हैं। जो भी भक्त भगवान की सच्चे प्रेम भाव और सद्भावना के साथ भक्ति में लग जाता है उन्हें ही भगवान का आशीर्वाद प्राप्त होता है। देहरादून में पहाड़ों की रानी मसूरी रोड पर स्थित प्रकाशेश्वर महादेव शिव मंदिर भी इसी भाव का प्रतिबिंब है। श्री प्रकाशश्वर महादेव शिव मंदिर का मुख्य आकर्षण यहां स्थापित शिवलिंग है, जो दुर्लभ पत्थरों और स्फटिक के बने हुए हैं। स्फटिक एक प्रकार का बर्फ का पत्थर है, जो लाखों वर्ष बर्फ में दबे होने से बनता है। यह दिखने में चमकदार, पारदर्शी और कठोर होता है। श्री प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर अपनी अनूठी वास्तुकला के लिए भी जाना जाता है। पूरे मंदिर के ऊपर 140 से ज्यादा त्रिशूल बने हुए हैं। जो मंदिर की सुंदरता में चार चांद लगाते है। इस मंदिर की दीवारों को लाल और भगवा रंग से चित्रित किया गया है। बीच में काले रंग का एक झूला भी है। मंदिर में लगे शिलापट पर अंकित जानकारी के मुताबिक यह एक निजी प्रॉपर्टी है। इसका निर्माण शिवरत्न केंद्र हरिद्वार ने 1990-91 के दौरान कराया था। मंदिर के निर्माण कराने वाला योगीराज मूलचंद खत्री का परिवार है।

- **श्री प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर अपनी अनूठी वास्तुकला के लिए भी जाना जाता है, पूरे मंदिर के ऊपर 140 से ज्यादा त्रिशूल बने हुए हैं, जो मंदिर की सुंदरता में चार चांद लगाते है, इस मंदिर की दीवारों को लाल और भगवा रंग से चित्रित किया गया है। बीच में काले रंग का एक झूला भी है।**
- **श्री प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर निजी स्वामित्व वाला 40 वर्ष पुराना है, मंदिर की छत पर शिव के त्रिशूल देखे जा सकते हैं, जो इसकी अनूठी वास्तुकला का प्रमाण हैं, यह एक निजी तौर पर संचालित मंदिर है, इसलिए ही यहां धन दान करना वर्जित है, यह बात याद दिलाने वाले संदेश हर जगह लिखे हैं।**

निजी स्वामित्व वाला मंदिर

श्री प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर देहरादून जिले में घुमावदार मसूरी मार्ग पर है। बड़ी संख्या में शिव भक्त महादेव का आशीर्वाद लेने के लिए इस मंदिर में आते हैं। मंदिर परिसर में प्रतिदिन प्रातः कालीन और संध्याकालीन पूजा और आरती की जाती है। शिवरात्रि और सावन जैसे विशेष अवसरों पर भंडारा भोज का आयोजन किया जाता है और उपस्थित लोगों को प्रसाद वितरित किया जाता है। श्री प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर निजी स्वामित्व वाला है और लगभग 40 वर्ष पुराना है। मंदिर की छत पर शिव के त्रिशूल देखे जा सकते हैं, जो इसकी अनूठी वास्तुकला का प्रमाण हैं। चूंकि यह एक निजी तौर पर संचालित मंदिर है, इसलिए ही यहां धन दान करना वर्जित है। इस बात की याद दिलाने वाले संकेत हर जगह लगे हुए हैं। एक पुराने पेड़ की छाया में, मंदिर परिसर में एक शिवलिंग स्थापित किया गया है, और गर्भगृह में भगवान शिव की दिव्य प्रतिमा विराजमान है। शिव मंदिर का वातावरण इतना शांत और सुखद है कि आपको शांति का अनुभव होता है और आध्यात्मिक आनंद प्राप्त होता है। मंदिर के पास कुछ दुकानों में राशि चक्र से संबंधित आभूषण और रत्न बेचे जाते हैं। यहां पर्यटक खूबसूरत पहाड़ों के मनमोहक दृश्य का आनंद लेते हुए सुगंधित चाय का लुत्फ उठा सकते हैं। मंदिर प्रतिदिन सुबह 8.30 बजे से रात 9.30 बजे तक खुला रहता है। श्री प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर का पूरा भ्रमण करने के लिए आपको कम से कम एक घंटे का समय चाहिए होगा। मंदिर में फोटोग्राफी करना या रील बनाना प्रतिबंधित है, इसलिए यहां कैमरा ले जाना मना है। देहरादून और पहाड़ों की रानी मसूरी, कैम्पटीफॉल में हर साल देशभर से पर्यटकों की भारी भीड़ उमड़ती है। देहरादून से मसूरी जाने वाले पर्यटक इस मंदिर में अपने आराध्य भगवान शिव के दर्शन अवश्य करते हैं। देहरादून और मसूरी घूमने के लिए अक्टूबर से मई का समय सबसे अच्छा होता है। वैसे यहां की सर्दियों का आनंद भी ले सकते हैं या गर्मियों के शांत वातावरण का लुत्फ उठा सकते हैं। श्री प्रकाशेश्वर शिव मंदिर मसूरी रोड पर खाला गांव में है, जो देहरादून से मात्र 9 किलोमीटर दूरी पर है।

नेता हिंदुओं के मंदिरों पर तो सवाल उठाते हैं, लेकिन बाकी किसी धर्म के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत इसलिए नहीं कर पाते क्योंकि वोट बैंक खिसकने का खतरा रहता है, लेकिन अफसोस की बात ये है कि मंदिरों को कटघरे में खड़ा करने वाले भी ज्यादातर नेता हिंदू ही हैं, यानी वो अपने ही धर्म और धार्मिक स्थलों को बदनाम करने की साजिश सिर्फ सत्ता के लिए रच रहे हैं।

कैसे पहुंचे श्री प्रकाशेश्वर शिव मंदिर

देहरादून बस टर्मिनल और मंदिर के बीच की दूरी मात्र 8 किलोमीटर है। देहरादून स्थित जॉली ग्रांट हवाई अड्डा 34 किलोमीटर दूर है और देहरादून रेलवे स्टेशन 7 किलोमीटर दूर है। राजपुर जाने वाली बस से आप आसानी से मंदिर तक पहुंच सकते हैं, जो कुथल गेट पर रुकती है। देहरादून की प्रमुख कार रेंटल कंपनियों से कैब किराए पर लेकर आस-पास के स्थानों से एक रमणीय सड़क यात्रा का आनंद भी ले सकते हैं। देहरादून के श्री प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर में आकर भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त करें। दून घाटी से लेकर खूबसूरत सहस्त्रधारा रोपवे और झरने तक, देहरादून और मसूरी की यात्रा के दौरान आप सुकून और आध्यात्मिक अनुभव का आनंद ले सकते हैं। क्योंकि यह देहरादून के करीब सबसे लोकप्रिय धार्मिक स्थलों में से एक है और हरे-भरे वातावरण से परिपूर्ण पहाड़ियों के बीच स्थित है। मंदिर का मुख्य आकर्षण स्फटिक के पत्थर से बना शिवलिंग है। यहां से जगमगाती दून घाटी का सुंदर दृश्य दिखाई देता है। यह मनमोहक दृश्यों और आधुनिक सुविधाओं का एक आदर्श संगम है।

मंदिरों को बदनाम करने की साजिश

दान अथवा चंदा भगवान के लिए नहीं होता भगवान तो सच्ची सेवा, भावना और साफ दिल से किए गए छोटे-छोटे से कार्य भी प्रसन्न होते हैं। चढ़ावा या दान तो सिर्फ मंदिर की व्यवस्था और देखरेख के काम आता है। खैर अपने-अपने विचार है, वैसे भी आजकल मंदिरों में चढ़ावा चोरी के केस सामने आने से नया विवाद पैदा हो रहा है। मंदिरों में चढ़ावा चोरी की तो जैसे हवा सी चल रही है। पहले अयोध्या के श्रीराम मंदिर में चढ़ावा चोरी को लेकर बवाल हुआ। फिर केदारनाथ मंदिर में चढ़ावा चोरी की खबर आई और अब महाराष्ट्र में लाल बाग के राजा यानी गणपति के मंदिर में चोरी की खबर ने सनातनियों को हैरान किया है। इस तरह के विवाद सिर्फ मंदिरों और सनातन परंपरा को बदनाम करने के लिए राजनीतिक दलों द्वारा पैदा किए गए हैं। राजनेता हिंदुओं के मंदिरों पर तो सवाल उठाते हैं, लेकिन बाकी किसी धर्म के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत इसलिए नहीं कर पाते क्योंकि वोट बैंक खिसकने का खतरा रहता है। लेकिन अफसोस की बात ये है कि मंदिरों को कटघरे में खड़ा करने वाले भी ज्यादातर नेता हिंदू ही हैं। यानी वो अपने ही धर्म और धार्मिक स्थलों को बदनाम करने की साजिश सिर्फ सत्ता के लिए रच रहे हैं। चुनाव आने पर बहुत से राजनीतिक दलों के प्रमुख नेता चुनावी हिंदू बनने का ढ़ोंग भी रचते हैं, आजकल यूपी के सपा प्रमुख अखिलेश यादव भी चुनावी हिंदू बन कर अयोध्या श्रीराम मंदिर में चढ़ावा चोरी का मुद्दा उठा रहे हैं। यह बात अलग है कि अखिलेश के पिता मुलायम सिंह यादव ने मुख्यमंत्री रहते अयोध्या में सरयू नदी और सड़कों पर रामभक्तों का खून बहाया था। अखिलेश यादव और उनके परिवार का कोई सदस्य आज तक अयोध्या में रामलला के दर्शन करने नहीं गया। पब्लिक सब जानती है। ●

समीक्षा

अगले जन्म में पेड़ बनूंगा

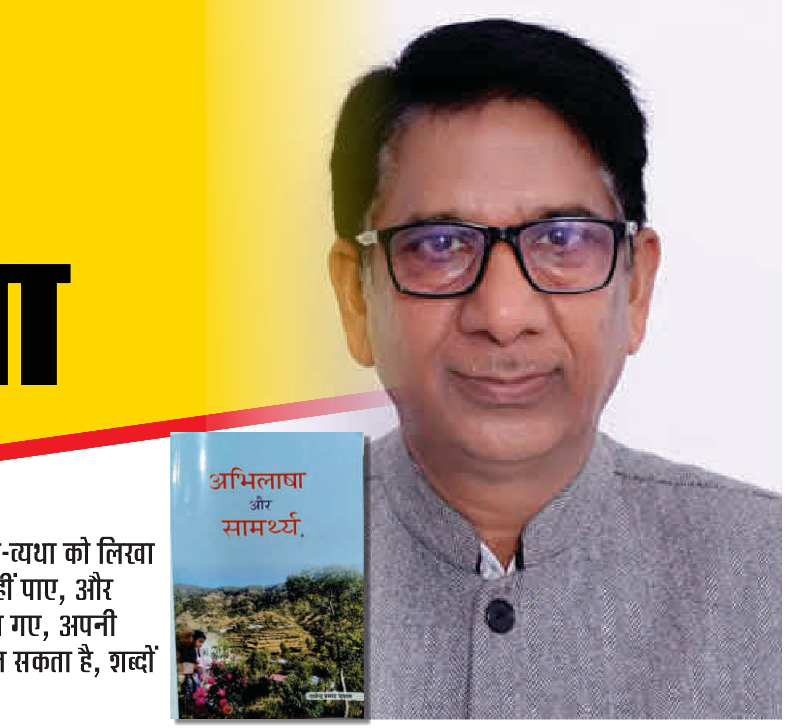

निःसंदेह प्रो.राजेंद्र जुयाल ने बहुत गहराई से अपनी जीवनीय कथा-व्यथा को लिखा है, वे भावों से इतने भरे लगे कि जो लिखना चाहते थे, वो लिख नहीं पाए, और जितना लिखा स्वभावगत संकोच के कारण उससे ज्यादा उसमें छिपा गए, अपनी जड़ों से छिटक जाने का यह दर्द इतना गहरा है कि मौन ही उसे बोल सकता है, शब्दों की अभिव्यक्ति की ताकत यहां 'चुप्प' होकर बाहर आती है।

अरुण कुकसाल
चामी, पौड़ी गढ़वाल

हम मसूरी के कुलड़ी बाजार में स्थित पंजाब नेशनल बैंक में पहुंचे। इसी बैंक में पिताजी चौकीदार थे। जब हम पहुंचे तो पिताजी बैंक के गेट पर कमर में कारतूसों की पेटी बांधे, हाथ में दो नाली बंदूक लिए खड़े थे। उन्हें हमारे आने की खबर नहीं थी। पिताजी का क्वाटर बैंक के पीछे था। इस कोठरी में कोई खिड़की नहीं थी। इंसान, हवा और रोशनी के आने-जाने के लिए सिर्फ दरवाजा था। अगले दस वर्ष मैंने पिताजी के साथ इसी कोठरी में बिताए। पिताजी तेजी से बुढ़ापे की तरफ अग्रसर तो थे ही, ऊपर से तेजी से बड़ी होती बेटियों के घर बसाने की चिंता से भी दबे थे। इन सबके बीच, वे रामचरित मानस के पाठ में ही संतोष तलाशते थे। मानस का पाठ करते हुए वे राम-सीता के सुख से सुखी और दुःख से दुःखी होते। इन दस वर्षों में पिताजी ने दोनों वक्त खाना बनाया, मुझे कभी बचा हुआ खाना नहीं दिया, न कभी अपनी जूठी थाली, गिलास धोने दिए। प्रो.राजेंद्र प्रसाद जुयाल की आत्मकथा 'अभिलाषा और सामर्थय' को पढ़ते हुए पूर्व में पढ़ी किताबें बोझों का गट्ठर (बी. एल. दनोसी), काऽरी तु कब्बि ना हाऽरि (ललित मोहन रयाल), मेरा जीवन प्रवाह (चमनलाल प्रद्योत), यादों का सफर (कुबेर सिंह कड़ाकोटी), चेतना के स्वर (प्रो. राजाराम नौटियाल), डड्वार (महेशानंद) मेरे मन-मस्तिष्क में चलचित्र की तरह चहल-कदमी करती रही। अपने पिता के केंद्र में लिखी ये किताबें बराबर बताती रही कि पिता के पैरों की नीचे की जमीन कितनी ही खुरदरी लगे, परिवार में जीने का जज्बां वहीं पनाह और उभार लेता है। इन आत्मसंस्मरण व आत्मकथाओं में अपने पिता से स्वतः हासिल प्रबल जीवनीय आशावाद और आस्था को प्रमुखता से रेखांकित किया गया है। यह पैतृक वैचारिक विरासत इन लेखकों के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अर्जित सफलता की धुरी रही है। इसी वर्ष (2026) में प्रकाशित राजेंद्र प्रसाद जुयाल की आत्मकथा 'अभिलाषा और सामर्थय' पिता-पुत्र की ऐसी ही जोड़ी की मुलाकात पाठकों से कराती है। आज मैं अक्सर सोचता हूं, बिना औपचारिक शिक्षा के पिताजी की इतनी व्यापक और धैर्य पूर्ण जीवन दृष्टि जीवन के संघर्षों से ही बनी थी। मेरी बहने और मैं अपने साधनहीन माता-पिता की आकांक्षाओं, जद्दोजहद और वेदना को भी समझते थे। हम जानते थे कि वे हमारा जीवन आसान करना चाहते हैं, सबको पढ़ाना और पालन-पोषण चाहते हैं, पर साधनहीनता और सामाजिक रूढ़ियां उनकी और हमारी बेड़ियां थी।

एक नजर प्रो.राजेंद्र प्रसाद जुयाल पर

प्रो.राजेंद्र प्रसाद जुयाल सुपरिचित अर्थशास्त्री हैं। प्रमुखतः नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग, श्रीनगर (गढ़वाल) और नानक चंद एंग्लो संस्कृत महाविद्यालय, मेरठ में उन्होंने शोध एवं अध्यापन की सेवाएं दी हैं। वे विगत पांच दशकों से अध्यापन, शोध, राष्ट्रीय शैक्षिक नीतियों एवं प्रबंधन तथा हिमालयी विकास के चर्चित अध्येता रहे हैं। आर्थिक नियोजन, प्रशासन और शिक्षण पर उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हैं। वे आईसीएसएसआर, यूजीसी, एलबीएसएनएए, एफएओ, एनआईएआर आदि राष्ट्रीय प्रशिक्षण एवं शोध संस्थानों से अकादमिक और प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं से स्वतंत्र लेखक के रूप में जुड़े हैं। राजेंद्र जुयाल ने अपने पैतृक गांव कांडा, पट्टी-सितोनस्यूं, पौड़ी (गढ़वाल) के राजकीय प्राथमिक विद्यालय, बुरांशी से 5वीं (1966) उत्तीर्ण करने के बाद क्रमशः मसूरी के नगरपालिका जूनियर हाईस्कूल, घनानंद इंटर कॉलेज, म्यूनिसिपल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज और डीएवी कॉलेज, देहरादून से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर (1976) एवं श्रीनगर परिसर से पीएचडी (1984) की उपाधि हासिल की। राजेंद्र जुयाल की यह आत्म-कथात्मक किताब उनकी उक्त शैक्षिक-यात्रा के विभिन्न पड़ावों के बहुआयामों को गहराई से सार्वजनिक करती है। उन्हीं के शब्दों में यह कहानी 'एक अबोध लेकिन उत्सुक किशोर से एक अशांत युवा में तब्दील होने की है।' अपने गांव से पहली बार बाहर जाते ही उच्चतर शिक्षा लेने की ललक, उसे गांव-समाज से दूर करती जाएगी, उस अबोध बालक, उसकी मां और उसके गांव-समाज को मालूम ही नहीं था।

मसूरी के जाड़ों की वो 15 रातें

'मैं मां को लौटते हुए देख रहा था कि जीजा जी ने कहा 'आओ चलते हैं'। 10-12 कदम चल कर, मैंने पलट कर पीछे देखा, मां उसी जगह खड़ी थी और हमारी तरफ ही देख रही थी। मेरे पलटते ही मां वापस मुड़ गई और चलने लगी। हम सड़क से उतर कर पगडंडी पर आ गए थे। तब मुझे इस बात का कहां पता था कि अपना गांव-घर मुझसे बहुत दूर होते जाएंगे। गांव में अपने ही घर में मेरी वापसी, धीरे-धीरे मेहमान की तरह होने लगेगी।' असल में ये आत्मकथा मात्र राजेंद्र जुयाल की नहीं है, उस दौर के सभी उत्तराखंडी ग्रामीण पहाड़ी युवाओं की है। ये युवा घनघोर पारिवारिक आर्थिक अभावों के तिलस्म को तोड़ते हुए उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर हुए थे। राजेंद्र उन्ही युवाओं के एक प्रतिनिधि के रूप में इस किताब में हैं। 'मेरे लिए जब पिताजी की रात की डयूटी होती, वह रात बहुत आनंदाई रहती। पिताजी मुझे बस्ते के साथ लेकर बैंक जाते, वहां आराम से किसी मेज पर बैठकर पढ़ता और वहीं पर सो जाता। मसूरी में जाड़ों की 15 रातें बैंक के अंदर बिजली की रोशनी में हीटर के पास की परम सुखद अनुभूति में पढ़ना और सोना मुझे आनंदित करता। लेकिन बाकी की 15 रातें दीवारों पर पानी की लकीरों से रिसती अजीब गंधभरी कोठरी की सीलन में बिताने ही होते थे। यह कोठरी रातभर गांव के मेहनतकश लेकिन बेघर लोगों के लिए भी खुली रहती थी। जीवनयापन के लिए दिन-भर कड़ी मेहनत करके देर रात वो लोग चुपचाप आते और कोठरी में सिमटकर बेसुध सो जाते और सुबह बिना कुछ कहे अपने काम पर चले जाते थे।

असल में ये आत्मकथा मात्र प्रो.राजेंद्र जुयाल की नहीं है, उस दौर के सभी उत्तराखंडी ग्रामीण पहाड़ी युवाओं की है, ये युवा घनघोर पारिवारिक आर्थिक अभावों के तिलस्म को तोड़ते हुए उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर हुए थे, राजेंद्र जुयाल उन्ही युवाओं के एक प्रतिनिधि के रूप में इस किताब में हैं।

छात्र जीवन का अनुभव

गांव से मसूरी आए सभी बालकों की तरह राजेंद्र के लिए अंग्रेजी का ज्ञान एक खलनायक की तरह सामने था। बिना अंग्रेजी के भविष्य में वह कैसे उत्साही, सामर्थवान और विचारवान बनेगा, पिता की ये चिंता थी। उसके ऊपर शिक्षकों का रूखापन जैसे बच्चों पर अहसान कर हों। इन सबसे जूझते राजेंद्र किसी भी तरह अपनी जीवनीय राह आसान बनाते चले गए। 'उन्होंने मेरी तरफ देखे बिना 'सांइस नहीं मिलेगी, अंग्रेजी नहीं मिलेगी', मुझे भी कहा। मैंने 'डरते-डरते कहा, गुरूजी मुझे कॉमर्स में जाना है।' गुरूजी के लिए यह अप्रत्याशित था, क्योंकि सभी सांइस मांग रहे थे। उन्होंने नजर उठा कर मुझे देखा 'हुम्म, ठीक है, पर अंग्रेजी नहीं मिलेगी'। मैंने दया याचना में कहा 'गुरूजी अंग्रेजी दे दीजिए।' मेरी मार्कशीट पर नजर डालते हुए उन्होंने कहा 'ठीक है, ले लो, पर नौवीं में ही फेल हो जाओगे।' पारिवारिक गरीबी और सामाजिक उपेक्षा का एक सकारात्मक पक्ष यह है कि जीवन में कदम-दर-कदम मिली सामाजिक निष्ठुरता और संवेदनहीनता को व्यक्ति सहजता से ग्रहण करता है। बालक राजेंद्र ने भी स्कूली शिक्षा के दौरान ज्यादातर शिक्षकों से मिले अपमान और अवहेलना को इसी सहजता से स्वीकार किया था। 'गुरूजी ने कक्षा में आते ही श्यामपट्ट पर लिखा 'मौन' और कुर्सी पर बैठ गए। मैंने कौतुहल से अपनी बगल में बैठे सहपाठी से धीरे से पूछा 'इसका क्या मतलब है?' इससे पहले की वह कुछ उत्तर देता, गुरूजी ने 'हुम्म' उच्चारण किया और मुझे अंगुली के इशारे से अपने पास बुलाया। मैं जैसे ही उनके पास पहुंचा, मेरा कालर पकड़कर एक तमांचा मेरे गाल पर जड़ दिया। मैं हक्का-बक्का उनकी तरफ बस देखता ही रहा।' राजेंद्र स्वीकार करते हैं कि छात्र के सवाल न पूछने की प्रवृत्ति की जड़ में ज्यादातर शिक्षकों का बाल सुलभ व्यवहार नहीं होना था। वे अध्यापन और आचरण से रूखे होते थे। एक बनी बनाई लीक से आगे और इधर-उधर जाना उनके अहम और आदत के खिलाफ था। सभी बच्चे गरीब और निम्न आय वर्ग परिवारों से थे, इसलिए उन पर अभिभावकों का भी दबाव नहीं होता था। वे शिक्षक ये भलीभांति जानते थे। कमोवेश आज भी स्कूलों में यह माहौल बदला नहीं है।

जीवनीय जिम्मेदारियों का अहसास

विकट आर्थिक विपन्नता में बीत रहे बच्चे में उसके बचपन के भोलेपन से ज्यादा हर समय जीवनीय जिम्मेदारियों का अहसास रहता है। बालक राजेंद्र का यह जज्बा अकल्पनीय है। 'मैं दीदी के घर पहुंचा तो पता चला कि देर रात मेरी भानजी का जन्म हुआ है। मैंने दीदी से पूछा कि उसे किसी चीज की जरूरत तो नहीं? दीदी ने कहा 'नहीं, मेरी जिठानी खाना दे रही है, पर हां अगर मेरे पास स्टोव होता तो मैं अपने हिसाब से खाना-पीना कर लेती।' मैं उल्टे पैर, पैदल 10 किमी दूर बिना रुके अकेले ही अपने गांव लौटा, कि आज ही दीदी को स्टोव देना है। मां से स्टोव, मिट्टी का तेल, घी, गुड़ लेकर देर रात वापस दीदी के गांव उसके पास पहुंचा, तो दीदी भौंचक होकर मुझे देखती रही। फिर अचानक मुझसे लिपट गई। वह कुछ न कह कर भी बहुत कुछ कह रही थी। दीदी की जिठानी ने जो खाना उसे दिया था, मैं उसे खाते ही नवजात भानजी की बगल में सो गया। सुबह दीदी ने मुझे जगाकर गांव भेज दिया।' बचपन में मिले अभावों की एक अच्छी बात यह है वे बच्चे को जीवन की असलियत से मुलाकात कराने में संकोच या देरी नहीं करते। व्यक्ति जीवन-भर 'भ्रम' के बजाय अपने 'भरोसे' के बल पर ही जीवन की छोटी-छोटी सफलताएं हासिल करता जाता है। जीवन की यही निरंतरता उसे पद-प्रतिष्ठा से ज्यादा जीवनीय जीवंतता और आत्मसंतुष्टि का भाव प्रदान करती है। लेखक को अपने प्रधानाचार्य से मिले संदेश 'ठीक से पढ़ाई करने के अलावा तुम्हारे पास कोई रास्ता नहीं है। पढ़ोगे नहीं तो करोगे क्या?' यही उनके जीवन का ध्येय वाक्य बन गया। जीवन में तमाम तनावों के क्षणों में इस वाक्य ने उन्हें फिर से एक नई शुरुआत करने का हौसला दिया।

- **राजेंद्र प्रसाद जुयाल की आत्मकथा 'अभिलाषा और सामर्थय' पिता-पुत्र की ऐसी ही जोड़ी की मुलाकात पाठकों से कराती है, आज मैं अक्सर सोचता हूं, बिना औपचारिक शिक्षा के पिताजी की इतनी व्यापक और धैर्य पूर्ण जीवन दृष्टि जीवन के संघर्षों से ही बनी थी, हम जानते थे कि वे हमारा जीवन आसान करना चाहते हैं, सबको पढ़ाना चाहते हैं, पर साधनहीनता और सामाजिक रुढ़ियां उनकी और हमारी बेड़ियां थी।**
- **राजेंद्र जुयाल की यह आत्म-कथात्मक किताब उनकी उक्त शैक्षिक-यात्रा के विभिन्न पड़ावों के बहुआयामों को गहराई से सार्वजनिक करती है, उन्हीं के शब्दों में यह कहानी 'एक अबोध लेकिन उत्सुक किशोर से एक अशांत युवा में तब्दील होने की है' अपने गांव से पहली बार बाहर जाते ही उच्चतर शिक्षा लेने की ललक, उसे गांव-समाज से दूर करती है।**

संगत से रंगत आई

परिवारिक अभावों के रहते, पढ़ाई में औसत और स्वास्थ्य से कृषकाय राजेंद्र की शिक्षा की राह में और भी कई अवरोध मुहं बाएं रहते थे। हतोत्साहित करने वाले लोगों की कमी नहीं थी। परंतु जीवन में मिले कुछ विशिष्ट शिक्षकों और अन्य व्यक्तित्वों ने उनकी मेहनत और लगन को सही दिशा की ओर गतिशील किया। वचन सिंह, मुरलीधर, अमर सिंह, मोहम्मद यामीन खान, सुधाकर मिश्रा, जयगोपाल शर्मा, उर्वीदत्त जुयाल, एसपी थपलियाल, प्रो. एबीएल जौहरी, प्रो. एनएस बिष्ट, अनिल स्वामी, गोपाल कृष्ण शर्मा, अनिल मिश्रा, विजय रावत जैसे विद्वत जनों ने उनके हौंसले को कमजोर नहीं होने दिया। राजेंद्र जुयाल समाज विज्ञानी हैं। अतः वे अपने आत्म-संघर्षों के केंद्र में विगत शताब्दी में उत्तराखंडी जन-जीवन के बहुआयामों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन करते हुए अपनी आत्मकथा में मुखातिब है। उन्होंने उस दौर के पहाड़ी जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक हालातों, मिजाजों, द्वन्द्वों, दिक्कतों, वर्ग एवं जातीय भेदभावों, महिला शिक्षा की अवहेलनाओं, भविष्य की दिशाओं को तथ्यों, सर्वेक्षण, अंवेषण और शोधार्थी की दृष्टि से अपनी आत्मकथा में जीवंत किया है। यह किताब विगत शताब्दी के उत्तरार्धकाल में गढ़वाल के सामाजिक, शैक्षिक और राजनैतिक मूल्यों, हलचल और मिजाज को उद्घाटित करती है। विश्वविद्यालय आंदोलन, वन आंदोलन, जेपी आंदोलन, आपातकाल, लेखक के शोधकार्य में तीर्थाटन एवं पर्यटन के सुझावों, बद्रीनाथ, केदारनाथ, श्रीनगर, मसूरी और देहरादून महायोजना का अवलोकन इसमें किया जा सकता है। निःसंदेह राजेंद्र जुयाल ने बहुत गहराई से अपनी जीवनीय कथा-व्यथा को लिखा है। वे भावों से इतने भरे लगे कि जो लिखना चाहते थे, वो लिख नहीं पाए, और जितना लिखा स्वभावगत संकोच के कारण उससे ज्यादा उसमें छिपा गए। अपनी जड़ों से छिटक जाने का यह दर्द इतना गहरा है कि मौन ही उसे बोल सकता है। शब्दों की अभिव्यक्ति की ताकत यहां 'चुप्प' होकर बाहर आती है। प्रवास में सब-कुछ तो पा लिया अब पहाड़ में ऐसा क्या छूटा कि उसके बिना अपना जीवनीय अस्तित्व अधूरा लगता है। इस अधूरेपन के भय से जीवन के मूलभूत प्रश्नों से उनका मन भागता रहता है। मानव मन के नाजुक कोने की मनोवैज्ञानिक पड़ताल से सरोबार स्मृतियों की यह एक दिलचस्प शब्द-यात्रा किताब है। बुजुर्गियत से लिपटी उम्र के इस पड़ाव के पीछे छोड़ आए वो लोग, वो दोस्त, वो दिन-रात, वो चेहरे, वो बातें, वो जगहें, वो इरादे, वो वायदे सब कुछ सुहाना तो नहीं था, पर जैसा भी रहा हो, राजेंद्र जुयाल ने उन्हें दिल खोल कर याद किया। इस बे-पनाह प्यार और ख्वाहिश के साथ कि 'अगले जनम में मैं पेड़ बनूंगा और अपने गांव की ढलान पर उगूंगा।'

सावन का फिल्मी याराना

1970 में रिलीज हुई फिल्म 'सावन भादो' से रेखा ने और 1979 में आई 'सोलहवां सावन' से श्रीदेवी ने बॉलीवुड में कदम रखा था, आगे चलकर इन दोनों अभिनेत्रियों ने बॉलीवुड में अपनी खास पहचान बनाई, सावन नाम से ही एक और फिल्म 2006 में भी आई थी, हालांकि बहुप्रचारित और सलमान खान जैसे स्टार होने के बावजूद सावन कुमार की ये फिल्म बुरी तरह फ्लॉप रही।

अरुण सिंह
मुंबई ब्यूरो

बॉलीवुड के फिल्मकारों ने सावन और सावन की बरसात का खूब इस्तेमाल किया है। सावन को लेकर तो फिल्म इंडस्ट्री में बहुत से बेहतरीन गीत भी लिखे गए इनमें कुछ गीत तो सदाबहार हैं। फिल्मों में रोमांस के सीन में सावन के गीत हिट और सुपरहिट हुए हैं ऐसे गीतों में 'क्या कहता है ये सावन...'सावन का महीना पवन करे सोर...' 'आया सावन झूमके...' 'सावन का महीना पवन करे सोर...' 'रिमझिम गिरे सावन...' 'सावन के झूलों ने मुझको बुलाया...' बरखा रानी जरा जोर से बरसो...जैसे सदाबहार फिल्मी गीत सावन के महीने में आज भी गुनगुनाए जाते हैं। सावन, बारिश और बॉलीवुड का याराना कितना गहरा रहा है, इसे इस तरह भी समझ सकते हैं कि कई फिल्मों के नाम ही बरसात और बरसात के प्रमुख महीने सावन से जोड़कर रखे गए। शुरूआत 1945 में आई मोतीलाल और शांता आप्टे की फिल्म 'सावन' से हुई, इस फिल्म ने बारिश, बरसात, बरखा और सावन नाम वाली फिल्मों के दरवाजे खोल दिए। इस कड़ी में कई फिल्में आई, जिनमें कई अच्छी खासी हिट भी रहीं। 1949 में आई राजकपूर की फिल्म 'बरसात' ने तो सफलता के नए कीर्तिमान ही रच डाले थे। बारिश से जुड़ी फिल्मों की चर्चा आज भी इसके बगैर अधूरी है। बाद में बरसात नाम की दो फिल्में और बनी। इन दोनों के नायक बॉबी देओल थे। बॉबी देओल ने बरसात से ही बॉलीवुड में एंट्री ली थी। बरसात के अलावा 1960 में भारत भूषण और मधुबाला की 'बरसात की रात' आई तो 1981 में अमिताभ बच्चन और राखी की तब की हिट जोड़ी से सजी 'बरसात की एक रात' रिलीज हुई। इनके अलाव बारिश के रोमांटिक मूड को दर्शाती 'बरखा बहार' के नाम से भी एक फिल्म बनी थी। यही नहीं बरसात में होने वाली शादी की मस्ती और परेशानियों को चित्रित करती अभी कुछ साल पहले 'मानसून वेडिंग' नाम से भी एक फिल्म आई थी। इसके साथ ही बॉलीवुड में 1945 में रिलीज 'सावन' के अलावा, 'सावन आया रे', 'आया सावन झूम के', 'सावन को आने दो', 'प्यासा सावन', 'सावन भादो', 'सावन की घटा', 'सोलहंवा सावन', 'सावन के गीत', 'प्यार का पहला सावन', 'सावन का महीना' जैसी कई फिल्में भी आई। इनमें से कुछ सुपरहिट हुई तो कुछ बॉक्स ऑफिस पर पानी भी नहीं मांग सकी। 1970 में रिलीज हुई फिल्म 'सावन भादो' से रेखा ने और 1979 में आई 'सोलहवां सावन' से श्रीदेवी ने बॉलीवुड में कदम रखा था। आगे चलकर इन दोनों अभिनेत्रियों ने बॉलीवुड में अपनी खास पहचान और जगह बनाई। सावन नाम से ही एक और फिल्म 2006 में भी आई थी। हालांकि बहुप्रचारित और सलमान खान जैसे स्टार होने के बावजूद सावन कुमार की ये फिल्म बुरी तरह फ्लॉप रही थी। विविधताओं से भरे बरसात के रंग

'सावन को आने दो' फिल्म में अरुण गोविल, जरीना वहाब और रीता भादुड़ी ने अभिनय किया है फिल्म का निर्देशन ताराचंद बड़जात्या ने किया है, यह फिल्म रामानंद सागर की 'रामायण' से काफी पहले आई थी, उस समय अरुण गोविल भगवान राम के किरदार से घर-घर में मशहूर नहीं हुए थे। हालांकि 'सावन को आने दो' उनकी कामयाब फिल्मों में से एक है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि बॉलीवुड के फिल्मकारों ने पर्दे पर बारिश का इस्तेमाल सबसे ज्यादा रोमांस के सृजन के लिए किया है। लेकिन सच ये भी है कि हिंदी सिनेमा में बारिश के और भी प्रयोग देखने को मिलते हैं। बरसात के रंग जिस तरह से विविधताओं से भरे हैं, उसी तरह फिल्मों में भी उसके विविध रूप देखने को मिलते हैं। बारिश के रोमांचक और रहस्यमयी स्वरूप के कारण कई फिल्मों में एक्शन दृश्य भी बारिश में फिल्माए गए हैं। इसके अलावा कई फिल्मों में बारिश कहानी को आगे बढ़ाने में भी इस्तेमाल हुई है। 2001 में आई आमिर खान की बहुचर्चित फिल्म 'लगान' तो पूरी तरह बारिश के इर्द-गिर्द घूमती रही है। देवानंद वहीदा रहमान की सुपरहिट फिल्म 'गाइड' का क्लाइमेक्स भी बरसात पर ही रचा गया था। बॉलीवुड की चुनिंदा सर्वश्रेष्ठ फिल्मों में शामिल वी.शांताराम की 'दो आंखें बारह हाथ' में भी बारिश कहानी में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बॉलीवुड में मील का पत्थर समझी जानेवाली महबूब खान की 'मदर इंडिया' की कहानी भी कहर बरपाती बारिश के साए में ही बुनी गई है। और तो और राजकपूर के ड्रीम प्रोजेक्ट, फिल्म 'हिना' जिसे उनकी मृत्यु के पश्चात रणधीर कपूर ने पर्दे पर साकार किया था, में बारिश और तूफान का कहर पूरी फिल्म की कहानी को एक नया मोड़ दे देता है। इसके अलावा भी बारिश कई और फिल्मों में कहानी को आगे बढ़ाती दिखाई देती है। बॉलीवुड में कई फिल्मों की तो पूरी पटकथा ही बारिश और बरखा पर आधारित है। मुंबई में 26 जुलाई 2007 को हुई प्रलंयकारी बरसात को केंद्र में रखकर 'तुम मिले' और 26 जुलाई 'एट बरिस्ता' नाम की दो फिल्में भी बनी हैं।

फिल्म सावन को आने दो कैसे बनी

बॉलीवुड फिल्म 'सावन को आने दो' की बात करें तो फिल्म में अरुण गोविल, जरीना वहाब और रीता भादुड़ी ने अभिनय किया था। फिल्म का निर्देशन ताराचंद बड़जात्या ने किया था। यह फिल्म रामानंद सागर की 'रामायण' से काफी पहले आई थी। उस समय अरुण गोविल भगवान राम के किरदार से घर-घर में मशहूर नहीं हुए थे। हालांकि 'सावन को आने दो' उनकी कामयाब फिल्मों में शामिल रही और इसके गीतों ने खूब लोकप्रियता हासिल की। इस फिल्म से जुड़ा एक दिलचस्प किस्सा इसके संगीतकार राजकमल के बेटे सूर्या राजकमल ने मीडिया के साथ साझा किया था। सूर्या राजकमल खुद संगीतकार हैं और कई धारावाहिकों में संगीत दे चुके हैं। मीडिया को दिए एक इंटरव्यू में सूर्या राजकमल ने कहा था कि उनके पिता का गाने सुनाने का एक खास तरीका था। वह किसी फिल्म की सिटिंग में जाने से पहले गानों का एक फोल्डर और उनका क्रम तैयार करते थे। सूर्या राजकमल का कहना था कि उनके पिता का एक सिस्टम था कि वो जब भी कोई भी सॉन्ग या कोई सिटिंग में जाते थे, तो वो अपना फोल्डर साथ ले जाते थे। उसमें यह तय होता था कि पहले कौन सा गाना सुनाना है, फिर कौन सा गाना सुनाना है। 'सावन को आने दो' की सिटिंग में राजकमल ने सबसे पहले 'चांद जैसे मुखड़े पे...' गीत सुनाया। उनके साथ ताराचंद बड़जात्या के दो-तीन असिस्टेंट भी मौजूद थे, जो गानों का क्रम नोट कर रहे थे। दिलचस्प बात यह है कि उस समय फिल्म का नाम भी 'चांद जैसे मुखड़े पे' ही रखा गया था। इसके बाद ताराचंद बड़जात्या ने मशहूर लेखक राही मासूम रजा को बुलाया और राजकमल से कहा कि जिस क्रम में उन्होंने उन्हें गाने सुनाए हैं, उसी क्रम में राही मासूम रजा को भी सारे गाने सुनाए जाएं। राजकमल ने वैसा ही किया। सूर्या राजकमल का कहना था कि इसके बाद ताराचंद बड़जात्या ने राही मासूम रजा से

- **बॉलीवुड की चुनिंदा सर्वश्रेष्ठ फिल्मों में शामिल वी.शांताराम की 'दो आंखें बारह हाथ' में बारिश कहानी में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, बॉलीवुड में मील का पत्थर समझी जानेवाली महबूब खान की 'मदर इंडिया' की कहानी भी कहर बरपाती बारिश के साए में ही बुनी गई है, राजकपूर के ड्रीम प्रोजेक्ट, फिल्म 'हिना' जिसे उनकी मृत्यु के पश्चात रणधीर कपूर ने पर्दे पर साकार किया था वो भी बारिश पर ही आधारित है।**
- **ताराचंद बड़जात्या की फिल्म 'सावन को आने दो' की कहानी लिखने की प्रक्रिया में गानों का सीक्वेंस बेहद अहम था, पहले गीतकार राजकमल ने गानों को एक क्रम तय किया और फिर उसी क्रम को बरकरार रखते हुए कहानी तैयार की गई, इस तरह फिल्म के गीत सिर्फ कहानी का हिस्सा नहीं रहे, बल्कि उनकी क्रमबद्धता ने कहानी के ढांचे को भी तय किया।**

कहा कि कहानी भी गानों के उसी क्रम के हिसाब से लिखी जाएगी। कोई भी गाना अपनी जगह से आगे-पीछे नहीं होगा। सूर्या राजकमल ने इंटरव्यू में कहा था कि ताराचंद जी ने कहा कि इसमें से जो पहला गाना है, वो फोर्थ नंबर पर नहीं आएगा। जो फोर्थ नंबर पर है, वो सेकंड नंबर पर नहीं आएगा। यानी 'सावन को आने दो' फिल्म की कहानी लिखने की प्रक्रिया में गानों का सीक्वेंस बेहद अहम था। पहले राजकमल ने गानों को एक तय क्रम में सुनाया और फिर उसी क्रम को बरकरार रखते हुए कहानी तैयार की गई। इस तरह फिल्म के गीत सिर्फ कहानी का हिस्सा नहीं रहे, बल्कि उनकी क्रमबद्धता ने कहानी के ढांचे को भी तय किया। बाद में फिल्म का नाम 'चांद जैसे मुखड़े पे' से बदलकर 'सावन को आने दो' कर दिया गया। लेकिन जिस गीत चांद जैसे मुखड़े पे...से फिल्म के सफर की शुरुआत हुई थी, वह आज भी इस फिल्म के सबसे यादगार गीतों में शामिल है।

सस्पेंस और ड्रामा फिल्म है सावन की घटा

1966 में रिलीज हुई 'सावन की घटा' रोमांस, सस्पेंस और ड्रामा का एक शानदार मिश्रण है, जिसने बॉलीवुड के दर्शकों पर गहरी छाप छोड़ी। मशहूर डायरेक्टर शक्ति सामंत की इस फिल्म में मनोज कुमार, शर्मिला टैगोर और मुमताज जैसे बेहतरीन कलाकार हैं, जिन्होंने यादगार परफॉर्मेंस दी है। फिल्म की कहानी की शुरुआत एक जबरदस्त कार एक्सीडेंट से होती है, जो रहस्य और साजिशों के जाल के लिए माहौल बनाती है। गोपाल नाम का एक छोटा लड़का ही इस हादसे में बच पाता है और अनाथ हो जाता है। उसके पास कीमती सामान से भरा एक सूटकेस होता है। दो स्थानीय मजदूर, बंसीलाल और शमशेर, इस हादसे को देखते हैं। बंसीलाल बच्चे को अपने साथ ले जाकर प्यार से पालते-पोसते हैं, जबकि शमशेर जो अब खुद को राणा कहता है उस छिपे हुए खजाने को हथियाने की बुरी नीयत रखता है। सालों बीत जाते हैं और गोपाल एक नेक दिल नौजवान बन जाता है। उसकी दोस्ती राणा की बेटी सीमा से हो जाती है। उनकी बढ़ती दोस्ती राणा को गुस्सा दिला देती है, जिससे बंसीलाल को गोपाल को दूर भेजना पड़ता है। बड़ा होने पर गोपाल गांव लौटता है और अपने अतीत के बारे में जानने के लिए उत्सुक होता है। उसे जरा भी अंदाजा नहीं होता कि एक अजनबी उसका इंतजार कर रहा है, जिसके पास उसकी असली पहचान का राज छिपा है। 'सावन की घटा' सिर्फ सस्पेंस वाली कहानी नहीं है, बल्कि यह प्यार और त्याग की दिल को छू लेने वाली कहानी है। गोपाल और सीमा के बीच पनपता रोमांस, रोमांचक कहानी में कोमलता का एहसास जोड़ता है। मशहूर संगीतकार ओपी नय्यर का संगीत और एसएच बिहारी के बोल फिल्म के अनुभव को और भी शानदार बनाते हैं। मोहम्मद रफी का गाना 'जुल्फों को हटा ले...' और आशा भोसले का गाया गीत 'आज कोई प्यार से...' गाने आज भी लोगों के बीच लोकप्रिय हैं।●

मासिक राशिफल

पंडित उपेन्द्र कुमार उपाध्याय
9897450817, 9897791284
ज्योतिषाचार्य, आयुर्वेदरत्न, कथावाचस्पति, यज्ञानुष्ठान विशेषज्ञ
अध्यक्ष-श्री शिवशक्ति ज्योतिष पीठ, बदायूं
निवास प्रभातनगर, निकट इंद्राचौक, सिविल लाइंस, बदायूं (यूपी)

मेष-

इस माह आपका आत्मविश्वास और ऊर्जा का स्तर ऊंचा रहेगा, यदि आप मित्रों के साथ यात्रा पर जा रहे हैं तो पैसा सोच समझकर व्यय करें, धन हानि हो सकती है। व्यक्तिगत मामलों को सुलझाते समय उदारता दिखाएं, लेकिन अपनी भाषा पर नियंत्रण रखें। बहुत करीबी प्रियजन से मिलने का योग बन रहा है। मुश्किल मामलों के समाधान के लिए अपने संपर्क का उपयोग करें, प्रेमी के साथ समय बिताने का अवसर मिलेगा। जीवनसाथी के साथ कुछ बेहतरीन पल गुजार सकेंगे। उपायः इत्र, परफ्यूम, कपूर का इस्तेमाल व दान करें कार्य सिद्ध होंगे।

वृषभः-

इस माह आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, इस राषि के जो जातक लघु उद्यमी हैं उन्हें किसी करीबी की आर्थिक लाभ पहुंचाने वाली कोई अच्छी सलाह मिल सकती है। पारिवारिक सदस्य या जीवनसाथी तनाव की वजह बन सकते हैं। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी और तरक्की साफ नजर आएगी। कोरोनाकाल में खाली समय का पूरा आनंद उठाने के लिए लोगों से दूर रह कर पसंदीदा और महत्वपूर्ण काम निपटाने चाहिए। प्रेमी युगल सामान्य दिनों की अपेक्षा इस समय आपका अधिक ख्याल रखेगा। उपायः भैरो बाबा के मंदिर में दूध चढ़ाएं कार्य सिद्ध होंगे।

मिथुनः-

इस माह सेहत पर ध्यान देने की जरूरत है। आपका धन आपके काम तभी आएगा जब आप फिजूल खर्चों से बचेंगे। आपका कोई दुश्मन आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकता है। कुछ लोग आपके खिलाफ षडयंत्र रच रहे हैं। ऐसे लोगों से बचने की आवश्यकता है जो आपका अहित चाहते हैं। आपकी ऊर्जा का स्तर ऊंचा रहेगा। आपका प्रिय आपकी खुशी की वजह साबित होगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। तरक्की के रस्ते खुलेंगे। कर्म-कांड, हवन-पूजन आदि का आयोजन करेंगे। उपायः खट्टी-मीठी टॉफियां, छोटी कन्याओं में बांटे कार्य सिद्ध होंगे।

कर्कः-

इस माह शारीरिक श्रम आपके सौंदर्य को निखारेगा। घर के सदस्यों को घुमाने ले जा सकते हैं। यात्रा में धन खर्च होगा। जीवनसाथी के साथ खरीदारी करेंगे। दांपत्य जीवन में गलत फहमी दूर होंगी। प्यार जीवन की डोर को मजबूत बनाए रखेगा। किसी तीसरे व्यक्ति की बाते सुनकर अपने प्यार के बारे में कोई राय न बनाएं। लोग आपको अपने बढ़िया कार्य के लिए पहचानेंगे। यदि आप यात्रा कर रहें है तो सभी जरूरी दस्तावेज साथ रखे और दिक्कत से बचें। उपायः सफेद चंदन की जड़ सफेद कपड़े में लपेटकर अपने पास रखें सभी कार्यसिद्ध होंगे।

सिंहः-

इस माह आपको आलोचना का शिकार होना पड़ सकता है। धन आपके काम तभी आएगा जब फिजूलखर्चों से बचेंगे। जिस पर भी आप भरोसा करते हैं, मुमकिन है वह आपको धोखा दे दे। न्यायालय संबंधी कार्यों में सफलता से मुश्किले हल करने में कामयाबी मिलेगी। आपका प्रिय आपको सदैव प्यार करता है, उस पर किसी तरह का संदेह न करें। कार्य में धीमी प्रगति हल्का-सा मानसिक तनाव दे सकती है। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। उपायः तामसिक वस्तुओं मांस-मदिरा का सदैव के लिए त्याग कर दें सभी कार्य सिद्ध होंगे।

कन्याः-

इस माह धन संचय करने के लिए परिजनों की सलाह लेना आवश्यक है। परिजनों की सलाह से आर्थिक स्थिति में सुधार के योग बन रहे हैं। सभी विवादास्पद मुद्दों पर अनावश्यक बहस से बचें, इस माह जीवन में सच्चे प्रेम की कमी का अनुभव करेंगे। चिंता न करें समय के साथ बदलाव आते हैं और आपकी रोमांटिक जिंदगी में फिर बदलाव आएगा। आफिस से घर आते समय सावधानी से वाहन चलाने की जरूरत है, दुर्घटना की संभावना है। जीवनसाथी आप पर शक कर सकता है। उपायः सूर्यदेव को प्रातःकाल लालपुष्प अर्पित करें कार्य सिद्ध होंगे।

तुलाः-

इस माह सेहत का ध्यान रखने की जरूरत है। माह के मध्य में कर्ज चुकाने में परेशानी का सामना करना पड़ेगा। भावनात्मक रूप से खतरा उठाना आपके लिए हितकारी हो सकता है। परिजनों की गैरजरूरी मांगों को नजरअंदाज करने में भलाई होगी। प्रसिद्ध लोगों के मिलन से नई योजना का आइडिया मिलेगा। दूर की यात्रा का योग बन रहा है, लेकिन सफर के दौरान सावधान रहने की आवश्यकता है, धन की हानि हो सकती है। जीवन संगनी से अनबन हो सकती है। उपायः अपने प्रिय को सफेद शंख, शिप की वस्तुएं गिफ्ट करें सभी कार्य सिद्ध होंगे।

वृश्चिकः-

इस माह मजबूत और स्पष्टवादी बनें। कठोर फैसले लेने के साथ उनके परिणामों का सामना करने के लिए तैयार रहें। माह के मध्य में धन लाभ के योग हैं, इसलिए स्वभाव को शांत रखने की जरूरत है। आक्रमकता धन लाभ के योग से वंचित कर सकती है। रिश्तेदारों से कीमती तोहफा मिल सकता है। प्यार के नजरिए से देखें तो आप जीवन के रस का भरपूर आनंद लेंगे। कामकाज में अपनों का सहयोग और स्नेह प्राप्त होगा। जीवनसाथी के आंतरिक सौंदर्य बाहर भी पूरी तरह महसूस होगा। उपायः बिस्तर पर क्रीम कलर की चादर बिछाएं कार्य सिद्ध होंगे।

धनुः-

इस माह नफरत से दूर रहे क्योंकि यह आपके मन के साथ शरीर पर भी बुरा प्रभाव डाल सकती है। रात के समय धन लाभ होने की संभावना है, रुके हुए धन की प्राप्ति से मन प्रसन्न होगा। बच्चों की तरफ से कोई खुश खबर मिलने वाली है। शत्रु पक्ष आपके रिश्तें में दरार डालने की कोशिश करेंगे। पेशेवर तौर पर यह माह सकारात्मक रहेगा। अपनी खुशियों का इजहार करने के लिए उतावलापन न दिखाए। जीवनसाथी का रुखापन देखने को मिल सकता है। उपायः लक्ष्मीनारायण मंदिर में नियमित प्रसाद चढ़ाएं सभी कार्य सिद्ध होंगे।

मकरः-

इस माह संत महात्मा का आशीर्वाद मानसिक शांति प्रदान करेगा। माता-पिता फिजूलखर्ची से चिंतित हो सकते हैं। आप समूह में हों तो वाणी पर ध्यान रखें वरना कड़ी आलोचना का शिकार हो सकते हैं। यह माह कार्यक्षेत्र में आपकी प्रसिद्धि बढ़ा सकता है। आपके सहकर्मी आपके काम की तारीफ करेंगे। बॉस भी आपके काम से खुश होगा। कारोबारी भी आज कारोबार में मुनाफा कमा सकते हैं। खाली समय में कोई गेम खेलना ठीक रहेगा। जीवनसाथी से विवाद की प्रबल संभावना है। उपायः चंद्रमा की चांदनी में बैठ कर खीर खाएं कार्य सिद्ध होंगे।

कुंभः-

इस माह व्यापार को मजबूती देने के लिए कोई अहम कदम उठा सकते हैं, कोई करीबी कारोबार में आपकी आर्थिक मदद कर सकता है। दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ मौज मस्ती करेंगे। सामाजिक मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। कारोबार से जुड़ी गोपनियता किसी के साथ साझा न करें। गोपनियता भंग होने पर बड़ी किसी मुश्किल में पड़ सकते हैं। हालात से उबरने के लिए दृढ़ इच्छा-शक्ति बनाए रखें। माह के मध्य में इस राशि के जातकों को वैवाहिक जिंदगी की अहमियत का अहसास होगा। उपायः मसूर की लाल दाल किसी गरीब को दान करने से कार्य सिद्ध होंगे।

मीनः-

इस माह आपकी प्रगति की बाधाएं दूर होंगी। घर से बाहर निकलते समय सकारात्मक विचार आपकी प्रतिष्ठा बढ़ाएंगे। किसी कीमती वस्तु के चोरी होने से मूड खराब हो सकता है। पुराने संबंधियों के मिलन से पुराने रिश्तें में ताजगी आएगी। किसी प्राकृतिक सौंदर्य से खुद को सराबोर महसूस करेंगे। कार्यालय में सब कुछ आपके पक्ष में रहेगा। जीवन के अहम मुद्दों पर घरवालों के साथ बैठकर बात कर सकते हैं। यात्रा संभव है, जीवनसाथी का आपके ऊपर खास ध्यान रहेगा। उपायः शिव मंदिर में नियमित गंगाजल चढ़ाएं सभी कार्य सिद्ध होंगे।

Nupur Creations
Jute Hand Bags, Craft & Many More

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वोकल फॉर लोकल नीति से प्रेरित उत्तराखंड के हस्तकला के क्षेत्र में उभरता नाम

नुपूर

उत्तराखंड की हस्तकला को राष्ट्रीय पहचान दिलाना हमारा लक्ष्य
उत्तराखंड की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना हमारा प्रयास
जूट से बने फेंसी आइटम, होम डेकोरेशन की फेंसी सामग्री, गिफ्ट आइटम की बड़ी रेंज ऑन लाइन उपलब्ध

VOCAL FOR लोकल

SHAKTI PURAM GALI,
NAWABI ROAD, HALDWANI
(NAINITAL), Uttarakhand

CALL:
05946 220841, +91 9410334041
Paytm +91 9760590897

www.facebook.com/nupurnrityakalakendra
You Tube: Search: nupurnrityakalakendra
nupurnritya99@gmail.com
www.nupurcreations.co.in

Log in for purchase Items ONLINE: